



अधिकतम : 32°C
न्यूनतम : 25°C

खबरें छुपाता नहीं, छापता है

शाह टाइम्स

मुरादाबाद, शनिवार 28 जून 2025 मुरादाबाद संस्करण: वर्ष 22 अंक 318 पृष्ठ 12 मूल्य रुपये 5.

www.shahatimesnews.com



विस्तृत खबरों के लिए QR कोड स्कैन करें।
मुफ्त पढ़ें E-paper

shahtimes2015@gmail.com

आषाढ़ शुक्ल पक्ष 2 विक्रमी सम्वत् 2082

2 गुरुर्ष 1447 हिजरी

नई दिल्ली, मुजफ्फरनगर, देहरादून, हल्द्वानी, मुरादाबाद, बरेली, मेरठ व लखनऊ से प्रकाशित



छोटे उद्योग अर्थव्यवस्था के मजबूत स्तंभ: राष्ट्रपति मुर्मु

पेज 2



आईसीसी ने क्रिकेट के छह नियमों में किए बदलाव

खेल टाइम्स



वो आपातकाल था तो ये क्या है...

संपादकीय



ईरान को 2.5 लाख करोड़ देने की तैयारी में अमेरिका

पेज 12

ब्रिटेन का फाइटर जेट एफ-35बी भारत में ही ठीक होगा
तिरुअनंतपुरम। ब्रिटिश रॉयल नेवी का फाइटर जेट एफ-35 अब भारत में ठीक होगा। इसके लिए ब्रिटेन से 40 इंजीनियरों की टीम और 2 टो व्हीकल आएंगी। टीम फाइटर जेट में आ रही टेक्निकल प्रॉब्लम को ठीक करेगी, जिसके बाद यह ब्रिटेन के लिए उड़ान भरेगा। फाइटर जेट 14 जून की रात करल के तिरुवनंतपुरम इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर इमरजेंसी लैंडिंग हुई थी। लैंडिंग के बाद जेट में तकनीकी खराबी आ गई, जिसके कारण यह वापस नहीं जा सका। जेट 13 दिन से एयरपोर्ट पर ही खड़ा है। 918 करोड़ रुपये का यह विमान ब्रिटेन की रॉयल नेवी के एचएमएस प्रिंस ऑफ वेल्स कैरियर स्टाइक ग्रुप का हिस्सा है। इसे दुनिया भर में सबसे एडवांस्ड फाइटर जेट में से एक माना जाता है।

विश्व प्रसिद्ध जगन्नाथ यात्रा का शुभारंभ पुरी। ओडिशा में पुरी स्थित विश्व प्रसिद्ध श्री जगन्नाथ मंदिर के पीठासीन देवताओं, भगवान जगन्नाथ, भगवान बलभद्र और देवी सुभद्रा का नौ दिवसीय प्रवास शुक्रवार सुबह 'हरिबोल' और 'जय जगन्नाथ' के जयघोष और मंदिर नगरी में मंजीरों की लयबद्ध झंकार के बीच शुरू हुआ। दुनियाभर में विख्यात इस वार्षिक रथ यात्रा देखने के लिए लाखों श्रद्धालु इस तीर्थ नगरी में आए हुए हैं। वे 12वीं शताब्दी के मंदिर के 'लार्ग्स गेट' से गुड्डिचा मंदिर तक फैले तीन किलोमीटर लंबे 'बड़ा डांडा' (विशाल मार्ग) ग्रैंड रोड पर एकत्रित हुए।

जगन्नाथ रथयात्रा में डीजे की आवाज से हाथी हुआ बेकाबू
अहमदाबाद। अहमदाबाद में भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा में शुक्रवार सुबह 10 बजे एक हाथी बेकाबू हो गया और 100 मीटर तक भागा। इसके बाद रथ यात्रा में भगदड़ सी मच गई। लोग इधर-उधर भागते दिखे। बेकाबू हुआ हाथी 17 हाथियों के ग्रुप में सबसे आगे चल रहा था। जानकारी के मुताबिक, हाथी डीजे और सीटी की आवाज से बेकाबू हुआ था। हाथी को वन विभाग के अमले ने दो मादा हाथियों की मदद से काबू में किया। इसके बाद उसे और दोनों मादा हाथियों को जुलूस से हटा दिया गया। बाकी यात्रा में 14 हाथी शामिल हुए।
महादेश्वर हिल्स में बाधिन और चार शावकों की मौत
चामराजनगर। कर्नाटक के माले महादेश्वर हिल्स वन्यजीव अभयारण्य में एक मादा बाघ और उसके चार शावकों की मौत से वन्यजीव प्रेमी काफी आहत हुए हैं। वन मंत्री ईश्वर खान्ने ने इन मौतों की पुष्टि करते हुए इस घटना पर शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि इनकी मौत के कारणों का पता लगाने के लिए वन्यजीव प्रोटोकॉल के अनुसार पोस्टमार्टम कराया जाएगा।

डोनाल्ड ट्रम्प के दोहरे मुखोटे से कई देश दुखी

अमेरिकी राष्ट्रपति का दावा: चीन से बड़ा समझौता भारत से होगा

वाशिंगटन, वार्ता

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा कि व्हाइट हाउस ने एक दिन पहले चीन के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं और आने वाले दिनों में भारत के साथ इससे भी बड़ा एक और समझौता हो सकता है।

अमेरिकी वाणिज्य मंत्री हावर्ड लुटनिक ने ब्लूमबर्ग टीवी को बताया कि इस सप्ताह की शुरुआत में इस समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे। हालांकि उन्होंने और श्री ट्रम्प ने इस समझौते के बारे में कोई विवरण नहीं दिया। श्री ट्रम्प ने गुरुवार देर रात कहा कि हमने अभी-अभी चीन के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। यह कदम मई के शुरू में जिनेवा में अमेरिका-चीन वार्ता के बाद



उठाया गया है, जिसके कारण दोनों पक्षों ने बड़े पैमाने पर टैरिफ बढ़ावों को स्थगित कर दिया था। इसकी वजह से दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाओं को बहुत नुकसान पहुंच रहा था और

कृषि सेक्टर में अमेरिका को ज्यादा मार्केट एक्सेस नहीं देना चाहता भारत

नई दिल्ली। भारत नहीं चाहता कि अमेरिकी मांगों जैसे- कृषि और ऑटोमोबाइल सेक्टर को भारतीय मार्केट में ज्यादा जगह मिले, क्योंकि इससे घरेलू कारोबारियों को नुकसान हो सकता है। भारत चाहता है कि डील दोनों देशों के लिए ज्यादा से ज्यादा बेंलेंड हो। सूत्रों का कहना है कि कृषि उत्पादों, खासकर मक्का और सोयाबीन पर टैरिफ में छूट की अमेरिकी मांग डील को अटकने वाला मुद्दा बन गया है। खबर है कि भारत अमेरिकी कृषि में प्रचलित जेनेटिकली मॉडिफाइड फसलों के लिए अपने बाजार को खोलने के मामले में सावधानी बरत रहा है।

दोनों देशों के बीच व्यापार प्रभावित हो रहा था। श्री लुटनिक ने कहा कि राष्ट्रपति इन समझौतों को खुद ही पूरा करना पसंद करते हैं। वे समझौता करने वाले हैं। हम एक के बाद एक

समझौता करने जा रहे हैं। श्री ट्रम्प ने आगे कहा कि अमेरिका जल्द ही भारत के साथ बहुत बड़ा समझौता कर सकता है, हालांकि उन्होंने इसका खुलासा नहीं किया है।

पंजाब में बड़ी आतंकी साजिश नाकाम

मोहाली, वार्ता

पंजाब में मोहाली स्टेट स्पेशल ऑपरेशन सेल (एसएसओसी) ने पाकिस्तानी एजेंसी आईएसआई समर्थित बब्बर खालसा इंटरनेशनल (बीकेआई) के आतंकी मॉडयूल का सफलतापूर्वक भंडाफोड़ करते हुए तीन लोगों को गिरफ्तार किया है।

पुलिस महानिदेशक गौरव यादव ने शुक्रवार को बताया कि गिरफ्तार आरोपियों के नाम सहजपाल सिंह और विक्रमजीत सिंह हैं। दोनों अमृतसर ग्रामीण के रामदास के निवासी हैं। इसके अलावा एक किशोर को भी पकड़ा गया है। आरोपियों के पास से दो हैंड ग्रेनेड, एक र्लॉक पिस्तौल और गोला-बारूद बरामद किया गया है। उन्होंने कहा कि पुलिस ने इस गिरफ्तारी के साथ एक बड़ी आतंकी

एसएसओसी ने आईएसआई समर्थित बब्बर खालसा के तीन सदस्य किए गिरफ्तार

साजिश को नाकाम कर दिया है जिससे कई निर्दोष लोगों की जान बच गई है। डीजीपी ने कहा कि इस मॉडयूल को ब्रिटेन में रह रहे निशान सिंह और पाकिस्तान में रह रहे आतंकवादी हरविंदर रिंदा संचालित कर रहे थे। यह समूह अमृतसर क्षेत्र में पुलिस प्रतिष्ठानों पर हमले और लश्कित हत्याओं को अंजाम देने की साजिश रच रहा था। इस संबंध में थाना एसएसओसी मोहाली में भारतीय न्याय संहिता और विस्फोटक अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत एक प्राथमिकी दर्ज की गई है। जांच जारी है तथा कुछ और लोगों की गिरफ्तारी हो सकती है।

गैंगस्टर जग्गू भगवानपुरिया की मां और उनके बाँडीगाई की गोली मारकर हत्या

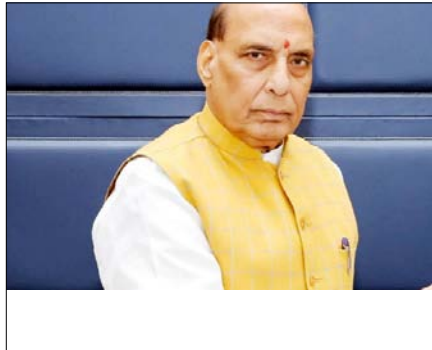
बटाला। पंजाब के बटाला में गुरुवार देर रात को कुख्यात गैंगस्टर जग्गू भगवानपुरिया की मां हरजीत कौर और उसके बाँडीगाई करणवीर की दो अज्ञात बाइक सवार हमलावरों ने गोली मारकर हत्या कर दी।

वारदात देर रात बटाला के कादियां टोल बैरियर के पास हुई। जानकारी के अनुसार, करणवीर सिंह और हरजीत कौर स्कॉर्पियो में जा रहे थे। तभी बाइक पर आए हमलावरों ने उनकी गाड़ी पर ताबड़तोड़ गोलियां चला दीं। हत्या की पूरी वारदात सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। गोली लगने से करणवीर सिंह की घटना स्थल मौत हो गई, जबकि हरजीत कौर गंभीर रूप से घायल हो गई। उन्हें बटाला से अमृतसर रेफर किया गया, जहाँ उन्होंने भी दम तोड़ दिया। मरने वाला बाँडीगाई करणवीर सिंह जग्गू के मामा का बेटा बताया जा रहा है।

चीन सीमा पर स्थायी शांति के लिए जटिल मुद्दों का समाधान जरूरी: राजनाथ सिंह

नई दिल्ली, वार्ता

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने चीन सीमा पर स्थायी शांति और सौहार्दपूर्ण माहौल बनाए रखने तथा तनाव कम करने के लिए सुव्यवस्थित तंत्र के माध्यम से लंबित जटिल मुद्दों को सुलझाने की जरूरत पर बल दिया है। श्री सिंह ने चीन के किंगदाओं में गुरुवार को शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के रक्षा मंत्रियों की बैठक से इतर रक्षा मंत्री एडमिरल डॉंग जून के साथ द्विपक्षीय बैठक में स्थापित व्यवस्था को पुनः सक्रिय कर सीमा विवादों के स्थायी समाधान पर बल दिया। रक्षा मंत्रालय ने शुक्रवार को एक वक्तव्य जारी कर कहा कि दोनों नेताओं ने भारत-चीन सीमा पर शांति और सौहार्द बनाए रखने की आवश्यकता पर गहन विचार-विमर्श किया।



राजनाथ ने की रूसी समकक्ष के साथ एस-400 प्रणाली और सुखोई-30 के उन्नयन पर चर्चा

नई दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने ऑपरेशन सिंदूर के बाद रूस के अपने समकक्ष के साथ पहली महत्वपूर्ण बैठक में वायु सेना के बेड़े के प्रमुख लड़ाकू विमान सुखोई-30 के उन्नयन, वायु रक्षा प्रणाली एस-400 और मिसाइलों तथा अन्य महत्वपूर्ण सज्जे-सामान को खरीद तथा आपूर्ति के बारे में गहन विचार विमर्श किया।

केदारनाथ हाईवे पर लैंडस्लाइड, यात्री फंसे

नई दिल्ली। देश में दिल्ली को छोड़कर सभी राज्यों में बारिश हो रही है। अब तक सामान्य से 12.3 फीसदी ज्यादा बारिश हो चुकी है। 26 जून तक देश में सामान्य रूप से 134.3 मिमी होनी चाहिए थी, लेकिन 146.6 एमएम हो चुकी है। उत्तराखंड में भारी बारिश के चलते केदारनाथ हाईवे एक बार फिर मुनकटिया इलाके में लैंडस्लाइड के कारण बंद हो गया है। रास्ते पर लगातार पत्थर और मलबा गिर रहा है। एसडीआरएफ और एनडी आरएफ की टीमें मौके पर मौजूद हैं और यात्रियों को जंगल के वैकल्पिक रास्तों से सुरक्षित निकाल रही हैं। इस बीच देश में बारिश के चलते मौतों का आकड़ा भी बढ़ने लगा है। हिमाचल के कुल्लू जिले में बादल फटने से अब तक 5 लोगों की मौत हो गई है। जबकि 7 से ज्यादा लापता हैं।

अहमदाबाद प्लेन क्रैश

अहमदाबाद, वार्ता

अहमदाबाद में 12 जून को हुए एयर इंडिया विमान क्रैश की जांच टीम में संयुक्त राष्ट्र (यूएन) के अधिकारी को शामिल नहीं किया जाएगा।

संयुक्त राष्ट्र की विमानन एजेंसी आईसीएओ (इंटरनेशनल सिविल एविएशन ऑर्गेनाइजेशन) ने भारत सरकार को अपने एक अधिकारी की मदद देने की पेशकश की थी। यह अधिकारी पहले से ही भारत में मौजूद था, लेकिन भारतीय अधिकारियों ने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया। इंडिया टुडे ने रिपोर्ट्स के हवाले से ये खबर दी है। वहीं, हादसे के बाद प्लेन का ब्लैक बॉक्स के डेटा को रिकवर कर लिया गया है। गुरुवार को सरकार ने बताया कि इसका डेटा डाउनलोड हो गया है। अहमदाबाद में हादसे में 241 लोगों की मौत हो गई थी, जबकि एक यात्री की जान बच गई थी।

सरकार ने संयुक्त राष्ट्र का प्रस्ताव ठुकराया, ब्लैक बॉक्स का डेटा रिकवर हुआ जांच एजेंसी ब्लैक बॉक्स से रिकवर हुए डेटा का विश्लेषण करेगी



वहीं, इस घटना में कुल 270 लोग मारे गए थे। अहमदाबाद प्लेन हादसा में जान गंवाने वाले 251 मृतकों की डीएनए से पहचान हो चुकी है। 245 मृतकों के शव उनके परिजनों को सौंप दिए गए हैं। आईसीएओ आमतौर पर तब जांच में शामिल होता है जब किसी देश की तरफ से मदद मांगी जाती है। जैसे 2014 में मलेशियन विमान

नहीं आई है। हादसे के बाद प्लेन का ब्लैक बॉक्स के डेटा को रिकवर कर लिया गया है। गुरुवार को सरकार ने बताया कि इसका डेटा डाउनलोड हो गया है। मेमोरी मॉडयूल का एक्सेस भी मिल गया है। अब जांच एजेंसी ब्लैक बॉक्स से रिकवर हुए डेटा का विश्लेषण (एनालिसिस) करेगी। इससे हादसे के कारणों का पता चलेगा। इससे पहले 24 जून को नागरिक उड्डयन मंत्री राममोहन नायडू ने बताया था कि ब्लैक बॉक्स को जांच के लिए विदेश नहीं भेजा जा रहा। इसकी जांच एयरक्राफ्ट एक्सीडेंट इन्वेस्टिगेशन ब्यूरो (एएआईबी) कर रहा है। केंद्र सरकार के अनुसार, क्रैश प्लेन से दो ब्लैक बॉक्स (सीबीआर और डीएफडीआर) सेंट मिले हैं। इनमें हादसे के समय पायलटों की बातचीत और विमान की तकनीकी जानकारी का रिकॉर्ड मिलेगा। पहला सेंट 13 जून को और दूसरा 16 जून को बरामद किया गया।

रिहाई में देरी पर उग्र को देना पड़ा 5 लाख मुआवजा

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय के जमानती आदेश का पालन करने में करीब एक माह की देरी के लिए उत्तर प्रदेश सरकार को पांच लाख रुपये का मुआवजा देना पड़ा। न्यायमूर्ति के वी विश्वनाथन और न्यायमूर्ति एन कोटिश्वर सिंह की अंशकालीन कार्य दिवस पीठ के समक्ष उत्तर प्रदेश सरकार के अधिवक्ता ने शुक्रवार को कहा कि अदालती आदेश का पालन करते हुए संबंधित पीड़ित व्यक्ति को मुआवजा दे दिया गया है। अदालत के समक्ष पीड़ित व्यक्ति के अधिवक्ता ने उक्त मुआवजा राशि प्राप्त होने की पुष्टि की। शीर्ष

कोर्ट ने मुआवजा राशि प्राप्त होने की पुष्टि की

अदालत ने आरोपी व्यक्ति को जेल से रिहा करने में करीब एक माह की देरी के लिए 25 जून को उत्तर प्रदेश सरकार को फटकार लगाई थी और इसके लिए उसे पांच लाख रुपये का मुआवजा संबंधित पीड़ित व्यक्ति को देने का आदेश दिया था। साथ ही, राज्य सरकार से इस संबंध में अनुपालन रिपोर्ट पेश करने का भी आदेश दिया था। शीर्ष अदालत ने आरोपी को 29 अप्रैल को जमानत दे दी थी, लेकिन उसे गाजियाबाद जिला जेल से 24 जून को रिहा किया गया।

शिक्षक अधिक से अधिक वोट बनवाएं

शिक्षा के क्षेत्र में ऐतिहासिक कदम उठा रही प्रदेश सरकार : दिल्ली

शाह टाइम्स संवाददाता नजीबाबाद खंड शिक्षक क्षेत्र से सदस्य विधान परिषद शिक्षक विधायक डॉ. हरि सिंह दिल्ली ने कहा कि प्रदेश सरकार शिक्षा के क्षेत्र में अनेक ऐतिहासिक कदम उठा रही है, जिससे प्रदेश में शिक्षा के प्रति एक अच्छा माहौल बन रहा है।

उन्होंने कहा कि प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कुशल नेतृत्व में हमारी सरकार बिना किसी भेदभाव के प्रत्येक क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर रही है। सरकारी योजनाओं का लाभ बिना किसी भेदभाव के पात्र व्यक्तियों तक पहुंचाया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि स्कूल कॉलेज के प्रबंध तंत्र एवं अध्यापक वर्ग की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है कि हम सबको सस्ती व सुलभ शिक्षा सबको उपलब्ध कराये। शिक्षक विधायक



डा. दिल्ली आज गढ़मलपुर स्थित एसएसडी डिग्री कॉलेज में कॉलेज के प्रबंधक रणवीर सिंह चौहान की अध्यक्षता एवं भाजपा नेता चौधरी ईशम सिंह के संचालन में क्षेत्र के स्कूल, कॉलेजों के प्रबंधक गणों, प्रधानाचार्य गणों एवं अध्यापकों को संबोधित कर रहे थे।

इस अवसर पर ब्लॉक प्रमुख तपराज सिंह देशवाल ने कहा कि

सरकार प्रत्येक क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर रही है, जहां हम देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में विदेश में अपनी विशेष पहचान बनाकर भारत को उन्नति के शिखर पर ले जाने में लगे हैं, वहीं योगी जी के नेतृत्व में हम प्रदेश का चौमुखी विकास कर रहे हैं।

भाजपा नेता चौधरी ईशम सिंह ने सभी स्कूल कॉलेज के प्रबंधकों का

आह्वान किया कि वह अपने-अपने विद्यालयों में अध्यापन कार्य कर रहे सम्मानित शिक्षकों के अधिक से अधिक वोट बनवाएं ताकि भविष्य में होने वाले विधान परिषद चुनाव में एक बार फिर से हम भारतीय जनता पार्टी का सहयोग कर सकें। एसडी कॉलेज के प्रबंध निदेशक रणवीर सिंह चौहान ने अतिथियों का धन्यवाद/आभार प्रकट किया।

इस अवसर पर भाजपा के रायपुर मंडल अध्यक्ष सहदेव भारद्वाज, सरदार सेवा सिंह दिल्ली, अरविंद कुमार, चौधरी ईशम सिंह, प्रधानाचार्य हरवीर सिंह, ठाकुर सिंह, पूर्व प्रधान धर्मपाल सिंह, प्रकाश चौहान, वसीम अहमद, एड ब्रजराज सिंह देशवाल, राष्ट्रीय लोक दल नेता हरेंद्र सिंह तोमर, राजू गुप्ता, संचालक गन्ना समिति सुधीर चौधरी, निखिल कुमार, राकेश राठी, सुमित जैन, अनुज महेश्वरी, आदि उपस्थित रहे।

दिव्यांगता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले होंगे सम्मानित

शाह टाइम्स ब्यूरो बिजनौर मुख्य विकास अधिकारी पूर्ण बोर ने बताया कि दिव्यांगता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्तियों/संस्थाओं को विभाग द्वारा तीन दिसम्बर को विश्व दिव्यांग दिवस के अवसर पर राज्य स्तरीय पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं।

उन्होंने बताया कि दिव्यांगता हेतु निम्न 12- श्रेणियों के राज्य स्तरीय पुरस्कार दक्ष दिव्यांग कर्मचारियों/स्वनिर्वाह दिव्यांगजन के लिए दिव्यांगजन हेतु सर्वश्रेष्ठ नियोक्ता तथा सर्वश्रेष्ठ प्लेसमेंट अधिकारी या एजेंसी के लिए सेवायोजकों को, दिव्यांगजन से निमित्त कारगर सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति एवं सर्वश्रेष्ठ संस्था के लिए, प्रेरणाप्रसूत हेतु, दिव्यांगजन के जीवन सुधारने के निमित्त सर्वश्रेष्ठ नवीन अनुसंधान या उद्घाटन विकास के लिए, दिव्यांगजन हेतु 'बाधामुक्त वातावरण' के सुजन हेतु सर्वश्रेष्ठ कार्य के लिए, दिव्यांगजन को पुन. रखा संवाएं प्रदान करने वाले सर्वश्रेष्ठ जिला के लिए, सर्वश्रेष्ठ

15 जुलाई तक मांगे गए आवेदन

सुजनशील दिव्यांग वयस्क व्यक्तियों एवं बालक/बालिका हेतु, सर्वश्रेष्ठ ब्रेलप्रेस के लिए, दिव्यांगजन के लिए सर्वोत्तम अनुकूल वेबसाइट हेतु, सर्वश्रेष्ठ दिव्यांग खिलाड़ियों के लिए, दिव्यांगजन के सशक्तीकरण हेतु कार्यरत अधिकारी/कर्मचारी के लिए पुरस्कारों की व्यवस्था की गयी है। उन्होंने बताया कि राज्य स्तरीय पुरस्कार के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी विभाग की वेबसाइट www.uphwd.gov.in अथवा हेल्पलाइन नं. 1801801995 से प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने बताया कि इच्छुक व्यक्तियों के उपरोक्तानुसार श्रेणी में राज्य स्तरीय पुरस्कार हेतु आवेदन समस्त प्रपत्रों के साथ 15 जुलाई तक किसी भी कार्य दिवस में जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी, विकास भवन, बिजनौर के कार्यालय में जमा किए जायेंगे।

एक नजर

थाने में शांति समिति की बैठक



मंडावर। कांवड़ यात्रा एवं मुह्रम त्योहार को लेकर शांति समिति की बैठक की गई। बैठक की अध्यक्षता थाना प्रभारी राजकुमार ने तथा कुशल संचालन रघुवीर सिंह वैधुडक द्वारा किया गया। बैठक में क्राइम इंस्पेक्टर धीरेंद्र सिंह गंगवार, थाना स्टाफ, क्षेत्रीय ग्राम प्रधान, सभासद, धर्मगुरु, पत्रकार एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। शिवकुमार राजपूत, नईम अहमद, सुनील पाल, योगेश कुमार, सत्येंद्र राजपूत, गुरुजी मंडावर मंडल प्रमुख भाजपा नेता मनोज कुमार ने अपने विचार एवं सुझाव व्यक्त किये। सभी लोगों को थाना प्रभारी की ओर से जलपान कराया गया। थाना प्रभारी ने दोनों त्योहारों को अच्छे ढंग से मिलजुल कर मनाने का आह्वान करते हुए कहा कि कहीं कोई भी किसी भी प्रकार की समस्या हो तो तुरंत पुलिस को अवगत कराने का कष्ट करें।

कुंडलियां काव्यम पुस्तक का विमोचन



नजीबाबाद। ग्रीन लाइट सोनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल अभीपुरा में ग्राम जालपुर के वरिष्ठ कवि/लोक गीतकार कर्मवीर सिंह द्वारा रचित द्वितीय पुस्तक 'कुंडलियां काव्यम' का विमोचन नजीबाबाद से पधार वरिष्ठ साहित्यकार इंद्रदेव भारती की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। जिसमें विशिष्ट अतिथि एवं वरिष्ठ कवयित्री डॉ. पूतम चौहान धामपुर तथा मुख्य अतिथि भूदत्त शर्मा प्रसिद्ध गीतकार (हरिद्वार) तथा संचालक गिरीश त्यागी बिजनौर ने किया। कार्यक्रम का आयोजन विद्यालय के प्रबंधक रविंद्र कुमार एवं निदेशिका रचना सिंह ने किया। कवि गोष्ठी में इंद्रदेव भारती, फूल माला वर्मा, जितेंद्र कक्कड़, श्याम प्रकाश तिवारी (नजीबाबाद), डॉ. पूतम चौहान, राजकुमार वर्मा, राजकुमार सिंह (धामपुर), साधुराम पल्लव (हरिद्वार), डॉ. एम. सावित्र गमगीन (भागवाला), गिरीश त्यागी बिजनौर, हेमलता काशीरामपुर, आलोक त्यागी लालपुर आदि कवियों ने भाग लिया।

हनुमान चालीसा का सामूहिक पाठ



धामपुर। मोहल्ला साहवान स्थित पुरानी तहसील के निकट सौरभ मित्तल के आवास पर श्रीमद् हनुमत भक्ति प्रचार मंडल के तत्वावधान में सात बार हनुमान चालीसा का सामूहिक पाठ किया गया। पाठ के बाद सुंदर भजनों की प्रस्तुति से माहौल भक्तिमय हो गया। भजन 'धर्म के प्रकाश को, पापियों के नाश को, श्रीराम की सेना चली' ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। श्रद्धालु ताली बजाकर भजन गायकों का उत्साहवर्धन करते नजर आए। अंत में बजरंगबली की आरती के पश्चात प्रसाद वितरण किया गया। आयोजक परिवार में कैलाश मित्तल, मुकेश मित्तल, कमल मित्तल, सौरभ मित्तल, गौरव राजवंशी, सोनिका मित्तल, आभा मित्तल, ऊषा मित्तल, अरुण मित्तल, निखिल जैन, मयंक गुप्ता आदि उपस्थित रहे। श्रीराम दरबार का चित्र आयोजक परिवार को भेंट स्वरूप दिया गया। श्रीमद् हनुमत भक्ति प्रचार मंडल की ओर से अध्यक्ष अरुण अग्रवाल, राम प्रकाश वर्मा, सुनील चौहान, प्रितम सेनी, मनोज रस्तोगी, संदीप भारद्वाज, पं. गौरव त्रिवेदी, विकास कुमार, सवेश गिरी आदि मौजूद रहे।

एडीएम जिला खरीद अधिकारी नामित

बिजनौर। जिलाधिकारी जसजीत कौर द्वारा खरीफ विपणन वर्ष 2025-26 में धान खरीद कार्य के लिए अपर जिलाधिकारी (वि./रा.), बिजनौर को जिला खरीद अधिकारी नामित किया जाता है। उन्होंने अपर आयुक्त, खाद्य एवं रसद विभाग, उ.प्र. के पत्र में निर्गत निर्देशों के क्रम में अपर जिलाधिकारी (वि./रा.) को निर्देशित किया कि निर्गत निर्देशों एवं समय सारिणी के अनुसार समस्त अपेक्षित कार्यवाही सुनिश्चित कर, नियमित रूप से धान खरीद की समीक्षा करते हुए उन्हें अवगत कराना सुनिश्चित करें। अपर जिलाधिकारी (वि./रा.) / जिला खरीद अधिकारी जनपद बिजनौर का सम्पर्क नम्बर 9454417641 है।

रोटी, कपड़ा और मकान का सपना साकार कर रही है मोदी-योगी सरकार : अरुण वर्मा

कांग्रेस पर जम कर साधा निशाना



शाह टाइम्स संवाददाता स्योहारा। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल के प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. स्योहारा के लोकप्रिय समाजसेवी अरुण कुमार वर्मा ने एक प्रेस वार्ता के दौरान मोदी-योगी सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को लेकर कांग्रेस पार्टी पर तीखा प्रहार करते हुए कहा कि आज देश में गरीबों के लिए रोटी, कपड़ा और मकान की जो बात कभी एक चुनौती नारा था। वह आज भाजपा सरकार के नेतृत्व में एक सच्चाई बन चुका है।

अरुण कुमार वर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में केंद्र व राज्य सरकारें हर जरूरतमंद तक सरकारी योजनाओं का सीधा लाभ पहुंचा रही हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने अपने 60

वर्षों के शासन में केवल 3.26 करोड़ मकान बनाए जबकि भाजपा ने बीते ग्यारह वर्षों में 2.50 करोड़ से अधिक घर गरीबों को बनाकर दिए हैं। उन्होंने आंकड़े प्रस्तुत करते हुए बताया कि जहां कांग्रेस सरकारें प्रति वर्ष औसतन 11 लाख मकान ही बना पाईं वहीं भाजपा सरकार हर वर्ष 35 लाख से अधिक मकान बना रही है। उन्होंने कहा कि प्रति माह कांग्रेस काल में 94 हजार घर बनते थे जबकि मोदी-योगी युग में 2.62 लाख मकान प्रति माह का निर्माण हो रहा है। यह दिखाता है कि भाजपा सरकार

गरीबों के कल्याण के लिए वास्तव में कितनी प्रतिबद्ध है। अरुण कुमार वर्मा ने कहा कि कांग्रेस ने सिर्फ नारे दिए जबकि भाजपा सरकार ने उन्हें जमीन पर उतारने का कार्य किया है। आज गरीब को पक्का घर मिल रहा है, मुफ्त राशन मिल रहा है, उज्ज्वला योजना से रसोई गैस मिल रही है और महिलाओं को सशक्त किया जा रहा है। यह सबका साथ सबका विकास का असली उदाहरण है। अरुण वर्मा ने कहा कि गरीब कल्याण योजना प्रधानमंत्री आवास योजना, उज्ज्वला योजना, जनधन योजना, स्वच्छ भारत मिशन जैसी अनेक योजनाएं गरीबों के जीवन में बदलाव लेकर आई हैं। उन्होंने दावा किया कि उत्तर प्रदेश में योगी सरकार ने भ्रष्टाचार पर कंकल कसकर हर वर्ग के लोगों तक लाभ पहुंचाया है। उन्होंने अंत में कहा कि यह सब कुछ भाजपा कार्यकर्ताओं की ईमानदारी समर्पण और नेतृत्व की दूरदर्शिता का परिणाम है, जिसमें स्वयं स्योहारा जैसे नगरों तक योजनाओं का लाभ पहुंच रहा है।

ग्राम चौपाल में सुनी समस्याएं



शाह टाइम्स संवाददाता नहटौर। शासन के दिशा निर्देश के अनुसार विकासखंड आंके की ग्राम पंचायत बूढ़पुर मुजफ्फरपुर नहेड़ा में आज ग्राम चौपाल आयोजित की गई, जिसमें शासन की योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई और ग्रामीणों की समस्याएं सुनी गई।

प्राप्त समाचार के अनुसार शुक्रवार को ग्राम पंचायत बूढ़पुर में ग्राम चौपाल में संचालित जन कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी दी और पात्र व्यक्तियों को योजना का लाभ दिलाने के लिए संबंधित कर्मचारियों को पात्र व्यक्तियों के चयन करने के निर्देश दिए। साथ ही ग्रामीणों की समस्याओं

को लेकर सरकार गंभीर है यदि कोई समस्या हो तो उसको संबंधित अधिकारी से अवगत कराए। तत्काल प्रभाव से उसका निस्तारण किया जाएगा। इस मौके पर एक ग्रामीण ने हेंड पंप की समस्या रखी। जिस पर संबंधित सचिव को करने के लिए निर्देश दिए। इसके अलावा मुजफ्फरपुर नहेड़ा में आयोजित ग्राम चौपाल में ग्राम प्रधान तसलीम अहमद, ब्लॉक प्रमुख राकेश चौधरी, एडीओ पंचायत मनोज कुमार, ग्राम पंचायत सचिव पंकज सेनी आदि मौजूद रहे और शासन की योजनाओं के बारे में जानकारी देते हुए उनकी समस्या को सुना।

जलालाबाद में फ्लाईओवर के जीने ना बनने से जनता परेशान

नजीबाबाद। नगर पंचायत जलालाबाद के मोहल्ला राहुखेड़ी में स्थित फ्लाई ओवर के जीने (सीढ़ी) ना बनने से लोगों को भारी दिक्कत हो रही है। गौरतलब है कि ये फ्लाईओवर बहुत साल पहले बनकर तैयार हो चुका है। इस पर यातायात सुचारु रूप से चालू है। अगर इस फ्लाई ओवर के दोनों सड़क में जीने नहीं बनने से क्षेत्र की जनता को भारी दिक्कत उठानी पड़ रही है। फ्लाईओवर के नीचे से रेलवे लाइन गुजर रही है, जिस पर लगातार ट्रेनों का आना-जाना लगा रहता है। जीने ना बनने से लोग जान जोखिम में डालकर रेलवे लाइन पर कर रहे हैं। क्षेत्र के जनप्रतिनिधि इस मामले को लेकर कुंभकरण की नींद सो रहे हैं। यह भी चर्चा है कि जीने बनाने के लिए सरकार की तरफ से पैसा भी आवंटित हो चुका है।

जिला कमेटी का विस्तार, जिलाध्यक्ष का स्वागत

शाह टाइम्स संवाददाता नगीना। आगामी निकाय चुनावों को लेकर राजनीतिक सरगमियां तेज हो गई हैं। इसी कड़वी में एआईएमआईएम के बिजनौर जिला अध्यक्ष के नगीना आगमन पर डॉ. इफ्तेखार और उनकी टीम ने जोशीला स्वागत किया। कार्यक्रमों का उद्घाटन चरम पर था और आयोजन स्थल पर भारी भीड़ जुटी।

कार्यक्रम के दौरान जिला अध्यक्ष ने अपने संबोधन में पार्टी के उद्देश्य को रेखांकित करते हुए कहा, एआईएमआईएम समाज के हर वर्ग को आवाज उठाने के लिए प्रतिबद्ध है। हम नगीना में संगठन विस्तार का संकल्प लेकर आए हैं और आगामी चुनाव में जनता को एक सशक्त विकल्प देंगे। डॉ. इफ्तेखार कुरैशी ने भी सभा को संबोधित करते हुए कहा, नगीना के विकास और जनहित को मुश्किलों का प्रार्थनिकता दी जाएगी। हम पार्टी के संदेश को घर-घर तक पहुंचाने के लिए कार्यकर्ताओं से सहयोग की अपील करते हैं। इस कार्यक्रम में एआईएमआईएम के पदाधिकारी, कार्यकर्ता और



स्थानीय लोग बड़ी संख्या में मौजूद थे। एआईएमआईएम को मिल रहे बढ़ते समर्थन से यह संकेत मिल रहा है कि पार्टी आगामी चुनावों में मजबूत दावेदारी पेश कर सकती है। इस मौके पर मौहम्मद जावेद जिला सचिव, मौहम्मद नबील जिला महासचिव, कारी अब्दुल करीम जिला महासचिव, मौहम्मद खुशीद अलम

जिला कोषाध्यक्ष, मुफ्ती रियाज मेहरी जिलाध्यक्ष, डॉ. इफ्तेखार कुरैशी सचिव पश्चिमी उत्तर प्रदेश व पूर्व नगीना विधायक प्रयाशी पति, शमसुल इस्लाम जिला महासचिव, नईम कुरैशी, जाहिर अंसारी, मुनीम उर्फ गुड्डू विभाग सभा अध्यक्ष, सलीम अहमद नगर अध्यक्ष मौहम्मद आबिद, मौहम्मद महताब आदि मौजूद रहे।

रसायनों का छठा सबसे बड़ा उत्पादक है भारत

तिरुवनंतपुरम। भारत वैश्विक स्तर पर छठा सबसे बड़ा रसायन उत्पादक है, जिसका राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में सात प्रतिशत योगदान है।

कार्बनिक और पदार्थ रसायन विज्ञान की वैश्विक प्रारंभिकता पर प्रकाश डालते हुए सीएसआईआर-एनआईआईएसटी के निदेशक डॉ. सी. आनंदमधुकृष्णन ने इस क्षेत्र में नवाचार को गति देने के लिए जलवायु-स्मार्ट, कम कार्बन रसायन विज्ञान और एआई और स्वचालन जैसी प्रौद्योगिकियों के एकीकरण की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने संस्थान के रासायनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रभाग (सीएसटीडी) द्वारा आयोजित कार्बनिक और पदार्थ रसायन विज्ञान में प्रगति पर राष्ट्रीय सम्मेलन (एओएमसी-2025) का उद्घाटन करते हुए यह बात कही, जो वैज्ञानिक उत्कृष्टता के 50 वर्षों के उपलक्ष्य में स्वर्ण जयंती कॉन्क्लेव श्रृंखला का हिस्सा है। दो दिवसीय सम्मेलन का उद्देश्य अग्रणी वैज्ञानिकों, उद्योग विशेषज्ञों, शिक्षाविदों और युवा शोधकर्ताओं को एक साथ लाना है, ताकि वैश्वीकरण और पदार्थ रसायन विज्ञान के क्षेत्र में हालिया प्रगति और उभरते खोजों पर चर्चा कर सकें। भारत के अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र के विकास पर विचार

करते हुए आईआईएससी बैंगलोर के प्रोफेसर और सीएसआईआर-सीडीआरआई के पूर्व निदेशक प्रोफेसर टीके चक्रवर्ती ने युवा पीढ़ी को आज उपलब्ध उपकरणों और बुनियादी ढांचे का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया।

विदेशी मुद्रा भंडार घटकर

697.9 अरब डॉलर पर मुंबई। विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति, स्वर्ण, विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के पास आरक्षित निधि में भारी गिरावट होने से 20 जून को समाप्त सप्ताह में देश का विदेशी मुद्रा भंडार 1.02 अरब डॉलर कम होकर 697.9 अरब डॉलर पर आ गया। वहीं इसके पिछले सप्ताह देश का विदेशी मुद्रा भंडार 2.3 अरब डॉलर की बढ़ोतरी लेकर 698.9 अरब डॉलर पर रहा था। रिजर्व बैंक की ओर से शुक्रवार को जारी साप्ताहिक आंकड़ों के अनुसार 20 जून को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार के सबसे बड़े घटक विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति 35.7 करोड़ डॉलर की गिरावट लेकर 589.1 अरब डॉलर पर आ गई।

छोटे उद्योग अर्थव्यवस्था के मजबूत स्तम्भ

अंतर्राष्ट्रीय एमएसएमई दिवस समारोह के उद्घाटन पर बोली राष्ट्रपति

नई दिल्ली, वार्ता

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने छोटे उद्योगों को भारतीय अर्थव्यवस्था का मजबूत स्तंभ करार देते हुए कहा है कि ए रोजगार सृजन के साथ साथ सामाजिक समावेशन को भी बढ़ाते हैं।

मुर्मू ने शुक्रवार को यहां अंतर्राष्ट्रीय एमएसएमई दिवस 2025 के समारोह का उद्घाटन करने के बाद कहा कि सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग देश की अर्थव्यवस्था के एक मजबूत स्तंभ हैं। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग न केवल देश के सकल घरेलू उत्पाद में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, बल्कि जमीनी स्तर पर नवाचार को भी बढ़ावा देते हैं। उन्होंने कहा कि छोटे उद्योग महिलाओं, युवाओं, ग्रामीण क्षेत्रों तथा वर्गितों को



रोजगार के अवसर उपलब्ध कराकर सामाजिक समावेशन को भी बढ़ाते हैं। इस अवसर पर केंद्रीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग मंत्री जीतन राम मांझी, राज्य मंत्री शोभा करंदलाजे और खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग के अध्यक्ष मनोज कुमार के साथ-साथ मंत्रालय के अधिकारी भी मौजूद थे। आंकड़ों का उल्लेख करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि छोटे उद्योगों का देश के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 30 प्रतिशत, विनिर्माण में 36 प्रतिशत और निर्यात में 45 प्रतिशत का

योगदान रहा है। यह क्षेत्र कृषि के बाद रोजगार का दूसरा सबसे बड़ा क्षेत्र है। इस क्षेत्र से पिछड़े और ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार के अवसर पैदा होते हैं। इस तरह यह क्षेत्र कमजोर वर्गों के सशक्तिकरण और विकास के सशक्तीकरण के समावेशी विकास में मदद करते हैं। छोटे उद्योग क्षेत्र देश की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने कहा कि छोटे उद्योगों के समक्ष वित्त की समस्या के साथ साथ बंधे कर्पणियों से प्रतिस्पर्धा, अत्याधुनिक तकनीक की कमी, कच्चे माल और कुशल मानवश्रम की कमी, सीमित बाजार और भुगतान में देरी की दिक्कतें हैं। उन्होंने कहा कि छोटे उद्योगों को इन चुनौतियों से निपटने में सक्षम बनाने के लिए सरकार ने कुछ नीतिगत बदलाव किए हैं।

शाह टाइम्स
क्लासीफाईड्स **Sale**

स्त्री के सामने लज्जा होने से बेहतर है
आज ही इलाज करा लेना
छोई हुई मरदाने ताकत दोबारा
प्राप्त करने के लिए आज ही
मिले या फोन करें।
कान्हाजीपट्टा, कम्पोजर-LJP
हाशमी
देवास्वामी
9997161320, 8272800800

Cipzer
HEALTHY WITH CARE
जॉन्डिस क्योर
लिवर का जिगरी दोस्त
गुन की कमी, बरनजी
जॉन्डिस, चोटो लीवर
एल्कोहोलिक लिवर डिजीज
बाकि से लड़ने की
लाकड़ देता है तबकि
आप के फिट एन्ड स्ट्रिप
प्रमूख मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध।
86 8484 5757 info@cipzer.com

शाह टाइम्स
स्वामी शाह पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक **एस.एन. रामा** द्वारा शाह पब्लिकेशन प्रा. लि. सुजुड़ चुंगी, मेठ रोड, मुजफ्फरनगर से मुद्रित एवं दीपक कामप्लेक्स, पारकर कॉलेज रोड, मुफ्ताबाद से प्रकाशित।
सम्पादक एस.एन. रामा
*कार्यकारी सम्पादक **आनन्द बजा 'सुमन'**
☎ 0591-2313314
मुख्यालय: मोबाइल-9720007290
R.N.I.No. UPHIN/2003/10263
www.shahatimesnews.com
email:shahatimes2015@gmail.com
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु **PRB** पत्र के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद मुजफ्फरनगर न्यायालय के अधीन हो होंगे।

मर गईं सफेदपोशों की संवेदनाएं कोई भी नेता नहीं आया आंसू पौछने, साहुकारों की मौज

C
M
Y
K

शाह टाइम्स संवाददाता नूरपुर। कर्ज के बोझ तले एवं आर्थिक तंगी से परेशान परिवार के द्वारा जहर खाने से तीन की मौत हो गई थी। साथ ही परिवार के मुखिया पुखराज की हालत स्थिर बनी हुई है। एक साथ तीन अर्धियां उठने से कोहराम मच गया।

प्राप्त समाचार के अनुसार थाना क्षेत्र के ग्राम टंडेरा में एक परिवार के तीन सदस्यों की अर्धियां एक साथ उठने से सभी की आंखें नम हो गईं। पुखराज प्रजापति ने आर्थिक तंगी के कारण परिवार में कलह के चलते अपनी पत्नी व दो पुत्रियां सहित जहर खा लिया था। हालत बिगड़ने पर सूचना पर पहुंची पुलिस ने उन्हें जिला अस्पताल में भर्ती कराया था। जहां शीतू, अनीता व उनकी मां रमेशिया ने



दम तोड़ दिया था। इस घटना से ग्राम में सननाटा पसर गया था। देर रात दस बजे इन तीनों के शव पोस्टमार्टम के बाद ग्राम में पहुंचे, तो हर किसी की आंखों में इस परिवार की गरीबी को

देखकर आंसू थे। 21 वर्षीय पुत्र सचिन ने मां व दोनों बहनों का गांगन नदी पर अंतिम संस्कार कर दिया। क्षेत्र में इतनी बड़ी घटना हो गई, मगर अभी तक किसी भी राजनीतिक

पार्टी का नेता इस दुख की घड़ी में पीड़ित परिवार के आंसू पौछने के लिए नहीं पहुंचा। पुखराज सिंह का पुत्र सचिन अपने बाप का सहारा था, मगर सचिन ने मजबूरी में अपने पिता का सहारा बनने को मना कर दिया था। क्योंकि पुखराज पर साहुकारों का कम से कम छह लाख कर्ज था। कर्ज न चुकाने पर पुखराज को अपने परिवार के साथ यह कदम उठाने पर मजबूर होना पड़ा।

अंतिम संस्कार के दौरान पुलिस स्टॉफ मौजूद रहा। इस घटना को लेकर लोग तरह-तरह की चर्चा कर रहे हैं। क्षेत्र में अवैध रूप से साहुकारी करने वाले बड़ी संख्या में मौजूद हैं। जो महंगी दरों पर व्याज लेते हैं। इनके द्वारा गरीबों का खून चूसा जाता है।

सांप के काटने से अधेड़ की मौत

शाह टाइम्स संवाददाता धामपुर। मोहल्ला नई सराय नई बस्ती में उस समय हड़कूप मच गया, जब एक 45 वर्षीय व्यक्ति की सांप के काटने से मौत हो गई। मृतक की पहचान खुर्शीद पुत्र हकीमुद्दीन के रूप में हुई है, जो वर्षों से अपने परिवार के साथ किराये के मकान में रह रहा था।

परिजननों ने बताया कि खुर्शीद कभी-कभी सांप पकड़ने वाले सपेरो के साथ जाया करता था। गुरुवार की रात वह नगीना रोड स्थित एक ढाबे पर सांप पकड़ने गया था। बताया जा रहा है कि शुक्रवार सुबह करीब 10 बजे किसी जहरीले सांप ने उसे डस लिया।

सांप के काटने के बाद वह किसी को कुछ बताए बिना घर लौट

सपेरो के साथ रहता था मृतक

आया और ठंडे पानी से स्नान करता रहा। कुछ ही समय बाद उसकी तबीयत बिगड़ने लगी और वह बेहोश हो गया। आनन-फानन में परिजन उसे सरकारी अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां प्राथमिक उपचार के साथ वैक्सिन दी गई, लेकिन स्थिति में सुधार नहीं हुआ। कुछ समय बाद ही चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

खुर्शीद की मौत की खबर जैसे ही मोहल्ले में फैली, वहां लोगों की भारी भीड़ जमा हो गई। मोहल्ले में शोक की लहर दौड़ गई।

एक नजर

नहटौर के युवक की मुंबई में डूबकर मौत

नहटौर। नहटौर के मोहल्ला हाथी वाला मंदिर निवासी सलीम बड़ापुरिया का 28 वर्षीय पुत्र तंजीम मुंबई के अंधेरी में अपने मामा फर्डिन के घर पर रह रहा था। वह मुंबई में बेकरी में फेरी आदि का काम करता था। बताया जाता है कि तंजीम जुहु चौपाटी इलाके में समुद्र में नहाने गया था। इसी दौरान वह अधिक गहराई में पहुंचने पर डूब गया। शुक्रवार को उसकी मौत का पता चलने पर परिवार में कोहराम मच गया। तंजीम पांच माह पूर्व मुंबई गया था। उसके शव को मुंबई से नहटौर लाया जा रहा है।



कपिल सहित छह अरेस्ट

बिजनौर। विभिन्न न्यायालयों के आदेशों पर जनपद में छह अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार किए गए अभियुक्तों में स्योहारा के ग्राम सदाफल निवासी राहुल, कपिल व विजयपाल पुत्रगण सोमपाल, नगीना ताराचंद व प्रीतम सिंह एवं चांदपुर का जयप्रकाश शामिल हैं।

बढ़ापुर में बाप-बेटा अरेस्ट

बिजनौर। बढ़ापुर पुलिस ने ग्राम चम्पतपुर चकला निवासी पहलवान सिंह पुत्र प्रेम सिंह एवं उसके पुत्र बोबी को जानलेवा हमला करने के मामले में गिरफ्तार किया है। अभियुक्तों से वारदात में इस्तेमाल लाठी व डण्डा बरामद किया गया है।

स्टेशन पर निर्माण कार्य तेज

नजीबाबाद। अमृत भारत विकास योजना के तहत स्थानीय रेलवे स्टेशन को करीब 16 करोड़ रुपये की लागत से नया स्वरूप दिया जा रहा है। रेलवे स्टेशन के मुख्य द्वार पर हॉल, एफओबी फाउंडेशन, लैंडिंग कार्य, लिफ्ट फाउंडेशन कार्य के बाद कार्यालय भवन निर्माण कार्य प्रगति पर है। लिंटर डालने और दूसरी मंजिल तैयार करने की योजना में तेजी आई है। निर्माण इकाई ने रेलवे स्टेशन के मुख्य द्वार पर स्थित टिकट आरक्षण खिड़की को स्थानांतरित किया था। प्रथम चरण में प्लेटफार्मों को ऊंचा कराया गया। अवर अभियंता मोहित कुमार ने बताया कि मुख्य द्वार क्षेत्र का निर्माण प्राथमिकता से कराया जा रहा है। नए कार्यालय भवन के निर्माण का लक्ष्य करीब एक वर्ष का निर्धारित किया गया है। स्टेशन के कार्यालय भवन निर्माण का कार्य पूरा होते ही प्लेटफार्म एक पर स्थित पुराने भवन को गिरा कर प्लेटफार्म का चौड़ीकरण, यात्रियों को दी जाने वाली सुविधाओं के साथ अन्य विकास कार्य किए जाएंगे।

नहर से लाश बरामद



नूरपुर। क्षेत्र के ग्राम दौलतपुर की नहर में रहता बिल्लौच ब्रिज के नीचे आज एक लाश पड़ी हुई दिखाई दी। मृतक ने मेहरी रंग की अंडरवियर और काले रंग का बनिपान पहन रखा था। लाश के दाहिने हाथ में लाल रंग का कलवा बंधा हुआ था। समाचार लिखे जाने तक लाश की शिनाख्त नहीं हो पाई थी। संभवतः हत्या के बाद उसकी लाश को नहर में डाल दिया गया है या फिर नहर में नहाते हुए डूब गया है। प्रभारी निरीक्षक जयभगवान सिंह ने बताया कि अज्ञात लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम मोचरी में भिजवा दिया गया है। अज्ञात लाश के बारे में जानकारी की जा रही है।

अवैध वाहनों पर कसेगा शिकंजा

बिजनौर। स्थानीय रोडवेज बस स्टैंड से अवैध डगगामार वाहनों का संचालन नहीं होगा। प्रशासन ने इन वाहनों के संचालन पर रोक लगाए जाने के लिए टीम गठित कर दी है। टीम में एशारटीओ, एआरएम और पुलिस अधिकारी को शामिल किया गया है। इसके अलावा दुर्घटना संभावित क्षेत्रों में सुरक्षात्मक चिन्ह और रीफ्लेक्टर लगाए जाने की बात तय की गई। डीएम जसजीत कौर ने कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में दुर्घटनाएं रोकने के लिए किए गए कार्यों की विदुवार समीक्षा की। उन्होंने कहा कि सड़क सुरक्षा को पूर्ण मानकों के अनुसार सुरक्षित बनाया जाए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि वह ब्लैक स्माट पर दुर्घटना रो. कने को सभी उपाए कर और दुर्घटना के कारणों की जांच भी करें।

बाइक सवारों की हालत गंभीर



नजीबाबाद। जहां योगी सरकार में बदमाशों पर पुलिस प्रशासन की लगाम कसी हुई है, वहीं क्षेत्र में अपराधियों के हांसले इतने बुलंद हो गए हैं कि वह बेखोज होकर वारदातों का अंजाम दे रहे हैं। जलालाबाद बाईपास पर कार चालक ने तीन बाइक सवारों को टक्कर मार दी। जिससे उन्हें गंभीर चोट आई। भनेड़ा टोल टैक्स बैरियर पर भी चालक बिना रुके खंभे को उखाड़ कर फरार हो गया। तीनों बाइक सवारों के पैरों की हड्डियां टूट गईं। पुलिस ने मौके पर पहुंच कर एंबुलेंस बुलाई। घायलों को जिला अस्पताल भेजा गया।

राजस्व विभाग करेगा वसूली

बिजनौर। वर्ष 2009 से पहले अपनी जमीन पर मोबाइल टावर लगवाने के लिए तमाम शर्तों के साथ कंपनी और संबंधित जमीन के मालिक के बीच लिखित समझौता होता था, जिसका पंजीकरण स्टॉप के माध्यम से निबंधक कार्यालय में होना अनिवार्य था। लेकिन प्रदेश भर में बड़ी संख्या में लोगों ने ऐसा नहीं किया। जिस कारण स्टॉप विभाग को भी बड़े पैमाने पर राजस्व की हानि हुई। आरसी जारी किए जाने पर दोनों पक्ष न्यायालय में चले गए। अब उच्चतम न्यायालय ने पिछले दिनों स्टॉप विभाग के पक्ष में निर्णय सुनाया है। जिसके बाद स्टॉप विभाग ने भी संबंधित से राजस्व वसूली की प्रक्रिया शुरू कर दी है। जनपद में भी ऐसे 100 से अधिक प्रकरण हैं, जिसमें राजस्व की वसूली की जानी है। निबंधक विभाग ने ऐसे प्रकरणों की सूची तैयार करना शुरू कर दिया है। राजस्व वसूली होने से विभाग को करीब 50 लाख का राजस्व प्राप्त होगा।

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

‘शाह टाइम्स’

की शत-प्रतिशत गारंटी

खबरें छुपाता नहीं, छापता है

मोबाइल नम्बर:- 9927777377

samiullah.bijnor@gmail.com

एक ही परिवार के सात भाइयों ने अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाकर किया नाम रोशन

विदेशों में उच्च पदों पर हैं आसीन

शाह टाइम्स संवाददाता अफजलगढ़। जो मां-बाप अपने बच्चों को अपने जीवन में संघर्ष कर शिक्षा दिलाने का काम करते हैं, उनसे भायशाली कोई नहीं होता। नगर के एक ही परिवार के सात भाइयों ने अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाकर नगर का नाम ही रोशन नहीं किया बल्कि उनके भविष्य को उज्ज्वल करने का काम किया।

नगर के मोहल्ला नेजा सराय निवासी स्व. हाजी नजीर अहमद हाथी वालों ने अशिक्षित होते हुए भी अपने जीवन में संघर्ष कर अपने सातों बेटों को शिक्षा दिलाई, जिसका परिणाम यह निकला आज वही सातों भाई शफीक अहमद, शरीफ अहमद, खलील अहमद, वजीर अहमद, शमीम अहमद, कबीर अहमद, अजीम अहमद, अपने महमूद वालिद को आदर्श मानकर अपने बच्चों को शिक्षा दिला कर नगर का नाम रोशन कर रहे हैं। अभी हाल ही में साईम शरीफ ने कनाडा के कैमब्रिज हेनसन कॉलेज से बीसीए के डिग्री हासिल की तथा सिरदा शमीम उज्बेकिस्तान में एमबीबीएस द्वितीय वर्ष को छात्रा है एवं नावेसर खलील जॉर्जिया में एमबीबीएस द्वितीय वर्ष को छात्रा है। तथा डॉक्टर विशाल शरीफ बीएमएस की डिग्री हासिल कर रिकन स्पेशलिस्ट के रूप में मुरादाबाद में अपने निजी क्लीनिक चला रहे हैं। साथ ही वसीम शफीक सिंगारपुर बैंक कर्नाट प्लेस दिल्ली में मैनेजर के पद पर



आसीन है तथा सलीम शफीक एडवोकेट धामपुर तहसील में वकालत कर रहे हैं व फैसल खलील गुडगांव स्थित एक प्राइवेट कंपनी में सॉफ्टवेयर इंजीनियर के पद पर तैनात है तथा दो भाई कबीर अहमद व अजीम अहमद गल्फ देशों में उच्च पदों पर रहते हुए अपने बच्चों को शिक्षा दिला रहे हैं।

शिक्षा सीखने और सिखाने की प्रक्रिया है जिसमें ज्ञान, कोशल, और दृष्टिकोण का विकास होता है। शिक्षाविदों के अनुसार शिक्षा एक व्यक्ति को बेहतर इंसान बनाने, सामाजिक जिम्मेदारियों को समझने और जीवन की चुनौतियों का सामना करने का एक साधन है। जिसमें चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व का विकास, नागरिक और सामाजिक कर्तव्यों का पालन, सामाजिक सुख और कोशल का उन्नति, राष्ट्रीय संस्कृति का

बैठक में बनाई गई रणनीति

शाह टाइम्स ब्यूरो बिजनौर। संगठन की महत्वपूर्ण बैठक में बसपा को मजबूत बनाने पर जोर दिया गया।

प्राप्त समाचार के अनुसार बसपा के आज जिला कार्यालय पर महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया। जिला अध्यक्ष दिलीप कुमार उर्फ पिंटू की अध्यक्षता एवं जिला महासचिव नंदराम प्रजापति के संचालन में आयोजित। बैठक में जिसमें मुख्य मंडल प्रभारी सतपाल पीपला, डॉ. कमल राज व पूर्व मंत्री धनीराम सिंह उपस्थित रहे। बैठक में जिला प्रभारी नाजिम अहमद अल्वी, रोहिताश कुमार एवं जिला कोषाध्यक्ष अमित चौधरी, जिला कार्यकारिणी सदस्य अकील अंसारी तथा पूर्व जिला अध्यक्ष समर सिंह एड. व अखिलेश हितैषी, जिला संयोजक भाईचारा कमेट्री विजेन्द्र करण्य आदि ने विचार व्यक्त किए। सतपाल पीपला ने कहा कि बूथ कमेट्री को निर्धारित प्रपत्र में मजबूती के साथ बना लें, तो 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव में बहुमत की सरकार बनाने से कोई रांन नहीं



सकता। बूथ कमेट्री में सर्वसमाज की भागीदारी रहेगी। साथ ही 50 प्रतिशत युवाओं को रखना जरूरी है। डॉ. कमल राज ने बताया कि बहुजन समाज पार्टी बहुजन महापुरुषों का मिशन व मूलमंत है, जिसे हर हाल में आगे बढ़ाने का काम आपको करना है।

पूर्व मंत्री धनीराम सिंह ने कहा कि बूथ कमेट्री के गठन का काम बड़ी गंभीरता से करना है। साथ ही सेक्टर कमेट्री व बूथ कमेट्री के पदाधिकारियों को पार्टी का मेंबर भी जरूर बनना है।

जिलाध्यक्ष दिलीप कुमार उर्फ पिंटू ने बूथ कमेट्री के निर्धारित प्रपत्र विधानसभा अध्यक्षों को देते हुए बूथ

कमेटियों को मजबूती से बनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि इस काम में पूरी ताकत के साथ जुट जाए।

बैठक में विधानसभा प्रभारी ब्रह्मपाल सिंह, संजीव कुमार सैनी, सुरेंद्र सिंह, महेंद्र सिंह, नसीमुद्दीन अंसारी, अजय सागर, नरेंद्र शर्मा, परम सिंह प्रधान एवं विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र कुमार रवि, संजय पाल, पवन कुमार, नरेश कुमार, बलवंत सिंह, वीर सिंह आदि व वरिष्ठ पदाधिकारी चेताराम व प्रमोद कुमार तथा सेक्टर कमेट्री के अध्यक्ष कृपाल सिंह, छोटे सिंह, लोकेश कुमार, महेंद्र सिंह, विशाल कुमार आदि उपस्थित रहे।

मिष्ठान की दुकान के ताले तोड़कर चोरी

हल्द्वार। गांव पावटी निवासी गौरव की बिजनौर-मुरादाबाद हाईवे स्टेट मार्ग पर स्थित गांव के ही बस अड्डे के पास बालाजी मिष्ठान की दुकान संचालित है। दुकानदार के अनुसार वह दुकान के शटर को ताला लगाकर गुरुवार को देर शाम घर चला गया। पुलिस पिकेट से कुछ कदम की दूरी पर चोरी ने दुकान के शटर का ताला तोड़कर अंदर रखी करीब 1500 रुपये की नगदी, एक गैस सिलेंडर, मोबाइल, बैटरी, भण्गीने व कुछ दैनिक उपयोग की वस्तुएं चोरी कर लीं। शुक्रवार की सुबह दुकानदार जब दुकान खोलने पहुंचे, तो उसे चोरी होने का पता चला। पीड़ित दुकानदार ने घटना की सूचना पुलिस को दी। सूचना पाकर मौके थाना प्रभारी निरीक्षक राजेश कुमार बैसला पुलिसबल के साथ मौके पर पहुंचे और जांच शुरू कर दी। पुलिस ने आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज छानबीन कर संदिग्धों की पहचान करने में जुटी है। थाना प्रभारी निरीक्षक राजेश कुमार बैसला ने कहा कि मामले की जांच की जा रही है।

आत्मदाह का प्रयास करने वाले युवक व परिजनों के खिलाफ मुकदमा दर्ज

शाह टाइम्स संवाददाता नगीना। बृहस्पतिवार को तहसीलदार नगीना द्वारा दिए आदेश से असंतुष्ट एक पक्ष द्वारा तहसीलदार न्यायालय के बाहर हंगामा किया गया। जिसके सम्बन्ध में एक शिकायत तहसीलदार के अर्दली द्वारा पुलिस से की गई, जिसके आधार पर पुलिस ने आरोपियों के विरुद्ध बीएसएस की विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। प्राप्त जानकारी के अनुसार मोहनलाल पुत्र मुन्शी सिंह (अर्दली तहसीलदार नगीना) निवासी मौ. कस्बा नेजोवाली गांवडी नगीना द्वारा बृहस्पतिवार को प्रभारी निरीक्षक थाना नगीना को दी गई तहरीर के माध्यम से शिकायत की गई कि वह

तहसीलदार नगीना के कार्यालय में चतुर्थी श्रेणी (अर्दली तहसीलदार नगीना) के पद पर कार्यरत है। बृहस्पतिवार 26 जून को आदिल अब्बास पुत्र जफर हसन निवासी मौ. सरायमीर नगीना द्वारा दोपहर के समय तहसीलदार नगीना के कार्यालय के सामने उपस्थित होकर कहने लगा कि तहसीलदार नगीना द्वारा मेरे मुकदमे में गलत आदेश पारित किया गया है, जिसका वह जोर-जोर से चीखते हुए विरोध करने लगा जिसमें उसके परिवार के अन्य सदस्य भी उसका साथ दे रहे थे, जो मुकदमा संख्या T202431360404757 आदिल अब्बास बनाम महफूज मिया उर्फ महफूज अहमद तहसीलदार नगीना के न्यायालय में विचाराधीन था,

पुलिस ने शुरू की कार्रवाई

जिसमें आपत्तिका शीतल पुत्र हरपाल सिंह निवासी ग्राम शेरगढ़ परगना अफजलगढ़ तहसील धामपुर द्वारा उक्त वाद में आपत्ति दाखिल की गयी थी। उक्त वाद में पीएसडी अधिकार द्वारा पक्षकारों को सुनवाई हेतु छोटी-छोटी तिथियां दी जा रही थी। जिस पर पक्षकार न्यायालय में उपस्थित करने अपना-अपना पक्ष रखते थे परन्तु जब आज उक्त वाद में तहसीलदार नगीना द्वारा अपना आदेश / निर्णय किया गया तो आदेश होने के उपरान्त वादी आदिल अब्बास पुत्र जफर हसन निवासी मौ. सरायमीर नगीना व उसके परिवार के अन्य सदस्य अली अब्बास, गुलरेज हैदर पुत्रगण जफर हसन व श्रीमति तीसीफ फात्मा पत्नी गुलरेज हैदर व श्रीमति रबाब जाहरा पत्नी आदिल अब्बास, कु. जेहरा पुत्री जफर हसन निवासीगण मौ. सरायमीर नगीना परगना व तहसील नगीना द्वारा तत्स. लैदार साहब के कार्यालय के सामने उक्त आदेश को खारिज कराने के लिये तहसीलदार साहब पर अनैतिक दबाव बनाने हेतु वादी आदिल अब्बास द्वारा अपने परिवार के अन्य सदस्यों, महिलाओं छोटे-छोटे बच्चों सहित तथा उसके अन्य परिवारजनों द्वारा तहसीलदार साहब के साथ गाली

गालीच करत हुए मारपीट करने का प्रयास किया गया, जिसके सम्बन्ध में मेरे द्वारा उन्हें समझाया गया परन्तु वो नहीं माने और मेरे साथ भी मारपीट करने लगे। तहसीलदार साहब के कार्यालय में सुरक्षित अभिलेखों को फाड़ने का प्रयास किया गया तथा तहसील परिसर में रखे गमले व अन्य शासकीय सम्पत्ति को भी तोड़ा गया तथा अपने उपर पेट्रोल डालकर आग लगाने / आत्महत्या करने का प्रयास किया गया। अतः उक्त प्रकरण के सम्बन्ध में प्रतिवादी आदिल अब्बास पुत्र जफर हसन एवं उसके परिवार के अन्य सदस्य अली अब्बास, गुलरेज हैदर पुत्रगण जफर हसन व श्रीमति तीसीफ फात्मा पत्नी गुलरेज हैदर व श्रीमति रबाब जाहरा पत्नी आदिल

अब्बास, कु. जेहरा पुत्री जफर हसन निवासीगण मौ. सरायमीर नगीना परगना व तहसील नगीना व अन्य अज्ञात के विरुद्ध सरकारी कार्य में बाधा पहुंचाने एवं सरकारी अधिकारी/कर्मचारी से मारपीट करने एवं कार्यालय में तोड़फोड़ करने व अभिलेख में क्षति पहुंचाये गयी के सम्बन्ध में सुसंगत धाराओं में अभियोग पंजीकृत करने का कष्ट करें।

प्राथ्मी मोहनलाल द्वारा दी गई तहरीर के आधार पर थाना नगीना पुलिस द्वारा मामले में बीएनएस की धाराओं 121, 132, 324(2), 352, 191(2), 2, 3 के अंतर्गत मुकदमा दर्ज कर अग्रिम कार्यवाही शुरू कर दी गई है।

नजीबाबाद ब्लॉक के 26 विद्यालय किए जाएंगे शिफ्ट

C
M
Y
K

शाह टाइम्स संवाददाता नजीबाबाद। बेसिक शिक्षा विभाग ने कम छात्र संख्या वाले विद्यालयों को शिफ्ट करने की तैयारी कर ली है। बेसिक शिक्षा विभाग ने ब्लॉक के ऐसे 26 विद्यालयों की सूची तैयार की है, जिन्हें शिफ्ट किया जाएगा।

प्राप्त समाचार के अनुसार मुख्तारपुर, पसरथपुर, मेदूवाला, ताहरपुर, सौफतपुर, महावतपुर दलपत, ज्वालापुर, मिर्जापुर सहित 26 गांवों के विद्यालयों को दूसरे विद्यालयों में शिफ्ट किया जाएगा। इन विद्यालयों में कम नामांकन वाले विद्यालय शामिल हैं। विद्यालय प्रबंध समिति और ग्राम प्रधानों ने विद्यालय अन्य विद्यालयों में शिफ्ट होने पर आपत्ति जताई है। उनका तर्क है कि विद्यालयों को ग्राम से दूर करने पर बच्चों की शिक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। प्रबंध समिति ने विद्यालय शिफ्ट नहीं किए जाने का प्रस्ताव संबंधित अधिकारियों को भेजा है।

तैयार की गई सूची

दूसरी तरफ उ.प्र. प्राथमिक शिक्षक संघ के प्रांतीय मीडिया प्रभारी मौबीन हसन ने बताया कि महानिदेशक स्कूल शिक्षा के प्रबंध समिति और ग्राम प्रधानों के प्रस्ताव के बिना किसी भी स्कूल को शिफ्ट नहीं किए जाने के निर्देश दिए हैं। मौबीन हसन, शिक्षक नेता हेमंद राणा, गुलजावर अहमद, आमिद अली, अनुराग पांडे, संजीव कुमार, राजू सिंह, रामनाथ सिंह, मोहम्मद साजिद, नरेश कुमार कहना है कि बिना सहमति के विद्यालयों को शिफ्ट किया गया, तो शिक्षक संघ अभिभावकों और ग्राम प्रधानों के साथ आंदोलन करेगा। उन्होंने कहा कि यह ग्रामीण क्षेत्र के गरीब विद्यार्थियों व अभिभावकों पर अत्याचार है।

बाजारों में आम के भाव जमीन पर

भीषण गर्मी की वजह से ग्राहकों का टोटा

शाह टाइम्स ब्यूरो बिजनौर। जनपद के बाजारों में आम के भाव जमीन पर आ गए हैं। 20 से 30 रुपए किलो के भाव अच्छा आम फुटकर में बिक रहा है।

प्राप्त समाचार के अनुसार इस बार जनपद में आम की बमर पैदावार हुई। जिसको वजह से आम के भाव काफी गिर गए हैं। वैसे तो जनपद से हजारों कुंटल आम प्रतिदिन बाहर भेजा जा रहा है। लेकिन इसके बावजूद आम की निकासी पूरी तरह से नहीं हो पा रही है। जनपद के बाजारों में आम की भरमार है। जनपद में अच्छा दशहरी आम बीस से तीस रुपए किलो तक बिक रहा है। जबकि दूसरी प्रजाति के आम इससे भी कम भाव में बिक



रहे हैं। जब आम का सीजन शुरू हुआ था, तो उस समय आम के भाव ठीक ठाक थे। शुरूआत में मलिहाबाद से काफी आम जनपद के बाजारों में आया। लेकिन अब

जनपद में मौजूद आम के बागों में फसल तैयार हो गई है। गर्मी की वजह से आम जल्दी पक रहा है। जिस तेजी के साथ बाजार में आम आ रहा है, उसे देखते हुए लग रहा है

कि 10 से 15 जुलाई तक चौसा आम को छोड़कर बाकी आम बागों से खतम हो जाएगा। इस बार गरीबों को भी खाने के लिए भरपूर आम मिल रहे हैं।

खारी में नशेड़ी ने लगाई फांसी

कर्ज के बोझ तले दबा

शाह टाइम्स ब्यूरो
बिजनौर। खारी में कर्ज के बोझ तले दबे नशेड़ी ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। समाचार लिखे जाने तक हल्द्वार पुलिस मौके पर नहीं पहुंची थी और लाश घर में ही रखी हुई थी।

प्राप्त समाचार के अनुसार खारी के पूर्व प्रधान स्व. अब्दुल गफ्फर का पुत्र अब्दुल गफफार उर्फ भूरा (48 वर्ष) नशेड़ी था। उसकी चार लड़कियां हैं। लड़का पैदा न होने पर उसने सूत से एक लड़का गोद लिया था। जो लगभग पांच वर्ष का है। अब्दुल गफफार नशे का आदि था। वह कोई काम नहीं करता था। जिसकी वजह से परिवार आर्थिक तंगी का शिकार है। उसने कई लोगों



से कर्जा भी ले रखा था। वह दुकानदारों का कर्जा भी नहीं दे पा रहा था। आए दिन उसके घर पर रकम मांगने वाले खड़े रहते थे। जिससे

परेशान होकर आज उसने घर के अंदर पंखे में फांसी का फंदा लगाया और उसमें लटक गया। जिससे उसकी मौत हो गई। उसकी मौत से

परिवार में कोहराम मच गया। समाच. लिखे जाने तक उसकी लाश घर में ही मौजूद थी। पुलिस मौके पर नहीं पहुंची थी।

वन महोत्सव के अंतर्गत शिशुओं को बाटेगें पौधे

वन विभाग की नई पहल

शाह टाइम्स ब्यूरो
बिजनौर। हरे-भरे फलदार पेड़ों को कटवाने के लिए बदन्याम वन विभाग के द्वारा नई पहल करते हुए वन महोत्सव के अंतर्गत एक से सात जुलाई तक पैदा होने वाले शिशुओं को पौधे बांटे जाएंगे। अभिभावकों से कहा जाएगा कि वह शिशुओं की तरह इन पौधों का देखभाल करें।

गौरतलब है कि वन विभाग एवं उद्यान विभाग के अधिकारियों पर जब गर्म कर हर-भरे फलदार पेड़ों को कटवाने के आरोप लगते रहते हैं। मण्डावर एवं नहटौर क्षेत्र में दो दर्जनों आम के बाग कटवा दिए गए हैं। जिनमें अब कॉलोनिआ तैयार की जा रही है। साथ ही हाइवे पर पुराने हजारों पेड़ों को काटा जा रहा है। वर्तमान में चल रही विकास की आंधी में पर्यावरण को बचाना कड़ी चुनौती है। पर्यावरण को बचाने के लिए लोगों का जागरूक होना बेहद जरूरी है। पौधा लगाया ही नहीं, उसे बच्चे की तरह पालने की जरूरत है। अगर अधिक से अधिक पौधारोपण

किया गया, तो पर्यावरण को बचाया जा सकता है। ऐसे में वन विभाग ने एक नई पहल शुरू की है। जिले में एक जुलाई से सात जुलाई वन महोत्सव की अवधि में जन्मे नवजात शिशुओं को वन विभाग के अफसर ग्रीन गोल्ड सर्टिफिकेट देंगे।

ऐसे शिशुओं के अभिभावकों को एक पौधा भेंट के रूप में देंगे और पौधे को लगाने के साथ उसका पालन पोषण करने के लिए जागरूक भी करेंगे। वन विभाग के अधिकारी स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों से समन्वय स्थापित करेंगे। सीएमओ की मदद से इस अवधि के दौरान जन्मे शिशुओं का ब्यौरा हासिल कर ग्रीन गोल्ड सर्टिफिकेट देंगे। अब देखना यह है कि यह अभियान कितना सफल होता है। वैसे तो सरकारी अभियान अक्सर फलाप ही होते जाते हैं।

आबकारी विभाग की बड़ी कार्रवाई

सेल्समैन समेत दो गिरफ्तार , बड़ी मात्रा में अवैध शराब बरामद

शाह टाइम्स ब्यूरो
बिजनौर। मुख्यालय के निकटवर्ती कस्बा झालू में आबकारी विभाग ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए दो सेल्समैन सहित बड़ी मात्रा में अवैध शराब जब्त की है। विभाग की टीम ने छापेमारी कर अवैध शराब से भरे ड्रम और अंग्रेजी शराब की पेटियों को कब्जे में ले लिया।

प्राप्त समाचार के अनुसार आबकारी विभाग की टीम ने काफी समय से झालू अंग्रेजी शराब की दुकान पर नकली शराब बेचने की गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी की, जिसमें दो सेल्समैन बवलू व उसके साथी को हिरासत में ले लिया है तथा अंग्रेजी शराब की दुकान को सील कर दिया है।

सेल्समैन की निशानदेही पर बड़ी मात्रा में अवैध शराब का पखीरा पकड़ कर जब्त किया गया है, जिसमें ड्रम और अंग्रेजी शराब की पेटियां



शामिल हैं। आबकारी विभाग को इस कार्रवाई से अवैध शराब के कारोबार पर नकेल कसने के प्रयासों को बल

बिना नम्बर प्लेट के वाहनों का संचालन

शाह टाइम्स संवाददाता
अफजलगढ़। थाना क्षेत्र में बिना नंबर प्लेट व शीशों पर चढ़ी ब्लैक फिल्म के वाहन पुलिस के लिए सिरदर्द बने हैं। उक्त वाहनों का अवैध कार्यों में इस्तेमाल किया जा रहा है।

स्थानीय लोगों के अनुसार क्षेत्र में भारी मात्रा में ऐसे वाहन घूम रहे हैं जिन पर नंबर प्लेट नहीं लगी होती है, जिनमें भारी मात्रा में मोटरसाइकिलें व ट्रैक्टर शामिल हैं जो बिना किसी पंजीकरण संख्या के खुलेआम घूम रहे हैं। यह वाहन अक्सर तेज गति से चलते हैं, जिससे पैदल चलने वाले राहगीरों के खतरा बना रहता है। नियमानुसार, प्रत्येक वाहन पर स्पष्ट रूप से नंबर प्लेट लगी होनी चाहिए ताकि किसी भी घटना की स्थिति में उसकी पहचान की जा सके।



शिकायतकर्ताओं का कहना है कि उक्त वाहन फरांटे भर्ते घूम रहे हैं, चौकींग के दौरान जब यह वाहन तीव्र गति से निकलते हैं तो पुलिस देखती रह जाती है। स्थानीय नागरिकों का कहना है कि बिना रजिस्ट्रेशन व शीशों पर ब्लैक फिल्म चढ़े वाहन

कार, ट्रैक्टर मोटरसाइकिल आदि यातायात नियमों का उल्लंघन करते हैं, बल्कि यह आपराधिक गति. विधियों व गैरकानूनी कार्यों में आसान रास्ता प्रदान करते हैं। ऐसे वाहनों का इस्तेमाल चोरी, लूटपाट या अवैध खनन, लकड़ी चोरी शराब व मादक

पदार्थों की तस्करी कार्यों में इस्तेमाल किए जाते हैं, क्योंकि उनकी पहचान करना मुश्किल होता है। पुलिस को ऐसे बिना रजिस्ट्रेशन के वाहनों को सीज कर वाहन स्वामियों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करने की आवश्यकता है।

खरीफ उत्पादकता गोष्ठी व त्वरित मक्का विकास कार्यक्रम अन्तर्गत जनपद स्तरीय मेले का आयोजन

शाह टाइम्स ब्यूरो
बिजनौर। जिलाधिकारी श्रीमती जसजीत कौर की अध्यक्षता में जनपद स्तरीय खरीफ उत्पादकता गोष्ठी 2025 एवं त्वरित मक्का विकास कार्यक्रम अन्तर्गत जनपद स्तरीय मेले का आयोजन कौनकरान वाटिका में किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि साकेन्द्र प्रताप सिंह अध्यक्ष जिला पंचायत बिजनौर, श्रीमती संगीता जैन अग्रवाल सदस्य राज्य महिला आयोग एवं संजीव मलिक जिला पंचायत सदस्य द्वारा प्रतिभाग किया गया।

कार्यक्रम में डॉ. घनश्याम वर्मा, उप कृषि निदेशक, जसवंत सिंह तेवतिया जिला कृषि अधिकारी, आरएस पिचयल जिला परियोजना समन्वयक डास्य, आरएन वर्मा, जिला उद्यान अधिकारी, डॉ. इलके अग्रवाल, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी, डॉ. केके सिंह, कृषि

वैज्ञानिक, डॉ. प्रतिभा गुप्ता कृषि वैज्ञानिक, डॉ. पिन्टू कुमार कृषि वैज्ञानिक केवीके नगीना एवं लगभग 600 कृषकों से अधिक द्वारा प्रतिभाग किया गया। गोष्ठी का संचालन योगेन्द्रपाल सिंह सेवानिवृत्त विषय वस्तु विशेषज्ञ द्वारा किया गया। जिला पंचायत अध्यक्ष साकेन्द्र प्रताप सिंह एवं जिलाधिकारी श्रीमती जसजीत कौर द्वारा किसान मेला व गोष्ठी का फीता काटकर एवं दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारम्भ किया गया। मुख्य अतिथि द्वारा कृषि से सम्बद्ध विभागों तथा निजी उर्वरक व कीटनाशक विक्रेताओं द्वारा लगाई गई स्टालों का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के समय कृषि विभाग द्वारा लगाए गए स्टाल पर देय अनुदान के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की गयी। इस सम्बन्ध में जसवंत सिंह तेवतिया जिला कृषि अधिकारी द्वारा कृषि विभाग में

संचालित योजनाओं में देय अनुदान के विषय में विस्तृत रूप से अवगत कराया गया। मुख्य अतिथि साकेन्द्र प्रताप सिंह द्वारा अपने सम्बोधन में किसान भाईयों से सहफसली खेती करने, फसल चक्र अपनाने एवं फसलों की समय से बुआई करने पर जोर दिया गया। साथ ही किसान भाईयों को अपनी-अपनी जोत के अनुसार फसलों का चयन करने पर भी बल दिया। गोष्ठी में उपस्थित किसान भाईयों से अनुरोध किया कि किसान भाई अपनी मिट्टी की जांच कराने के उपरान्त ही कृषि विभाग के तकनीकी कर्मचारियों/ कृषि वैज्ञानिकों के परामर्श के अनुसार ही कीटनाशी दवाईयों एवं उर्वरकों का प्रयोग करें। साथ ही जैविक खेती पर जोर देते हुए गोष्ठी में उपस्थित किसानों से अपेक्षा की गयी कि किसान अधिक से अधिक जैविक खेती कर, अपनी आय

में उत्तरोत्तर वृद्धि कर सकते हैं। श्रीमती जसजीत कौर द्वारा गोष्ठी में उपस्थित किसान भाईयों से देव विधि से गन्ना बोने एवं गन्ने के साथ सहफसली खेती के रूप में दलहन एवं तिलहन की खेती करने का अनुरोध किया गया, जिससे किसान कम लागत में अधिक आय प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही कृषि विभाग एवं कृषि से सम्बद्ध अन्य विभागों को निर्देश दिये गये कि किसान गोष्ठियों में जनपद के जो कृषकों को कृषि की नवीनतम जानकारी यथा दूरान फूट, बागवानी, लगरूम की खेती, खरीफ फसलों में लगने वाले कीट एवं रोग से बचाव आदि के विषय में विस्तृत रूप से जानकारी दी गयी तथा कृषकों का आश्वस्त किया गया कि किसी भी जानकारी के लिए आप हमसे सीधे सम्पर्क कर समस्या का समाधान पा सकते हैं। कृषि वैज्ञानिकों द्वारा कृषि

सिंह, जीत सिंह, रोहित कुमार, राजपाल सिंह, मनोज कुमार, हरपाल सिंह, वमीस, कामेन्द्र, विक्रम सिंह, टीकम सिंह, भोलू एवं कलवा सिंह को निःशुल्क बाजरा बीज मिनीफिट तथा मौ. पुरेदेवल विकास खण्ड के छह कृषकों को मृगफल, दो कृषकों को मृग के मिनीकिटों का मुख्य अतिथि एवं जिलाधिकारी द्वारा वितरित किया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा गोष्ठी में उपस्थित कृषकों को कृषि की नवीनतम जानकारी यथा दूरान फूट, बागवानी, मगरूम की खेती, खरीफ फसलों में लगने वाले कीट एवं रोग से बचाव आदि के विषय में विस्तृत रूप से जानकारी दी गयी तथा कृषकों का आश्वस्त किया गया कि किसी भी जानकारी के लिए आप हमसे सीधे सम्पर्क कर समस्या का समाधान पा सकते हैं। कृषि वैज्ञानिकों द्वारा कृषि

संवाद के माध्यम से किसान मेले/गोष्ठी में उठाई गयी। समस्याओं का निराकरण मौके पर ही किया गया। मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा पशुओं में फैल रही बीमारी के रोकथाम एवं उपचार के विषय में कृषकों को विस्तृत रूप से जानकारी दी गयी। साथ ही पशुपालन विभाग में चल रही योजनाओं की भी विस्तृत जानकारी उपलब्ध करायी गयी। जिला उद्यान अधिकारी द्वारा कृषि मेले/गोष्ठी में आये कृषकों को उद्यान विभाग में चल रही योजनाओं की जानकारी उपलब्ध करायी तथा देय अनुदान के विषय में भी जानकारी दी।

न्यायालय सिविल जज
जु.डि. नगीना
वाद सं. 111/ 2025
रामचन्द्र सिंह उम्र करीब 54 वर्ष पुत्र जिराज सिंह निवासी ग्राम मुर्तजापुर (पुनरपुर) परगना बदापुर, तहसील नगीना, जिला बिजनौर
--वादी

बनाम
रामकिशोर उम्र करीब 58 वर्ष पुत्र विशम्बर सिंह निवासी ग्राम मुर्तजापुर (पुनरपुर) परगना बदापुर, तहसील नगीना, जिला बिजनौर
--प्रतिवादी

प्रार्थना पत्र आदेश 1 नियम 8 सी.पी.सी. के अन्तर्गत
चूँकि उपरी नामांकित वादी ने इस न्यायालय में एक वाद आदेश 1 नियम 8 सी.पी.सी. के अन्तर्गत आराजी खसरा नं. 106 रकबा 0.082 है. स्थित मोजा मुर्तजापुर, परगना बदापुर, तहसील नगीना, जिला बिजनौर की बाबत हुकूम इम्तनाई का दापर किया है जो सार्वजनिक सम्पत्ति बंजर भूमि की आराजी है तथा कागजात माल सरकारी में बंजर भूमि दर्ज है तथा वाद व अन्य ग्रामवासियों का हित निहित है, जिसमें सभी ग्रामवासियों को फरीक मुकदमा बनाया जाना सम्भव नहीं है उपरोक्त वाद में जो भी ग्राम वासी फरीक मुकदमा बना चाहता है वह माननीय न्यायालय में दिनांक 01.07.2025 तक उपस्थित होकर बकालतन व अदालतन अपना प्रार्थना पत्र गुजार सकता है।

अतएव इस इस्तेहार के माध्यम से सूचित किया जाता है कि जिस किसी व्यक्ति को वाद उपरोक्त में पक्षकार बना हो वह दिनांक तक प्रातः 10 बजे तक अदालत हाज़िर होकर अदालतन या क्वालतनामा पेश करे, नियत दिनांक के उपरान्त कोई उजर ना सुना जायेगा, और हुकूम मुनाविब सादिर होगा।

नियत दिनांक: 01.07. 2025

प्रबंधक
सिविल जज (जु.डि.)
नगीना (बिजनौर)

एक नजर

कार की टक्कर से युवक घायल
नांगल सोती। पैदल अपने घर जा रहे ग्राम हरचंदपुर निवासी भोले (32 वर्ष) को पीछे से कार ने टक्कर मार दी, जिससे वह घायल हो गया। परिजन उसे उपचार के लिए बिजनौर ले गए। आज दोपहर भोले पैदल अपने घर जा रहा था। नांगल- चंदक मार्ग पर ग्राम हरचंदपुर में चंदक की ओर से आ रही कार ने भोले को पीछे से टक्कर मार दी। चालक कार सहित मौके से फरार हो गया।

फैसले के दबाव का मामला गर्माया
स्याऊ। मौहल्ला कटारमल में एक युवती के अपहरण का मामला सामने आया है। पीड़ित पिता शाहनवाज ने पुलिस में एफआईआर दर्ज कराई है। बताया कि 24 जून को शाम साढ़े पांच बजे उसकी 21 वर्षीय बेटी समायरा को सोनू उर्फ जीशान और उसके परिवार के लोग बहला फुसलाकर अपने साथ ले गए। पीड़ित शाहनवाज का कहना है कि उसकी बेटी जीशान के कहने पर घर से जाते समय अलमारी में रखा पत्नी का सोने का सेट, सोने की चेन 2500 रुपए की साथ ले गई है। शाहनवाज ने आरोप लगाया है कि उन्होंने उसकी बेटी के अपहरण को एफआईआर दर्ज कराई थी। इस को लेकर उन पर फैसले का दबाव बनाया जा रहा है। उन्होंने आगे कहा कि लड़की बरामद कर ली है। उन्होंने उसके घर पर से लेकर गई जेवर और पैसे दिलाए जाएं। आरोपियों से उन्हें खतरा है। पीड़ित की जान माल की रक्षा की जाए। पीड़ित शाहनवाज का परिवार इस घटना से दशहत में है। साथ ही उसका मानना है कि उसकी बेटी अपनी मर्जी से नहीं गई है। बल्कि उसका अपहरण किया गया है। कस्बा इंचाई अजीत तोमर से बात करने पर पता चला कि लड़की के कोट में बयान करने पर लड़की सोनू उर्फ जीशान के साथ चली गई है। जांच की जा रही है।

शुभम शर्मा निर्विरोध डीलर नियुक्त

अफजलगढ़। डीएम जसजीत कौर के निर्देश पर अफजलगढ़ ब्लॉक के ग्राम भन्जावाला में नए राशन डीलर के चयन के लिए चुनाव हुआ। जिसमें शुभम शर्मा को सभी ग्रामवासियों ने सर्व सम्पत्ति से राशन डीलर निर्विरोध चुना। वहीं साढ़े पांच माह पूर्व ग्राम भन्जावाला में राशन डीलर सोनू कुमार के निधन हो जाने के बाद से ही राशन डीलर को दुकान खाली पड़ी थी। बृहत्सत्तिवाक को अफजलगढ़ ब्लॉक के ग्राम भन्जावाला में सहकारी समिति प्रांगण में राशन डीलर के चुनाव को लेकर एक खुली बैठक का आयोजन किया गया। ग्राम पंचायत सचिव शर चोहान व आइएसबी एडीओ इकबाल अहमद सहित आपूर्ति विभाग के अधिकारियों की मौजूदगी में राशन डीलर के लिए चुनाव प्रक्रिया कराई गई। जिसमें मात्र दो उम्मीदवारों ने अपना नामांकन दाखिल किया। खुली बैठक में शुभम शर्मा की ओर ज्यादा भीड़ देख कपिल चोहान ने भी अपना समर्थन राशन डीलर शुभम शर्मा को दे दिया गया था। वहीं सर्व सम्पत्ति से अधिकारियों की मौजूदगी में शुभम शर्मा को नया राशन डीलर चुना गया। ग्राम प्रधान हसीना जाकिर हुसैन की अध्यक्षता में गांव के सहकारी समिति प्रांगण में खुली बैठक का आयोजन किया गया था। चुनाव संपन्न कराने के लिए ग्राम पंचायत अधिकारी शरद चौहान व एडीओ आईएसबी इकबाल अहमद आदि आयोजित बैठक में मौजूद थे।

नाम परिवर्तन सूचना
मेरा नाम MOHAMMAD NAUMAN था जिसे बदलकर अब MOHD NAUMAN कर लिया है। पासपोर्ट में मेरी उम्र 08-04-1991 थी। जो गलत है। मेरी जन्मतिथि 23-10-1993 है। जो मेरे शैक्षिक प्रमाण पत्र व आधार में है। MOHD NAUMAN पुत्र जाहिद हुसैन निवासी कारगी ग्रांट, देहरादून।



मोहर्रम पाक महीना, रोजा रखने से गुनाहों की होती है माफी : मुफ्ती रियाज कासमी

शाह टाइम्स संवाददाता
अफजलगढ़। मोहर्रम इस्लामी साल का पहला और फजिलतों से भरा महीना है। स्थानीय कब्रिस्तान वाली मस्जिद में जुमे की नमाज के बाद बयान करते हुए मुफ्ती रियाज कासमी ने कहा कि मोहर्रम सिर्फ तारीख का आगाज नहीं, बल्कि सब्र, इबादतों का पैगाम भी है।

उन्होंने कहा कि मोहर्रम की 10वाँ तारीख, यानी यौम-ए-अशरा का रोजा रखना बेहद सबाब का काम है। हदीस शरीफ में है कि पैगम्बर हज्रत मौहम्मद ने खुद अशरा का रोजा रखा और उम्मत को भी इसकी ताकदी की। यह रोजा पिछले साल के छोटे गुनाहों का कफफारा बनता है। मुफ्ती कासमी ने कहा कि इसी दिन हज्रत मूसा (अ.स.) और उनकी नीमत को फिरऔन के जुल्म से निजात मिली थी। जब रसूल-ए-अकरम ने यहूदियों को अशरा का रोजा रखते देखा, तो फरमाया कि हम उनसे अलग होंगे और नौ वीं व दस वीं या दस वीं व 11

वीं मोहर्रम के दो रोजे रखेंगे। उन्होंने जसजसमानों से अपील की कि इस पाक महीने को अदब, इबादत, रोजा, सदका, खैरात और सब्र के साथ गुजारे। उन्होंने कहा कि मोहर्रम का महीना अमन, भाईचारे और इस्लामी उस्लूकों को अपनाने का पैगाम देता है।

मुफ्ती रियाज कासमी ने नौजवानों को भी नसीहत दी कि अलसर की भी शिकायत हो रही है। जिस तेजी के साथ शूगर के मरीजों की संख्या बढ़ रही है, उसे देखते हुए लगता है कि आने वाले कुछ सालों में ही दस में से आठ नागरिक शूगर के मरीज निकलेंगे।

शूगर के मरीजों की बढ़ती संख्या को देखते हुए सरकार इसके इलाज के लिए गंभीरता के साथ रिसर्च नहीं करा रही है। नागरिकों का शूगर से पीड़ित होना देश के लिए भी खतरनाक है। अब तो बच्चों को भी शूगर की बीमारी हो रही है। उम्र का कोई मतलब नहीं रह गया है। शूगर की वजह से हाथ पैरों में दर्द के साथ ही पैरों के पंजों में कैंसर की भी शिकायतें सामने आ रही हैं। शूगर के मरीज के पैर में छोटो सी चोट लग जाने के बाद वह ठीक नहीं हो पाते

शूगर के मरीजों में बढ़ रही फुट अल्सर की शिकायत

इलाज के लिए खोजी गई नई तकनीक

शाह टाइम्स ब्यूरो
बिजनौर। देश व प्रदेश सहित जनपद में शूगर के मरीजों की संख्या काफी तेजी के साथ बढ़ रही है। गंभीर बात यह है कि शूगर के मरीजों को हार्ट अटैक, नजर् कमजोर होना व तेजी के साथ वजन घटते हुए गुर्दों की बीमारी के साथ ही अब फुट अल्सर की भी शिकायत हो रही है। जिस तेजी के साथ शूगर के मरीजों की संख्या बढ़ रही है, उसे देखते हुए लगता है कि आने वाले कुछ सालों में ही दस में से आठ नागरिक शूगर के मरीज निकलेंगे।



शूगर के मरीजों की बढ़ती संख्या को देखते हुए सरकार इसके इलाज के लिए गंभीरता के साथ रिसर्च नहीं करा रही है। नागरिकों का शूगर से पीड़ित होना देश के लिए भी खतरनाक है। अब तो बच्चों को भी शूगर की बीमारी हो रही है। उम्र का कोई मतलब नहीं रह गया है। शूगर की वजह से हाथ पैरों में दर्द के साथ ही पैरों के पंजों में कैंसर की भी शिकायतें सामने आ रही हैं। शूगर के मरीज के पैर में छोटो सी चोट लग जाने के बाद वह ठीक नहीं हो पाते

है। कई बार यह कैंसर बन जाती है। साथ ही बिना चोट लगे भी पैरों में हटाने, ड्रैसिंग लगाने, रक्त ग्लूकोज और अन्य स्वास्थ्य संबंधी जांच की जा सकती है। इस तकनीक का इस्तेमाल पहले चूहों पर किया गया। पहले चूहों को शूगर का मरीज बनाया गया। उनके पैर में घाव किया गया। फिर इलाज शुरू किया गया है। दो साल की मेहतत के बाद परीक्षण सफल रहा।

इसके बाद जेएन मेडिकल कॉलेज में राजीव गांधी डायबिटिक सेंटर में आने वाले 18 शूगर के मरीजों को लिया गया है, जिन पर क्लीनिकल परीक्षण शुरू कर दिया गया है। जल्द ही रिपोर्ट आने की उम्मीद जलाई जा रही है।

धामपुर में जर्जर मकान का मलबा गिरा

बड़ा हादसा टला, मोहल्ले में दहशत, कार्रवाई की मांग

शाह टाइम्स संवाददाता धामपुर। बन्दूकचिन्तन-मछली बाजार रोड पर एक जर्जर मकान का हिस्सा अचानक भरभराकर गिर पड़ा। गनीमत यह रही कि जिस समय मलबा गिरा, उस दौरान कोई राहगीर या बच्चा पास में मौजूद नहीं था, वरना एक बड़ा हादसा हो सकता था। घटना के बाद मोहल्ले में अफरा-तफरी मच गई और लोग दहशत में आ गए। स्थानीय लोगों का कहना है कि यह मकान लंबे समय से जर्जर अवस्था में था और कई बार इसकी शिकायत दी जा चुकी है, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं की गई। बीते कुछ दिनों से लगातार हो रही बारिश के चलते मकान की हालत और भी खराब हो गई थी, जिससे उसका एक हिस्सा ढह गया।

स्थानीय निवासियों का कहना है कि यह पूरी गली संकरी है और रोजाना सैकड़ों लोग महिलाएँ व बच्चे इस मार्ग से गुजरते हैं। यदि हादसे के वक्त कोई राहगीर गुजर रहा होता, तो जानमाल की भारी क्षति हो सकती थी।



अन्य जर्जर मकानों पर प्रशासन से सख्त कार्रवाई की मांग

मोहल्लेवासियों ने नगर पालिका और संबंधित प्रशासनिक अधिकारियों से अपील की है कि इस तरह के खतरनाक जर्जर भवनों को चिन्हित कर तुरंत गिराने की कार्रवाई की जाए, जिससे भविष्य में किसी बड़ी दुर्घटना को रोका जा सके। स्थानीय निवासी हाजी हसन, सलीम, अमजद, नासिरा बेगम, रफीक, साहिल ने प्रशासन से मांग की कि इस घटना को चेतावनी के रूप में लिया जाए और ऐसे अन्य जर्जर मकानों पर सख्त कार्रवाई की जाए।

चाकू से हमला करने का आरोपी अमित गिरफ्तार



शाह टाइम्स संवाददाता धामपुर। पुलिस ने धारदार हथियार से हमला करने के आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेजा है। आरोपी ने एक ठेले वाले पर चाकू से जानलेवा हमला कर गंभीर रूप से घायल कर दिया था। पुलिस ने आरोपी के पास से वारदात में प्रयुक्त चाकू भी बरामद कर लिया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार राधा देवी पत्नी गुलाब सिंह निवासी अल्लेपुर नौरंगाबाद ने थाना धामपुर पर तहरीर दी थी कि अमित कुमार पुत्र नरेश कुमार निवासी नौरंगाबाद ने उसके पति गुलाब सिंह के साथ पहले गाली-गलौच की और फिर जान से

मारने की नीयत से तेज धारदार चाकू से हमला कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। आरोप है कि अमित कुमार पूर्व में भी कई बार उसके पति और बच्चों को जान से मारने की धमकी दे चुका था। तहरीर के आधार पर धारा 109(1)/118(1)/352/351 (3) बीएनएस के तहत मुकदमा दर्ज किया। पुलिस ने तत्पश्चात दिखाते हुए अभियुक्त अमित कुमार को दबांच लिया और उसके पास से घटना में प्रयुक्त चाकू भी बरामद कर लिया गया। गिरफ्तार करने वाली टीम में उप निरीक्षक प्रदीप कुमार, मुख्य आरक्षी प्रदीप कुमार, आरक्षी विशाल कुमार, आरक्षी अमित कुमार शामिल रहे।

सेंदवार में ड्रोन स्प्रे कार्य का निरीक्षण

ड्रोन स्प्रे कृषकों के फसलों पर छिड़काव के लिए बेहतर विकल्प : पाठक

शाह टाइम्स संवाददाता चांदपुर। किसानों के लिए गन्ना एवं अन्य फसलों पर कीटनाशक छिड़काव के लिए अब ड्रोन स्प्रे सबसे बेहतर और सुरक्षित विकल्प के रूप में देखा जा रहा है। विभागीय दिशा निर्देशों के क्रम में ड्रोन दीदी ग्राम सेंदवार में ड्रोन स्प्रे कार्य का निरीक्षण ज्येष्ठ गन्ना विकास निरीक्षक द्वारा किया गया।

निरीक्षण के समय पीबीएस फूड कंपनी शुगर लिमिटेड के चीफ जनरल मैनेजर, गन्ना प्रबंधक, डेवलपमेंट हेड सहित स्थानीय कृषक भी मौजूद रहे। ड्रोन संचालिका अल्पना रानी द्वारा अवगत कराया गया कि ड्रोन की सुविधा सभी कृषकों के लिये उपलब्ध है। ड्रोन संचालन का किराया रुपये 400/एकड़ है। इससे पहले अधिकारियों ने ग्राम सेंदवार में ड्रोन संचालन में थिऑफिनेट मेथल, नैनो यूरिया, साइपर मेथीलाइन का प्रयोग करते हुए देखा। ड्रोन दीदी के नाव्या कि इसमें महत्वपूर्ण बात ये है कि फसल की ऊंचाई को देखते हुए ड्रोन को उसी ऊंचाई के हिसाब से स्प्रे



कर उसके द्वारा स्प्रे कराया जा सकता है। ड्रोन दीदी ने कहा कि वर्तमान में फसल की हाइट को देखते हुए ड्रोन एक अच्छा विकल्प है। अब तक ड्रोन द्वारा ग्राम सेंदवार, शोखपुरा, अकबरपुर सिमली में लगभग 20 एकड़ पर ड्रोन द्वारा स्प्रे किया जा चुका है। ड्रोन दीदी अल्पना रानी ने बताया कि इसमें महत्वपूर्ण बात ये है कि फसल की ऊंचाई को देखते हुए ड्रोन को उसी ऊंचाई के हिसाब से स्प्रे

30 जून तक करें आवेदन

बिजनौर। प्रभावी सचिव/अपर जनपद न्यायाधीश, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, बिजनौर ने मा.उ.प्र. राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ के पत्र के क्रम में बताया कि ऐसे भूतपूर्व सैनिक (Ex-Servicemen), जिनकी सामुदायिक सेवा में रुचि, कानूनी और नागरिक मुद्दों के प्रति बुनियादी समझ या रुझान है एवं विधिक सेवा प्राधिकरण/समिति के तहत कानूनी जागरूकता, सामुदायिक पहुँच व कानूनी सेवाओं में सहायता के लिए पराविधिक स्वयं सेवक के रूप में कार्य करने के इच्छुक हैं तथा ऐसे अभ्यासगत अधिवक्ता, जो भूतपूर्व सैनिक (Ex-Servicemen) हैं, जिन्होंने Judge advocate General (JAG) के रूप में कार्य किया है व विधिक सेवा प्राधिकरण/समिति के तहत कानूनी सेवाएँ एवं सहायता प्रदान करने के लिए पैनल अधिवक्ता के रूप में कार्य करने के इच्छुक हैं, वे अपना नामांकन कार्यालय, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण में किसी भी कार्य दिवस में 30 जून तक दर्ज करा सकते हैं। उन्होंने बताया कि उक्त पत्रों के लिए आवश्यक योग्यता, नियम-वृत्त व नामांकन का प्रारूप कार्यालय जिला विधिक सेवा प्राधिकरण से प्राप्त किया जा सकता है।

मंडावर में सड़क दुर्घटनाओं पर अंकुश के लिए पुलिस की पहल

दुर्घटना स्थलों पर लगाए रिफ्लेक्टर

शाह टाइम्स संवाददाता मंडावर। क्षेत्र में सड़कों पर लगातार हो रही दुर्घटनाओं को देखते हुए पुलिस ने ठोस कदम उठाए हैं। यातायात नोडल अधिकारी उप निरीक्षक कुलवीर सिंह के नेतृत्व में दुर्घटना संभावित स्थानों को चिह्नित कर सड़क के दोनों ओर रिफ्लेक्टर लगाने का कार्य शुरू किया गया है। इस पहल का उद्देश्य सड़क सुरक्षा को बढ़ावा देना और दुर्घटनाओं की संख्या को कम करना है।

उप निरीक्षक कुलवीर सिंह ने बताया कि मंडावर की सड़कों पर अक्सर तेज रफ्तार के कारण दुर्घटनाएँ होती हैं। इन क्षेत्रों की पहचान कर रिफ्लेक्टर लगाए गए हैं, ताकि रात के समय और खराब मौसम में वाहन चालकों को सड़क की स्थिति का स्पष्ट अंदाजा हो सके। रिफ्लेक्टर की चमक वाहन चालकों को सतर्क करने में मदद करेगी, जिससे दुर्घटनाओं की संभावना कम



होगी। स्थानीय निवासियों ने इस पहल की सराहना की है। मंडावर के निवासी रिफ्लेक्टर लगाने से रात में सड़क पर चलना अब सुरक्षित महसूस होता है। पहले कई बार अंधेरे के कारण रास्ता दिखाई नहीं देता था, लेकिन अब यह कदम दुर्घटनाओं को रोकने में कारगर साबित होगा। पुलिस ने यह भी अपील की है कि वाहन चालक यातायात नियमों का पालन करें, तेज रफ्तार से बचें और हेलमेट व सीट बेल्ट का उपयोग करें। उप

निरीक्षक कुलवीर सिंह ने बताया कि सड़क सुरक्षा के लिए जागरूकता अभियान भी चलाए जाएंगे, ताकि लोग यातायात नियमों के प्रति अधिक जागरूक हों। यह पहल मंडावर में सड़क सुरक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जिससे न केवल दुर्घटनाओं में कमी आएगी, बल्कि स्थानीय लोगों का विश्वास भी बढ़ेगा। यातायात पुलिस का यह प्रयास अन्य क्षेत्रों के लिए भी एक प्रेरणा बन सकता है।

बीकॉम (कम्प्यूटर) तृतीय वर्ष का परीक्षाफल रहा शत प्रतिशत



शाह टाइम्स ब्यूरो बिजनौर। कृष्णा कॉलेज के बी.कॉम. (कम्प्यूटर) तृतीय वर्ष का परीक्षाफल शत प्रतिशत रहा। वाणिज्य विभाग के विभागाध्यक्ष मंदीप चिकारा ने बताया कि बी.कॉम. (कम्प्यूटर) तृतीय वर्ष में दिव्या राजपूत ने प्रथम, अंशिका बंसल ने द्वितीय तथा दिपांशी सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। महाविद्यालय परिवार इन सभी विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

प्राचार्या डा. सीमा शर्मा ने सभी उत्तीर्ण छात्र/छात्राओं को बधाई देते हुए कहा कि कृष्णा कॉलेज, बिजनौर का परिणाम सदैव ही अति उत्तम रहा है। हमारा निरन्तर यही प्रयास रहता है कि छात्र/छात्राओं को कॉलेज में आधुनिक व शैक्षिक वातावरण मिले

दिव्या प्रथम व अंशिका रही दूसरे स्थान पर

जिससे कि वह प्रोफेशनल एजुकेशन को बेहतर रूप से समझ सकें व अपने जीवन में उपयोग कर लाभांवित हो सकें। संस्थापक निदेशक राजीव कुमार, प्रबंधक मनोज कुमार, निदेशक पवन कुमार, प्राचार्या डा. सीमा शर्मा, डा. एससी जैन, अधिकृत प्रवक्ता डा. दुष्यंत कुमार जैन, मेहर चन्म, नीरज अप्पवाल, रोहित राजपूत, सुनील राठी एवं नूतन चौधरी ने विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना की।

ढक्का कर्मचंद में ग्राम चौपाल

एसडीएम व सीओ ने सुनी समस्याएं

शाह टाइम्स संवाददाता धामपुर। विकास खंड अल्लेपुर अंतर्गत ग्राम पंचायत ढक्का कर्मचंद में ग्राम चौपाल का आयोजन किया गया। इस चौपाल में उपजिलाधिकारी धामपुर रीतु रानी व पुलिस क्षेत्राधिकारी अभय कुमार पांडे की मौजूदगी में ग्रामीणों की समस्याएँ सुनी गईं। अधिकारियों ने कुछ शिकायतों का मौके पर ही निस्तारण किया, जबकि शेष समस्याओं को संबंधित विभागों को निर्देशित किया गया कि वे जल्द समाधान सुनिश्चित करें।

इस अवसर पर एडीओ पंचायत अनिल कुमार ने केंद्र व राज्य सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों के लिए संचालित विभिन्न योजनाओं जैसे मनरेगा, प्रधानमंत्री आवास योजना, स्वच्छ



भारत मिशन आदि की जानकारी दी। खंड शिक्षा अधिकारी मन्नालाल विवेदी ने सरकारी स्कूलों में बच्चों के लिए चलाई जा रही योजनाओं जैसे मिड डे मील, छात्रवृत्ति व युनिफॉर्म वितरण आदि पर प्रकाश डाला। स्वास्थ्य विभाग से डॉ. मनीष

चौहान ने संचारी रोग नियंत्रण व मौसमी बीमारियों से बचाव को लेकर जानकारी दी। इसके अलावा, विद्युत, खाद्य एवं रसद विभाग के अधिकारियों ने भी उपस्थित ग्रामीणों को विभागीय योजनाओं की जानकारी दी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता ग्राम प्रधान कमला देवी ने की। संचालन एडीओ पंचायत अनिल कुमार ने किया। इस दौरान ग्राम सचिव मोनाक्षी सिंह, मोनिका रानी, ग्राम पंचायत सहायक, लेखपाल, एनएएम सहित सैकड़ों ग्रामीण उपस्थित रहे।

अनुदान के लिए करें आवेदन

बिजनौर। सीडीओ ने बताया कि जनपद की इच्छुक स्वीच्छक संस्थाएँ वित्तिय वर्ष 2025-26 में भारत सरकार की सिपडा योजना के अन्तर्गत जिला दिव्यांगता पुनर्वास केंद्र के संचालन हेतु निर्गत गाईड लाइन (<https://depwd.gov.in>) जो प्रतिपूर्ति भुगतान पर आधारित है के अनुरूप केंद्रीय अनुदान हेतु वांछित अभिलेखों सहित सुसंगत प्रस्ताव तीन प्रतियों में कार्यालय जिला दिव्यांगजन सशर्कीकरण अधिकारी, बिजनौर को उपलब्ध करायें। उन्होंने बताया कि प्रस्ताव हेतु वांछित अभिलेखों में प्रस्ताव हेतु प्रारूप पर आवेदन पत्र, सोसाइटी रजिस्ट्रेशन अधिनियम के अन्तर्गत प्रमाण पत्र, दिव्यांगजन विभाग में पीडब्ल्यूडी में पंजीकरण प्रमाण पत्र, नियमावली, संस्था के कार्यरत कर्मचारियों के नाम की सूची पूर्ण विवरण सहित शैक्षिक योग्यता प्रमाण पत्र, वार्षिक प्रति रिपोर्ट, बैंक डिटेल आदि की प्रमाणित प्रतियाँ।

कीटनाशक उपलब्ध कराना सरकार की प्राथमिकता

शाह टाइम्स ब्यूरो बिजनौर। जिला कृषि रक्षा अधिकारी जसवीर सिंह तैवतिया ने बताया कि जनपद के कृषकों को सर्वोच्च गुणवत्ता के कुषि निवेश यथा खाद, बीज एवं कीटनाशी रसायन उपलब्ध कराया जाना सरकार की प्राथमिकता है। किसानों को गुणवत्ता युक्त रसायन उपलब्ध कराने के लिए समस्त कीटनाशी निजी विक्रेताओं को गुणवत्ता युक्त कीटनाशी रसायन विक्रय के सम्बन्ध में कीटनाशी अधिनियम 1968 एवं कीटनाशी नियमावली 1971 के नियम-15 तथा कीटनाशी (मूल्य, स्टॉक कृषकों एवं रिपोर्ट प्रेषण) आदेश 1986 की धारा-4 के अन्तर्गत कीटनाशी निजी विक्रेताओं द्वारा क्रेता को कैंश मैमो/क्रेडिट मैमो देने तथा तत्सम्बन्धी अधिलेखों को तैयार किए जाने सम्बन्धी प्राविधानों का प्रत्येक दशा में परिपालन सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने उक्त के क्रम में जनपद के समस्त कीटनाशी रसायन

लाइसेंसधारी थोक / फूटकर विक्रेताओं को निर्देशित किया है कि कीटनाशी विक्रय के समय अनिवार्य रूप से सभी क्रेताओं को कैंश मैमो/क्रेडिट मैमो जारी किए जाए, जिसमें कीटनाशी रसायन का नाम, बैच नम्बर, विनिर्माण तिथि, अवसान तिथि एवं विक्रय मूल्य स्पष्ट रूप से अंकित कर कृषकों को उपलब्ध कराया जाए। इसके साथ-दो यह भी निर्देशित किया जाता है कि कीटनाशी निरीक्षकों द्वारा जनपद के नियमित एवं सघन निरीक्षण के दौरान यदि कृषकों द्वारा यह विक्रायत प्राप्त होती है कि लाइसेंसधारी कीटनाशी विक्रेताओं द्वारा कृषकों को नियमानुसार कैंश मैमो / क्रेडिट मैमो प्राप्त किया जा रहा है, तो संबंधित लाइसेंसधारी कीटनाशी विक्रेता के विरुद्ध कीटनाशी अधिनियम-1968 एवं कीटनाशी नियम-1971 में निहित प्राविधानों के अन्तर्गत प्रतिवृत्त / दण्डात्मक कार्यवाही सहित तत्सम्बन्धी खरीदे गये सामान का बिल भी प्राप्त करें।

जानेगा। जनपद के समस्त कीटनाशी रसायन विक्रेता कीटनाशी व्यवसाय, वितरण एवं बिक्री संबंधी समस्त आवश्यक अभिलेख अनिवार्य रूप से तैयार करें, तथा नियमानुसार अधिकृत विनिर्माता/आपूर्तिकर्ता से ही कीटनाशी रसायन के बिल सहित प्राप्त कर वितरण, बिक्री, व्यवसाय, भण्डारण हेतु प्रदर्शित करें यदि कीटनाशी लाइसेंस में अधिकृत आपूर्तिकर्ता / विनिर्माता के अतिरिक्त अन्य आपूर्तिकर्ता / विनिर्माता कीटनाशी रसायन का अनाधिकृत रसायन पाया जायेगा, तो कीटनाशी अधिनियम-1968 एवं कीटनाशी नियम-1971 में निहित प्राविधानों के अन्तर्गत विधिक/दण्डात्मक कार्यवाही सुनिश्चित की जायेगी। जनपद के सभी किसान भाइयों से अनुरोध है कि वह नियमानुसार लाइसेंसधारी थोक / फूटकर विक्रेताओं से ही रसायन खरीदने का कष्ट करें तथा तत्संबन्धी खरीदे गये सामान का बिल भी प्राप्त करें।

संगठित रहकर संघर्ष कीजिए, सब मिलेगा : सुरेश त्रिपाठी

माध्यमिक शिक्षक संघ के ग्रीष्मकालीन चिंतन शिविर में 17 प्रस्ताव पारित

शाह टाइम्स ब्यूरो बिजनौर। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ की एक दिवसीय प्रांतीय ग्रीष्मकालीन चिंतन शिविर एवं शैक्षिक गोष्ठी प्रयागराज के केंपी कुशुनिटी हाल में संपन्न हुई। संगठन के जनपद बिजनौर के पदाधिकारियों ने भी गोष्ठी में प्रतिभाग किया। शिविर से वापस आए पदाधिकारियों ने प्रेस को जारी विज्ञापित के माध्यम से जानकारी दी कि शिविर में प्रदेश भर से हजारों शिक्षकों ने प्रतिभाग किया। जिलाध्यक्ष गय्यू आसिफ तथा जिला मंत्री विनोद कुमार ने बताया कि प्रदेश अध्यक्ष सुरेश कुमार त्रिपाठी की अध्यक्षता तथा महामंत्री डॉक्टर नरेंद्र कुमार वर्मा के संचालन में आयोजित गोष्ठी में उत्तरी प्रयागराज से विधायक इंजीनियर हर्षवर्धन वाजपेई मुख्य अतिथि तथा उत्तर प्रदेशीय प्रार्थमिक शिक्षक संघ के प्रांतीय अध्यक्ष डॉक्टर दिनेश शर्मा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। सम्मेलन में शिक्षकों की विभिन्न समस्याओं पर विस्तार से चर्चा के

उपरांत शासन को 17 प्रस्ताव प्रेषित किए गए। प्रस्ताव पत्र में सर्वप्रथम शिक्षकों की सेवा सुरक्षा से संबंधित धारा 12 धारा 18 तथा धारा 21 की बहाली की मांग को रखा गया है। पुरानी पेंशन बहाली को लेकर अनेक शिक्षकों ने कविता तथा भाषण के माध्यम से अपने विचार एवं भावनाएं प्रस्तुत की। पुरानी पेंशन बहाली की मांग को भी प्रस्ताव पत्र में प्रमुखता से सम्मिलित किया गया। शिक्षा अधिकारियों के कार्यालयों को भ्रष्टाचार मुक्त करने तथा कार्यालयों में सिटीजन चार्टर लागू करवाने की मांग को भी प्रस्ताव पत्र में रखा गया। दोष एवं भ्रष्टाचारपूर्ण स्थानांतरण नीति को सरल करने तथा दूरस्थ क्षेत्र में कार्यरत शिक्षक शिक्षिकाओं को प्राथमिकता देते हुए स्थानांतरण पद्धति को शीघ्र सरल बनाने की मांग का प्रस्ताव भी पारित किया गया। अल्प संख्यक संस्थाओं में लंबे समय से नियुक्ति न होने के कारण ऐसे संस्थानों के अस्तित्व पर आए हुए संकट को दूर करने के लिए शीघ्र नियुक्ति प्रक्रिया बहाल करने संबंधी



प्रस्ताव भी गोष्ठी में पारित किया गया। सेवानिवृत्ति पर मिलने वाली ग्रेच्युटी की राशि को 20 लाख से बढ़ाकर 25 लाख करने तथा 62 वर्ष की आयु में सेवानिवृत्त होने वाले शिक्षकों को भी ग्रेच्युटी देने की मांग सहित कुल 17 प्रस्ताव चिंतन शिविर में पारित किए गए। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित उत्तरी प्रयागराज के भारतीय जनता पार्टी के युवा विधायक इंजीनियर हर्षवर्धन वाजपेई ने अपने संबोधन में कहा कि सदन में प्रस्तुत

सभी प्रस्ताव शिक्षकों की मूल समस्याओं से संबंधित हैं और सरकार को इन सभी पर सहानुभूति पूर्वक विचार करना चाहिए। उन्होंने कहा कि मैं भी शिक्षक परिवार से आता हूँ और शिक्षकों की समस्याओं को भली भाँति जानता हूँ। विधायक के रूप में मैं पूरा प्रयास करूँगा कि शासन इन सभी बिंदुओं पर गंभीरता पूर्वक विचार करे और शिक्षकों की सभी उचित मांगों को पूरा किया जाए। विशिष्ट अतिथि डॉ. दिनेश शर्मा ने कहा कि वर्तमान समय शिक्षक

समाज के लिए संकट का समय है। समस्त शिक्षक वर्ग को एक साथ आकर अपनी समस्याओं के निस्तारण के लिए कड़ा और बड़ा संघर्ष करना होगा। उन्होंने कहा सदन में पारित सभी प्रस्तावों से वह पूर्णतः सहमत हैं और माध्यमिक शिक्षक संघ जो भी रणनीति बनाएगा वह उस संघर्ष में सुरेश त्रिपाठी और उनके संगठन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रहेंगे।

चिंतन शिविर में प्रदेश भर से हजारों की संख्या में आए शिक्षकों को शिवांशति से हार्दिक प्रवेश अध्यक्ष सुरेश कुमार त्रिपाठी ने कहा कि शिक्षकों की इतनी बड़ी उपस्थिति और संगठन के प्रति उनकी निष्ठा इस बात का परिचायक है कि आज के सदन में पारित किए गए सभी प्रस्ताव शासन को गंभीरता पूर्वक स्वीकार करने होंगे। उन्होंने कहा कि आप सबकी एकजुटता के सामने सरकार को झुकना होगा, शिक्षकों की सेवा सुरक्षा संबंधी सभी नियम बहल किए जाएंगे। त्रिपाठी ने कहा कि पुरानी पेंशन को लड़ाई को जीतने के लिए

परस्पर मतभेद भुलाकर समस्त शिक्षक वर्ग को एकजुट होना पड़ेगा। सड़क से सदन तक हमें अपनी लड़ाई लड़नी होगी, तब पुरानी पेंशन मिलेगी। दर लेगी किंतु संघर्ष के बल पर आपको पुरानी पेंशन भी मिलेगी। प्रांतीय अध्यक्ष ने सदस्यता पर बल देते हुए कहा कि जुलाई के प्रथम सप्ताह तक प्रत्येक इकाई के प्रत्येक शिक्षक सभी की सदस्यता उनके मूल फॉर्म के साथ केंद्रीय कार्यालय को प्रत्येक दशा में उपलब्ध करानी चाहिए। बिजनौर से सम्मेलन में जिला अध्यक्ष गय्यू आसिफ के अतिरिक्त जिला संरक्षक विनेश कुमार त्यागी सह संरक्षक रविंद्र कुमार शर्मा जिला मंत्री विनोद कुमार ने प्रतिभाग किया। सम्मेलन को एमएलसी एवं नेता शिक्षक विधायक दल ध्रुव कुमार त्रिपाठी, पूर्व विधायक जगवीर किशोर जैन, डॉ. प्रमोद मिश्रा, पूर्व महामंत्री इंद्रासन सिंह, महेशचंद्र शर्मा, पूर्व महामंत्री ठाकुर प्रसाद आदि ने संबोधित किया।

राहुल कश्यप का जोरदार स्वागत



शाह टाइम्स संवाददाता बदायुँ। हरियाणा के गुरुग्राम में संवैधानिक लोकतंत्र और राष्ट्र निर्माण में शहरी निकायों की मजबूत बनाने के लिए आयोजित कार्यक्रम की सूची में बदायुँ नगर पंचायत के भाजपा सभासद राहुल कश्यप का नाम आने पर कार्यक्रमियों में खुशी का माहौल है। हरियाणा के गुरुग्राम में तीन व चार जुलाई को कार्यक्रम आयोजित होगा है। कार्यक्रम में राज्य की नगर निकायों के जनप्रतिनिधियों के साथ-साथ 80 मेयर सहित पार्षद व सभासद को नामित करते हुए नगर निकाय की ओर से प्रदेश की समस्त नगर पालिका में नगर पंचायत के अध्यक्षों, अधिशासी अधिकारी, नगर पालिका परिषद सहित जिला अधिकारियों को प्रतिलिपि भेजकर

सूचित किया गया है। इस क्रम में भाजपा सरकार में नगर निकाय शासन की इस सूची में जिला बिजनौर की भी प्राथमिकता दी गई है, जिसमें बदायुँ नगर पंचायत से सभासद राहुल कश्यप को इस सूची में रखकर जिले का सम्मान बढ़ाया गया है। जिसका लेकर भाइयों नगर पंचायत में खुशी का माहौल है। वहीं राहुल कश्यप के आवास पर भाजपा कार्यकर्ताओं, सभासदों व समाज सेवकों ने फूल-माला पहनाकर एक-दूसरे की मिठाई खिलाकर खुशी का इजहार किया गया है। इस दौरान अमर सिंह, बीरेंद्र सैनी, मा. विधायक कश्यप, अमित कुमार, प्रमोद कुमार, मोहित कुमार, पिंकू प्रजापति, नितिन प्रजापति, राजीव पालिका परिषद सहित जिला अधिकारियों को प्रतिलिपि भेजकर

तैनाती रथल पर ही निवास करें ग्राम पंचायत सचिव

जिलाधिकारी व मुख्य विकास अधिकारी ने बैठक में दिए निर्देश

शाह टाइम्स ब्यूरो
सम्भल। ग्राम पंचायत सचिवों की बैठक में जिलाधिकारी ने तैनाती स्थल पर अथवा आठ किमी के दायरे में ही निवास करने के साथ आकांक्षात्मक ब्लॉक का नम्बर 1 बनाने का प्रयास करने के निर्देश दिए। कलैक्ट्रेट सभागार में आयोजित बैठक में जिलाधिकारी डा. राजेन्द्र पैसिया ने ग्राम पंचायत सचिवों के निवास आदि की जानकारी ली।

बैठक में डीएम ने ग्राम पंचायत सचिवों को तैनाती स्थल अथवा आठ किमी के दायरे में ही निवास करने जबकि क्षेत्र से बाहर जाने पर सम्बंधित अधिकारी से अनुमति लेकर ही जाने के निर्देश इसके अलावा सभी ग्राम पंचायत सचिवों को अपने मोबाइल जनपद स्तरीय



कलक्टेट सभागार में ग्राम पंचायत सचिवों की बैठक लेते मुख्य विकास अधिकारी।

अधिकारियों, ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों तथा ग्राम कुल के सदस्यों, डीपीएमयू के कार्मिकों के मोबाइल नम्बर फाँड रखने को कहा। बैठक में ग्राम कुल के सदस्यों को सक्रिय रहकर माह एक रैली

ग्राम पंचायत में करने को निर्देशित किया। डीएम ने आकांक्षात्मक ब्लॉकों को नम्बर वन बनाने का प्रयास करने और डीपीएमयू को एक गांव गोद देने के भी निर्देश दिए।

जबकि विद्यालयों की छतों को डैम प्रूफ कराने और रैन वाटर हार्वैस्टिंग सिस्टम लगाने और गौशाला में सी सी टीवी कैमरे लगवाने के साथ जहाँ भी ग्राम चौपाल का आयोजन हो उस ग्राम के विद्यालय को सही कराने और एनक्वास को लेकर निर्देशित किया। इस मौके पर मुख्य विकास अधिक. री गोरखनाथ भट्ट, जिला पंचायत राज अधिकारी उपेन्द्र कुमार पाण्डेय, अपर जिला पंचायती राज अधिकारी चेतन्द्र पाल सिंह आदि मुख्य रूप से मौजूद रहे।

सरकार बच्चों को शिक्षा से रखना चाहती है वंचित

स्कूल बंद होने से आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को निजी स्कूलों में कैसे पढ़ा पाएंगे अभिभावक

शाह टाइम्स ब्यूरो
सम्भल। सपा नेता अमित यादव ने कहा कि सम्भल जनपद में 181 प्राथमिक विद्यालयों को बन्द करने के आदेश जारी किए गए हैं। जबकि पूरे प्रदेश में काफी प्राइमरी विद्यालय बन्द होने जा रहे हैं। ऐसे में किसान, मजदूर व गरीब परिवारों के नौनिहाल कहा पेंगे।

वह प्राइवेट विद्यालयों की मेंगही फीस दे पाएंगे। क्या आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूल में पढ़ा पायेंगा। इन प्राइमरी स्कूलों के बीच की दूरी तीन से पांच किलोमीटर से अधिक

खेती अब जीविका नहीं, उद्यम है : मशरूम क्रांति की मिसाल

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में खेती अब केवल गुजारे का साधन नहीं रही कृ वह अब उद्यम, नवाचार और आत्मनिर्भरता की नई परिभाषा बन चुकी है। योगी सरकार की पहल पर प्रदेश में मशरूम की खेती को लेकर चलाया जा रहा विशेष अभियान इसी दिशा में एक बड़ा कदम है। राजधानी लखनऊ समेत आठ जिलों में यह व्यवसाय किसानों के लिए लाभ का स्रोत बन चुका है, जहाँ पारंपरिक सीमाओं से आगे बढ़कर महिलाएं भी आर्थिक बदलाव की सूत्रधार बन रही हैं। मथुरा की गीता देवी ने इस बदलाव को मूर्त रूप दिया है।

है, ऐसे में छोट-छोटे बच्चे वहाँ कैसे जाएंगे और उनकी सुरक्षा का क्या होगा। इसके अतिरिक्त जब विद्यालयों की संख्या घटेगी तो डीएलएड व बीएड कोर्स किए युवा क्या करेंगे। उन्हें कैसे नौकरी मिलेगी। उन्होंने कहा कि ऐसा लग रहा है कि सरकार उत्तर प्रदेश के नागरिकों को शिक्षा से वंचित रख रही है। हम सभी इसका पुरजोर विरोध करते हैं। प्रदेश में प्राथमिक विद्यालयों और आधुनिक सुविधाओं से लैस करने की जरूरत है उनको बंद करने की नहीं। सभी को शिक्षा का अधिकार है। उनको छीना न जाए। इस दौरान शमीम अहमद, रहीम, देवेन्द्र सिंह, राजा यादव, शशिकांत आदि मौजूद।

वेयर हाउस व तहसीलदार न्यायालय का डीएम ने किया निरीक्षण

शाह टाइम्स ब्यूरो
सम्भल। जिलाधिकारी ने ई. वी.एम.वी. वी. पेट वेयरहाउस का त्रैमासिक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान वेयर हाउस की सफाई व सुरक्षा और सीसीटीवी कैमरों और लॉग बुक समेत व्यवस्थाओं की जाँच की।

शहजौदा सराय स्थित वेयर हाउस पर पहुंचने जिलाधिकारी ने कक्षों की जाँच की और ख़र्च विभाग के माध्यम से कक्षों का दीमक ट्रीटमेंट करने के निर्देश दिए तथा अधिशासी अधिकारी नगर पालिका सम्भल को कक्षों एवं

भवन की साफ सफाई कराने को लेकर निर्देशित किया। जिलाधिक. री ने टाइल्स के कार्य को गुणवत्तापूर्ण कराने को लेकर संबंधित को निर्देशित किया। फर्नीचर को चेक किया एवं पुरानी कुर्सियों को सही कराने के निर्देश दिए।

इसके अलावा रैन वॉटर हार्वैस्टिंग के विषय में जानकारी लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। तत्पश्चात जिलाधिकारी ने तहसीलदार सम्भल के न्यायालय का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान तथा सभी पंजिकाओं धारा

24 पंजिका, धारा 67 पंजिका आदि की जांच की। लंबित वाद, पेशी पंजिका, को चेक किया जवाब आपत्ति को लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कि अगर किसी दिवस पर कोर्ट है तथा बैठक में भी सम्मिलित होना है तो अपने उच्च अधिकारी को सूचित करें। इसके उपरांत उप जिलाधिकारी सम्भल न्यायालय को चेक किया सभी पंजिकाओं की जांच कर कोर्ट परिसर को आईएसओ सर्टिफाइड कराने को लेकर भी निर्देशित

किया। जन्म मृत्यु प्रमाण पत्र सत्यापन पर चर्चा की गयी। साथ ही जिन वादों को 45 दिन में निस्तारण होना हो उनको 15 दिन में रिपोर्ट आ जाए तथा अन्य वादों की रिपोर्ट एक माह में आ जाए। इस अवसर पर सिटी मजिस्ट्रेट सुधीर कुमार, उप जिलाधिकारी सम्भल विकास चन्द्र.एस.ओ. सी. चक्रवर्ती मातवर सिंह, तहसीलदार सम्भल धीरेन्द्र सिंह, जिलाध्यक्ष सपा असगर अली अंसारी एवं नायब तहस. लेवलर, एवं संबंधित अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

मोहर्रम बलिदान, सच्चाई पर चलने की देता है प्रेरणा

सम्भल। मोहम्मद आदिल एडवोकेट ने बताया कि मुहर्रम का महीना हमें बलिदान, न्याय और सच्चाई के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। उन्होंने कहा कि मुहर्रम हमें अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने और पीड़ितों के साथ खड़े होने का संदेश देता है। मुहर्रम के महीने को महीने-ए-गम के रूप में वर्णित किया, जो हजरत इमाम हुसैन (अ. स.) और उनके साथियों की शहादत की याद दिलाता है। यह महीना हमें याद दिलाता है कि हमें हमेशा सत्य और न्याय के लिए खड़ा होना चाहिए, भले ही इसके लिए हमें कितना भी बलिदान क्यों न देना पड़े। हजरत इमाम हुसैन (अ. स.) ने अपनी जान देकर भी इस्लाम और सच्चाई को बचाया। उन्होंने बताया कि मुहर्रम का महीना हमें अन्याय के खिलाफ लड़ने और पीड़ितों के साथ सहानुभूति रखने की सीख देता है।

पति की मृत्यु के बाद महिला को झांसे में लेकर कराया था बीमा

बीमा कराकर रकम नहीं देने के मामले में रिपोर्ट दर्ज, पति की मृत्यु के बाद महिला को झांसे में लेकर बीमा माफिया ने कराया था बीमा

शाह टाइम्स ब्यूरो
सम्भल। कैलादेवी थाना क्षेत्र में भी बीमा माफियाओं का एक मामला सामने आया है जहां महिला के बीमार पति की मृत्यु के बाद महिला को झांसे में लेकर बीमा कराकर रकम नहीं देने के मामले में महिला की तहरीर पर रिपोर्ट दर्ज की गई है। थाना क्षेत्र के सौधन गांव निवासी महिला सावरी पत्नी शरीफ ने बताया कि उसके पति कैंसर की बीमारी से पीड़ित थे। मृत्यु से लगभग 6 महीने पहले गांव का ही जाकिर हुसैन उसके

घर आया और महिला से अपने पति का बीमा करने की बात कही। महिला ने कहा कि जाकिर ने बताया था कि उसकी पति की मृत्यु निश्चित है। वह महिला को अपने साथ मुरादाबाद ले गया था। जाकिर शिक्षामित्रा भी है। मुरादाबाद ले जाकर बैंक में खाता खुलवाया और कई बार मुरादाबाद के चक्कर लगाए। बीते 14 मई को महिला के पति की मृत्यु हो गई। मृत्यु के बाद जाकिर उसके घर आया। और महिला को खाते में पैसे आने की

बात कही तथा पैसे आने के बाद आधे पैसे स्वयं लेने की बात कही। महिला को झांसा देता रहा और उसने खाते पर एटीएम भी जारी करा लिया। एटीएम पर उसने अपना मोबाइल नंबर लिखवा दिया। बाद में खाते में पैसे नहीं आने की बात कह दी। महिला ने जानकारी लेनी चाही तो कोई जानकारी नहीं दी। साथ ही महिला के ज्यादा कहने पर जेल भिजवाने की धमकी दी। महिला ने बताया कि वह गरीब मजदूर परिवार से है, पति की मृत्यु के बाद आर्थिक स्थिति और अधिक बिगड़ गई है। जहां उसने जांच कर आरोपी के खिलाफ कार्रवाई करने की तहरीर दी तो पुलिस ने महिला की तहरीर पर मुकदमा दर्ज किया है।

दो मोहर्रम: जब कबरला में दाखिला शाहेदी हुआ

शाह टाइम्स ब्यूरो
सिरसी। इस्लामी तारीख के मुताबिक छः महीने का सफर तय करने के बाद हजरत इमाम हुसैन दो मोहर्रम 61 हिजरी को कर्बला (ईराक) पहुंचे थे। इमाम हुसैन के इस छोटे से काफिले जिसकी तादाद 72 थी काफिले के साथ नहरे फरात के किनारे अपने खेमे में लगा लिए, लेकिन जालिम यजीद का आना शुरू हो गया और जालिम यजीद की लाखों की फौज 72 जानिसारों के सामने आ डटी। यजीद समझ रहा था कि इतनी तादाद में पफोज देखकर इमाम हुसैन और उनके साथी बैअत कर लेंगे। मगर नवास-ए-रसूल ने यजीद के गुरूर को चकनाचूर कर दिया और

नवास-ए-रसूल से खेमे हटाने के लिए कहें। हजरत इमाम हुसैन अपनी तरफ से जंग नहीं चाहते थे। इसलिए कहा भइया अब्बास खेमे हटालो और खेमे नहरे फरात से हटाकर तपती रेत पर लगाने का हुक्म दिया। मोहर्रम की दो तारीख को हजरत इमाम हुसैन के कर्बला पहुंचने के बाद यजीद की पफौज का आना शुरू हो गया और जालिम यजीद की लाखों की फौज 72 जानिसारों के सामने आ डटी। यजीद समझ रहा था कि इतनी तादाद में पफोज देखकर इमाम हुसैन और उनके साथी बैअत कर लेंगे। मगर नवास-ए-रसूल ने यजीद के गुरूर को चकनाचूर कर दिया और

कयामत तक आने वाली नस्लों को यह पैगाम भी दिया कि हक पर मरना जिन्दगी है। हजरत इमाम हुसैन और यजीद दरिया के ऐसे दो किनारे की तरह हैं कि एक-दूसरे के आमने-सामने होते हुए भी कभी नहीं मिल सकते। हजरत इमाम हुसैन और यजीद का नजरिया अलग-अलग है। कर्बला में टकराव नजरिए का हुआ। वक्त के मौजान ने साबित कर दिया कि यजीद के नजरिए को शिकस्त पफाश इसलिए हुई कि वह इमाम हुसैन से बैअत न ले सका और इमाम हुसैन की फतह इस तरह हुई कि यजीद की बैअत न की और मौत से खोफजदा नही हुए। हजरत आदम से लेकर

पैगम्बर इस्लाम मौ. मुस्तफा (स. अ.) तक आते-आते इस्लाम मुकम्मल हो गया। वफाते पैगम्बर इस्लाम के बाद इस्लाम यजीदियत में तब्दील हो गया। पाको पाकीजा माहौल एवं गोदों में परवरिश पाया इस्लाम घुटन महसूस करते हुए दम तोड़ने लगा, तभी हजरत इमाम हुसैन ने बढ़कर आवाज दी। मेरे नाना के दीन घबराना नही मै। तुझे मरने नही दूंगा। आपने आगे फरमाया ए मेरे नाना के इस्लाम में तेरे कमजोर हाथों को मजबूत करने के लिए अपने भाई अब्बास के बाजू दूंगा। अपने जवान बेटे अली अकबर का सीना देकर तेरे सीने को ताकत दूंगा और साये के लिए अपनी बहन जैनब की चादर

दूंगा। नवास ए रसूल ने नाना के इस्लाम से जो वादा किया था उसे कर्बला में 10 मोहर्रम 61 हिजरी को पूरा कर दिखाया। नाना की सीख यही थी कि कभी बालिल के आगे मत झुकना, ईंसानियत को कायम रखना। इमाम हुसैन इसी सीख पर चले। सुल्तान और सल्तनत को भी यही समझाने की कोशिश की लेकिन सल्तनत तो अपने गुरूर में थी। शाम को बादशाह यजीद तानाशाह था। अल्लाह और पैगम्बर इस्लाम की सीख से बेपरवाह होकर उसने जो तरी तरी के अपनाए वह भला हजरत इमाम हुसैन को कैसे कुबूल होते। बस यही से ईंसानियत और शैतानियत की जंग शुरू हो गई।

राजघाट व श्रीहरिबाबा धाम बने पर्यटक स्थल



शाह टाइम्स ब्यूरो बबरा।। प्रदेश सरकार से क्षेत्र के लोगों ने राजघाट व



श्रीहरिबाबा धाम आश्रम को पर्यटक स्थल बनाने की मांग की है। गुनौर तहसील क्षेत्र में स्थित हरिबाबा धाम

आश्रम लोगों की आस्था का केंद्र है। पूर्व में भी इसे पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने की मांग उठाई गई। सपा सरकार में इसका प्रस्ताव भी बनाकर पर्यटन विभाग को भेजा गया था लेकिन वह ठंडे बस्ते में चला गया। अब फिर लोगों ने राजघाट गंगाघाट व हरिबाबा धाम आश्रम को पर्यटक स्थल बनाने की मांग की है।

योगेन्द्र सिंह यादव ने कहा कि गुनौर क्षेत्र के लोगों के लिए ही नहीं बल्कि कई राज्यों के लोगों के लिए हरिबाबा धाम आश्रम आस्था का महत्वपूर्ण केंद्र है। गुरुपूर्णिमा पर्व पर लाखों की संख्या में लोग दर्शन को आते हैं। राहुल यादव ने कहा कि लोगों की हरिबाबा के प्रति गहरी आस्था है। धाम को पर्यटन केंद्र

बनाया जाना चाहिए। लोगों काफी समय से मांग करते रहे हैं। प्रदेश सरकार इसे जल्द पूरा करे। उमेश. चंद्र वाष्णय ने कहा कि जनपद सम्भल का राजघाट गंगाघाट महत्वपूर्ण घाट है। इसका सौन्दर्यकरण किया जाना चाहिए। गंगाघाट पर पर्याप्त व्यवस्था की जानी चाहिए। अनिल अग्रवाल ने कहा कि गंगाघाट राजघाट पर सुविधाओं का अभाव है। इसे पर्यटक केंद्र अवश्य बनाया जाना चाहिए। गंगाघाट राजघाट को आस्था की दुबकी लगाने का केंद्र है।

यहां पार्क, बिजली, उच्च स्नानागार आदि की व्यवस्था होनी चाहिए। जिससे यहां आने वाले को कोई असुविधा न हो।

यज्ञोपवीत धारक ही यज्ञ करने का अधिकारी

150 आर्यवीरों का किया गया पवित्र संस्कार

शाह टाइम्स ब्यूरो
सम्भल। आर्य वीर दल द्वारा आयोजित प्रांतीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर की प्रातः काल यज्ञीय बेला में विभिन्न पंक्तों से पधारे 150 आर्य वीरों का जो पवित्र संस्कार किया गया।

क्षेत्र के टीकम सिंह आर्य आदर्श विद्यालय में यज्ञोपवीत पर बोलते हुए आर्य वीर दल उत्तर प्रदेश के संचालक आचार्य पंकज आर्य ने कहा कि भारतीय वैदिक संस्कृति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रतीक चिह्न यज्ञोपवीत है। संस्कार ही शरीर के अवयवों को सुखुण तथा योग्य बनाने और हमें धर्मानुकूल आचरण करने योग्य

बनाते हैं। संस्कारों से ही मानसिक वाचिक तथा आत्मिक उन्नति का एकमात्र साधन संस्कार ही है। उन्होंने कहा कि मानवीय नैतिक मूल्यों से आच्छादित करने की धार्मिक विधि को ही संस्कार शब्द से जाना जाता है।

यज्ञोपवीत के तीन धागे पितृ ऋण, ऋषि ऋण और देव ऋण का स्मरण दिलाते हैं। मनुष्य को अपने पुरुषार्थ से इन ऋणों से उद्धरण होना है। यज्ञोपवीत की उपेक्षा को अपराध की श्रेणी में माना जाता है। वैदिक संस्कृति में मानव की शारी. रिक, बौद्धिक और आत्मिक दृष्टि से पूर्ण मानव संस्कारों से ही बनता है यज्ञोपवीत धारक ही यज्ञ करने का अधिकारी होता है।

विभिन्न आर्य नेताओं और आर्य समाज, आर्य वीर दल के

पदाधिकारीयों ने सभी शिविरार्थियों को आशीर्वाद प्रदान किया सध्या काल के सत्र में व्यायाम शिक्षक राजकुमार आर्य, सुधाप आर्य, नारायण आर्य, प्रशान्त, अजीत आर्य, विश्वजीत आर्य, प्रमुख आर्य ने तलवार भाला, लाठी, लेंजियम, डम्बल आसान, स्तूप, रस्सा मलखम्ब, दंड बैठक के आदि का अभ्यास कराया, साथ में प्रांतीय सह संचालक दयाशंकर आर्य, जिला संचालक ज्योति वसु आर्य, ओमपाल आर्य, नरेंद्र पाल आर्य, ज्योतिवसु, यशपाल शास्त्री, अष्ट वसु, राजवसु, इंद्रवसु, राष्ट्र वसु आर्य, हेमन्त आर्य, गोविंद आर्य, भुवनेश कुमार शिक्षक, आर्य प्रति. निधि सभा सम्भल व आर्य वीर दल बुलन्दशहर के पदाधिकारी व कार्यकर्ता आदि मौजूद रहे।

पुलिस चौकी निर्माण को भाकियू के दो संगठन आमने-सामने

एक ने किया विरोध, दूसरे संगठन ने की जल्द निर्माण की मांग

शाह टाइम्स ब्यूरो
सम्भल। मनौटा में पुलिस चौकी निर्माण का मामला गहराता जा रहा है। चौकी निर्माण के विरोध और पक्ष में भारतीय किसान यूनियन के दो अलग-अलग संगठन आमने-सामना आ गए। एक संगठन की और विरोध में तो दूसरे ने समर्थन कर उपजिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपकर चौकी निर्माण शीघ्र कराने की मांग की है।

शुक्रवार को यूनियन (बी आर एस एस) के कार्यकर्ताओं ने उप जिलाधिकारी विकास चन्द्र को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में जिला अध्यक्ष संजय कामेन्द्र चौधरी ने कहा कि थाना असमोली के अंतर्गत मनौटा में एक नवीन पुलिस चौकी



मनौटा में पुलिस चौकी का शीघ्र निर्माण कराने की मांग को उपजिलाधकारी को ज्ञापन देते भाकियू बीआरएसएस के कार्यकर्ता

निर्माणधीन है। जिसका कुछ लोग जमीनी विवाद बताकर विरोध कर रहे हैं जो कि सरासर गलत है।

सरकार द्वारा यह अहम पहल की गई है, जिसका संगठन आधार व्यक्त करता है। साथ ही अति शीघ्र

टैकर की टक्कर से तीन लोगों की मौत, व चार घायल

शाहजहांपुर। उत्तर प्रदेश में शाहजहांपुर जिले के थाना कटरा क्षेत्र के गुरुवार रात राष्ट्रीय राज्य मार्ग 24 पर सड़क किनारे खड़े लोगों को टैकर होने से कानून व्यवस्था सुखद होगी एवं आम जनमानस की सुरक्षा में लाभ होगा। जिला उपाध्यक्ष मिर्क चौधरी ने कहा कि संगठन के उच्च पदाधिक. रियों की सहमति के बाद कार्यकारिणी द्वारा निर्णय लेकर मांग पत्र सोपा गया है। इस मौके पर मुख्य रूप से कुलदीप शर्मा, शिवनारायण सेनी, अनमोल कुमार, मेहदी हसन, अमनजीत चौधरी, सुफियान, मास्टर साबिर अली, होराम सिंह, मो. असलम, विनोद सेनी आयाशा राजपूत, अतलेश देवी आदि मौजूद रहे।

‘नशा नहीं, खुशी अपनाइए’ बैठक में दिया गया संदेश

शाह टाइम्स ब्यूरो
सम्भल। नशा नहीं खुशी अपनाइए की डेग लाइन के साथ मादक पदार्थों का दुरुपयोग एवं अवैध व्यापार विरोधी अंतर्राष्ट्रीय विरोधी दिवस पर नशा मुक्त भारत अभियान के तहत नशा विरोधी जन जागरूकता अभियान बैठक का आयोजन किया गया। कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित बैठक में जिलाधिकारी डा. राजेन्द्र पैसिया ने कहा कि नशा करने के कारणों में प्रमुख मन की दुर्बलता है। जब किसी को कोई समस्या उत्पन्न होती है तो वह मादक पदार्थों में समाधान खोजता है तो वह नशे की ओर जाता है। नशा से मुक्ति कैसे मिले



नशा मुक्ति जागरूकता नाटिका की प्रस्तुति करने वाली बालिका को पुरस्कृत करते डीएम।

उसको लेकर उन्होंने कहा कि नशा को छुड़ाने के लिए अपनी लंकर बंदी करने होगी। युवा अच्छी चीजों को अपनायें। जिला. धिकारी ने कहा कि हमारी अधि. कतर समस्याएं हमारे मन, विचार, इच्छा, तथा भावना के कारण उत्पन्न होती हैं। युवाओं को कहा कि वह अच्छी बातों में समय लगायें। स्वराज्य संहिता उपनिषद गंगा तथा चाणक्य पर चल रहे नाटकों को भी देखें। मुख्य विकास अधिकारी गोरखनाथ भट्ट ने बैठक में मौजूद युवाओं तथा बच्चों को समझाते हुए कहा कि मादक पदार्थ युवाओं को गलत दिशा में ले जाते हैं। मादक पदार्थों से जीवन निष्प्राण हो जाता है।

उन्होंने कहा कि अपने आसपास के कम से 10 परिवारों को जागरूक करें। लोगों को समझाएं कि नशा नहीं करना है। मुख्य विकास अधिकारी ने कहा कि विधार्थी जीवन त्याग और अनुशासन का जीवन है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री का स्वप्न है कि 2047 ई तक भारत को विक. सित भारत बना है, मादक पदार्थ इस मार्ग में मादक पदार्थ सबसे बड़े शत्रु के रूप में हैं हमें इन शत्रुओं को नष्ट करना है। समाज सेवी संगीता भागव ने कहा कि आज के बच्चे कल का भविष्य हैं। उन्होंने कहा कि अगर किसी व्यक्ति को नशा करने की आदत लग चुकी है वह अपने आत्मबल

के कारण नशा करना छोड़ सकता है। कार्यक्रम के में बालिकाओं ने नशा मुक्ति नाटिका पेश कर जागरूकता संदेश दिया। जिला. धिकारी ने बालिकाओं को पुस्तक एवं पेन देकर सम्मानित किया। अंत में जिलाधिकारी ने नशा मुक्ति से संबंधित शपथ भी दिलायी गयी। इस अवसर पर जिला विकास अधिकारी राम आशीष, नगर पालिका अध्यक्ष बहजोई राजेश शंकर राजू तथा पूर्व भाजपा अध्यक्ष ओमवीर सिंह खडगवंशी, जिला समाज कल्याण अधिकारी तिनैज कुमार तथा जिला सूचना अधिकारी बृजेश कुमार तथा समाज सेवी संगीता भागव आदि मौजूद रहे।

मोहर्रम पर 900 लोगों को किया मुचलका पाबंद

शाह टाइम्स ब्यूरो
सम्भल। मोहर्रम के जुलूस को लेकर पुलिस-प्रशासन हर अहतियाती कदम उठा रहे। कानून और सुरक्षा एवं शान्ति पूर्ण वातावरण में मोहर्रम के जुलूस सम्पन्न कराने को प्रशासन की और से कड़े कदम उठाये गए हैं। धरा 163 लागू करने के साथ पुलिस ने नौ सी लोगों को शान्ति भंग की आशंका में पाबंद करने की रिपोर्ट भेजी है। जिले में मोहर्रम के जुलूस को लेकर पुलिस और प्रशासन की और से तैयारियों को अन्तिम रूप दे दिया गया है। जुलूस के दौरान आसामाजिक तत्वों पर पैनी निगाह रखने के साथ हर

ज़रूरी इंतोजामों को पूरा किया गया है। जबकि शांति बनाए रखने को भी कड़े कदम उठाए हैं। नगर भर में दो करोड़ रुपये से अधिक की लागत से 224 सीसीटीवी कैमरे लगा दिए गए हैं। इनसे मोहर्रम के जुलूस वाले मार्गों समेत अन्य सभी त्योहारों और जुलूसों की निगरानी की जाएगी। डीएम डॉ. राजेंद्र पैसिया ने बताया कि 900 से अधिक लोगों को पाबंद किया गया है। नए लोगों का सत्यापन जारी है। विवाद करने वालों को पाबंद किया जाएगा। समस्या पैदा करने पर मुचलका जप्त किया जाएगा। एसडीएम एक लाख से पांच लाख रुपये तक के मुचलकों की जांच कराते हैं।

डिवाइडर से रगड़ कर पलटा ट्रक

शाह टाइम्स संवाददाता
मुरादाबाद। अगवानपुर जीनस पेपर आ रहा ट्रक अचानक अंयत्रित होकर अगवानपुर फ्लाईओवर पर बने डिवाइडर से रगड़ कर पलट गया उक्त दुघटना में चालक नाहिद निवासी टंडा बादली मोहनपुर जनपद रामपुर गंभीर रूप से घायल हो गया ट्रक में 360 क्विंटल कोयला लदा हुआ था चौकी प्रभारी सुनील कुमार राठी ने बताया मौके पर फायर सर्विस हाइड्रा क्रेन जैसीबी एम्बुलेंस आदि बुलाकर चालक को सकुशल केबिन में से निकलवाकर अस्पताल भिजवाया गया है।

ट्रक तथा कोयले को मार्ग से हटवाया जा रहा है गोरतलब है अगवानपुर फ्लाईओवर पर आए दिन ऐसी दुघटनाओ का होना आम बात हो गया है आए दिन दुघटनाए हो रही है कारण है रात्रि में फ्लाईओवर पर



अंधेरा छाया रहता है पथ प्रकाश की कोई माकूल व्यवस्था नहीं है दुसरी

ओर सामने आया है अधिकतर जितनी भी दुघटनाए हुई है या तो

चालक नशे की हालत में थे या निंद के कारण दुघटनाए हुई है।

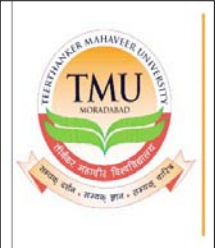
डीआईजी के आदेश पर थाना मझोला के निरीक्षक रामप्रसाद शर्मा निलंबित

मुरादाबाद। थाना मझोला के निरीक्षक रामप्रसाद शर्मा को पुलिस अधीक्षक, यातायात, जनपद मुरादाबाद द्वारा 18 जून को प्रेषित जॉच आख्या के आधार पर तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। निलंबन के पीछे आरोप हैं कि उन्होंने आवेदिका ज्योति पुत्री श्री रमेश सिंह की शिकायत पर प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराने में लाप. रवाही बरती और उच्च अधिकारियों के आदेशों को अवहेलना की। आवेदिका ने आरोप लगाया था कि विपक्षीगण ओमकार आदि ने शारी तय होने के बाद दहेज की मांग की, नशीला पदार्थ पिला कर बलात्कार किया और शारी से इंकार किया। निलंबन अवधि में निरीक्षक रामप्रसाद शर्मा को वित्तीय नियम संग्रह के अनुसार जीवन निर्वाह भत्ते की धनराशि अर्द्ध वेतन पर दी जाएगी। उन्हें मंहगाई भत्ता भी दिया जाएगा यदि वे निलंबन से पहले वेतन के साथ मंहगाई भत्ता प्राप्त करते थे। निलंबन के दौरान अन्य भत्ते भी तभी मंजूर होंगे जब वह प्रमाणित हो कि वे संबंधित भर्दा में व्यय हो रहे हैं।

टीएमयू इंजीनियरिंग कॉलेज को आर वर्ल्ड इंस्टीट्यूशनल में 130वीं रैंकिंग

शाह टाइम्स ब्यूरो
मुरादाबाद। तीर्थंकर महावीर युनिवर्सिटी, मुरादाबाद के नाम एक और बड़ी उपलब्धि आई है। टीएमयू ने इंजीनियरिंग श्रेणी के तहत प्रतिष्ठित आर वर्ल्ड इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग- 2025 में 130वां स्थान हासिल किया है। यह उल्लेखनीय उपलब्धि भारत के शीर्ष इंजीनियरिंग कॉलेजों की टीम में टीएमयू की साख को चिह्नित करती है, जो अकादमिक उत्कृष्टता, नवाचार और समग्र विकास के लिए टीएमयू की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

यह रैंकिंग जो शैक्षणिक प्रतिष्ठा, अनुसंधान आउटपुट, छात्र संतुष्टि, उद्योग इंटरफ़ेस, इंजीनियरिंग एवम् प्रौद्योगिकी के



क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और बुनियादी ढांचा आदि का प्रतिफल है। टीएमयू के चांसलर श्री सुरेश जैन बोले, यह हम सभी के लिए गर्व का क्षण है। यह रैंकिंग टीएमयू परिवार के प्रत्येक सदस्य की निरंतर कड़ी मेहनत, दृढ़ता और तालमेल को दर्शाती है। ग्रुप वाइस चेयरमैन

श्री मनीष जैन का मानना ​​है, यह उपलब्धि इंजीनियरिंग शिक्षा में गुणवत्ता और नवाचार के प्रति हमारी अटूट प्रतिबद्धता का प्रतिबिंब है। यह हमें अकादमिक उत्कृष्टता की अपनी खोज जारी रखने के लिए प्रेरित करती है। टीएमयू के एग्निक्यूटिव डायरेक्टर श्री अक्षत जैन कहते हैं, यह उपलब्धि हमारे संकाय, कर्मचारियों और छात्रों के सामूहिक प्रयास और समर्पण का परिणाम है, जो विश्वविद्यालय के मूल्यों और मानकों को बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। वीसी प्रो. वीके जैन कहते हैं, टीएमयू निरंतर नवाचार, अनुसंधान और छात्र-केंद्रित शिक्षा के माध्यम से भविष्य की रैंकिंग में और भी ऊपर चढ़ने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

एक नजर

कारीगर ऑनलाइन कर सकते हैं आवेदन

मुरादाबाद। जिला ग्रामोद्योग अधिकारी सत्यवीर सिंह ने बताया कि महाप्रबन्धक उ0प्र0 माटीकला बोर्ड, लखनऊ द्वारा वित्तीय वर्ष 2025–26 में माटीकला टूल- किट्स वितरण योजना के अन्तर्गत माटीकला विधा के व्यक्तिगत कारीगरों को निःशुल्क विद्युत चालित चाक (पाटरी व्हील) वितरण हेतु शासन से लक्ष्य प्राप्त हो चुके हैं। जनपद मुरादाबाद के ऐसे ग्रामीण/शहरी क्षेत्र के शिक्षित बरोजगार नवयुवक/नवयुवतियां, जिनकी आयु 18 वर्ष से 55 वर्ष के मध्य हो एवं गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परम्परागत कारीगर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

किन्तु उन्हें भारत सरकार एवं उ0प्र0 सरकार से किसी भी योजना में टूल किट्स न मिला हो ऐसे अभ्यर्थी आवेदन के लिए पात्र होंगें। उक्त के अतिरिक्त स्वयं सहायता समूह में परम्परागत कारीगर भी पात्र होंगें। प्राप्त आवेदन पत्रों का चयन शासन द्वारा गठित चयन समिति द्वारा किया जायेगा। उक्त योजना के अन्तर्गत ऑनलाइन आवेदन आर्मांत्रित किए जा रहे हैं। अभ्यर्थी 15 कार्य दिवस में आवेदन कर हार्डकापी कार्यालय में जमा कर सकते हैं। आवेदक ऑनलाइन आवेदन निम्न वेबसाइट (नचउंजपास.ईवेंतकएण्ड) पर कर सकते हैं। विस्तृत जानकारी हेतु मोबाइल न0 9580503151 एवं 8191967279 या जिला ग्रामोद्योग कार्यालय, एमआईजीए एम0-6 दीन दयालनगर, मुरादाबाद से भी सम्पर्क कर सकते हैं।

टिमिट के छात्र का बिजमाइंड्स वेंचर्स प्राइवेट लिमिटेड कंपनी में चयन

मुरादाबाद। टिमिट के होनहार एमबीए के छात्र अमरेंद्र कुमार को बिजमाइंड्स वेंचर्स प्राइवेट लिमिटेड में बिजनेस डेवलपमेंट एक्जीक्यूटिव के पद पर नोएडा में जॉब का ऑफर प्रदान किया गया है। छात्र का चयन कम्पनी



की उच्चतम स्तरीय चयन प्रक्रिया के माध्यम से हुआ है, जिसमें कम्पनी उनके शिक्षागत प्रदर्शन, व्यक्तिगत गुणवत्ता, तकनीकी ज्ञान और योग्यता के माध्यम से उनकी प्रवीणता को मापा गया। जॉब के दौरान, छात्र को आपूर्तिकर्ता में लाने, उच्चतम स्तरीय तकनीकी उपायोगिता के साथ प्रौद्योगिकी नवाचारों को समझने का अवसर मिलेगा। इस अवसर पर टिमिट के डीन प्रो. विपिन जैन ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुये कहा कि हमें उम्मीद है कि यह छात्र के करियर के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगी। हम अमरेंद्र को उनके नौकरी के लिए बधाई देते हैं और उनकी सफलता की कामना करते हैं। उम्मीद है कि इस अनुभव से वे नए आदर्श और नई उच्चताओं की ओर अग्रसर होंगे। इस अवसर पर सीआरसी के अंसि0 डायरेक्टर श्री आकाश भटनगर और जॉइंट डायरेक्टर श्री सिद्धार्थ सिंह ने कम्पनी के अधिकारियों का धन्यवाद व्यक्त किया व चयनित छात्र को उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक बधाई दी व कहा कि टिमिट पूरे मंडल में सर्वोत्तम है व हमारे छात्रों को उच्चतम स्तर का प्लेसमेंट दिया जा रहा है।

शबनम के पिता की तहरीर पर आत्महत्या के लिए उकसाने का मामला दर्ज

कांठ। शबनम के पिता हनीफ पुत्र इस्माइल की तहरीर पर पुलिस ने आत्महत्या के लिए उकसाने का मामला दर्ज किया है। बताते कि हनीफ पुत्र इस्माइल निवासी आशियाना कॉलोनी करूबा कांठ की बेटी शबनम की शारी करीब 18 साल पूर्व रूस्मपुर गांव में मौसम पुत्र हारून के साथ हुई थी कुछ सालों से शबनम अपने पति व परिवार में अलग हो गई थी और भी आरोप है कि उसका पति शबनम के साथ अश्लील व्यवहार नहीं करता था और उस पर शक करते हुए उसको परेशान करता रहता था एक दिन ग्रह कलह के चलते पति ने मर जाने का ताना शबनम को दिया जिस कारण शबनम ने परेशान होकर जहरीले पदार्थ का सेवन कर लिया और उसकी मौत हो गई। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया। शव को सुपुर्द खाक करने के बाद मुक्त का पति थाने पहुंचा और दामाद के खिलाफ तहरीर दी पुलिस ने आत्महत्या के लिए उकसाने की धाराओं सहित मामला दर्ज कर जांच शुरू की है।

दहेज और महिला उत्पीड़न के आरोप में ससुराल वालों के खिलाफ एफआईआर

कांठ। नगर के मोहल्ला बोसीपुरा निवासी अब्दुल समद की पुत्री तबस्सुम की शादी 31 अगस्त 2020 को मोहम्मद शादाब पुत्र मुबारक हुसैन निवासी अफजल कॉलोनी देहरादून के साथ हुई थी पीड़िता के कोई संतान नहीं है उसका पति शराबी और जुआरी है पीड़िता का कहना है कि उसका पति, सास कौशर जहा ससुर मुबारक हुसैन देवर फिरोज हुसैन, सारिक शान मोइन एवं उसकी ननद गुलपासा आदिया और तनु यह सभी लोग कम दहेज को लेकर उसके साथ मारपीट करना और उसे तरह-तरह से प्रताड़ित करते हुए चले आ रहे थे एक दिन पति की थैर मौजूदगी में नंद और सास ने बाल पड़कर मारपीट की पति से शिकायत की तो उससे भी अपने परिवार वालों को बुलाकर लात घुसो और डंडों से मारते हुए कमरे में बंद कर दिया। बड़ी मुश्किल से हाथ पैर जोड़कर उन्होंने छोड़ा तो ससुराल पक्ष ने 5 लाख के दहेज की मांग की और मांग पूरी न करने पर ईसी तरह से प्रताड़ित करते रहने की धमकी दी। आरोप है कि 15 जनवरी को इसी साल उसे पहने हुए कपड़ों में ससुरालयों ने घर से निकाल दिया पीड़िता ने थाने में तहरीर दी जिस पर पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की है।

बुआ के घर आई युवती लापता, परिजनों ने पुलिस पर लगाया हमसाज होने का आरोप

कांठ। बुआ के घर रहने आई युवती लापता हो गई लड़की की मां की तहरीर पर पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज किया है जनपद जिनजीर के थाना चांदपुर की रहने वाली लड़की थाना छजलैट के गांव शेरपुर एतानादपुर स्थित अपनी बुआ के घर आई थी जहां से वह 14 जून को लापता हो गई लड़की की मां ने गांव के भानू पुत्र राकेश गौतम पुत्र राकेश व नीतू पुत्र राजेंद्र पर उसकी पुत्री को बहलाकूसला कर ले जाने का आरोप लगाया पीड़िता का कहना था की उक्त लोग इससे पहले भी इसी तरह की हरकत कर चुके हैं लड़की को बहलाकूसला कर ले जाने वाले लोगों की उनके परिवार से पुरानी रीजस है और वह उसकी पुत्री को बहलाकूसला कर इसी तरह से अपनी रीजस निकालते चले आए हैं। पीड़िता ने छजलैट पुलिस पर आरोपियों से हमसाज होने का आरोप लगाकर कार्यवाही की मांग की आखिर में महिला मुख्यमंत्री के दरबार में पहुंची और वहां शिकायत करने के बाद पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू की है।

किडनी कैंसर की रोकथाम संभव, जरूरत है सतर्क रहने की

शाह टाइम्स ब्यूरो

मुरादाबाद। किडनी कैंसर, जिसे रीनल सेल कार्सिनोमा (RCC) कहा जाता है, आज दुनियाभर में एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या बनकर उभर रहा है। यह कैंसर किडनी के कार्यशील ऊतकों में शुरू होता है और समय पर इलाज न होने पर आसपास के अंगों तक फैल सकता है। आधुनिक इमेजिंग तकनीकों और बढ़ती जागरूकता के चलते अब इस बीमारी के मामलों की पहचान प्रारंभिक चरण में हो रही है, जिससे इलाज संभव हो पा रहा है और मरीजों की जीवन दर बेहतर हो रही है। किडनी कैंसर के बढ़ने के पीछे कई कारण हैं:ख़ूबसे कि बदलती जीवनशैली, शारीरिक निष्क्रियता, खानपान में बदलाव, पर्यावरणीय प्रदूषण, बेहतर स्क्रीनिंग सुविधाएं और

लोगों में स्वास्थ्य को लेकर जागरूकता का बढ़ना। इस वर्ष वर्ल्ड किडनी कैंसर डे की थीम है 'ख़ अपनी किडनी को प्यार दें', जिसका उद्देश्य है लोगों को अपनी किडनी के प्रति सजग बनाना। मैक्स सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल, नोएडा के यूरो-ऑन्कोलॉजी, रोंगोटिक सर्जरी और एंडो यूरोलॉजी विभाग के सीनियर डायरेक्टर डॉ. पंकज वाधवा ने बताया कि “कुछ प्रमुख जोखिम कारक हैं: धूम्रपान, मोटापा, हाई ब्लड प्रेशर, दीर्घकालिक डायलिसिस पर रहना, कैंसर का पारिवारिक इतिहास और कुछ आनुवांशिक स्थितियाँ। किडनी कैंसर की शुरुआती अवस्था में आमतौर पर कोई लक्षण दिखाई नहीं देते और यह अक्सर किसी अन्य बीमारी की जांच के दौरान संयोगवश पता चलता है। लेकिन जैसे-जैसे



ट्यूमर बढ़ता है, तो कुछ लक्षण सामने आ सकते हैं, जैसे:पेशाब में खून आना, कमर या पेट के एक ओर सूजन या गंठ, पेश में भारीपन या लगातार हल्का दर्द, अचानक वजन कम होना, बार-बार बुखार आना,

विधायक ने जनता दरबार लगाकर लोगों की समस्याओं को सुना

कांठ। क्षेत्रीय विधायक कमाल अख्तर ने आज अपना साप्ताहिक जनता दरबार लगाया जिसमें आए लोगों की समस्याओं को सुनकर उन्होंने समाधान का भरोसा दिलाया कैंप में पहुंचे लोगों ने राशन न मिलने धावता सूची में नाम न होने जमीन की पैमाई न होने विधवा वृद्धावस्था दिव्यांग पेंशन आदि को लेकर अपनी शिकायतें दर्ज कराईं। जिनके समाधान का उन्होंने भरोसा दिलाया।

उन्होंने संबंधित विभाग के अधिकारियों से भी लोगों की समस्याओं के त्वरित समाधान करने के लिए कहा उन्होंने कहा कि जनप्रतिनिधि होने के नाते सबकी समस्याओं का समाधान कराना उनकी जिम्मेदारी है। और इसी के तहत वर क्षेत्र में काम कर रहे हैं। इस मौके पर विक्रम सिंह यादव नाजिम सैफी अरशद फुरकान खान नदम अंसारी अमजद अली डॉक्टर दानिश अलिकुर रहमान सगीर अहमद शमीम कुंइशी सुमित यादव जैनुल एडवोकेट मसरूफ नफीस अंसारी मुकेश



प्रधान अफजल फुरकान शमीम अंसारी पिंठू बिश्नोई भूरा खान उम्मेद चौधरी दानिश चौधरी

भारत वर्षीय जाट महासभा मानसून सत्र में लगाएगी 10 लाख पौधे



कांठ। भारत वर्षीय जाट महासभा ने इस मानसून सत्र में 10 लाख पौधे लगाने का निर्णय लिया है जिसकी जिम्मेदारी उत्तर प्रदेश के प्रत्येक जिले के पदाधिकारी को दे दी गई। चौधरी अजीत सिंह ने बताया कि 1 जुलाई से पूरे उत्तर प्रदेश में पौधारोपण का कार्यक्रम शुरू कर दिया जाएगा।

बैठक के दौरान जाट महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल चौधरी मुख्य संरक्षक जबर सिंह राष्ट्रीय संरक्षक सूरज सिंह प्रदेश अध्यक्ष देवेंद्र सिंह और प्रदेश संरक्षक अजय पाल सिंह ने यह निर्णय लेते हुए प्रदेश में 10 लाख पौधे इसी मानसून सत्र में लगाए जाने का लक्ष्य दिया है। उन्होंने सभी लोगों से इस हरित कार्य में सहभागिता किए जाने का आवाह भी किया है।

भीषण गर्मी में राहगीरों को ठंडा शबरत पिलाया



कुन्दरकी। नगर की मखिन्दे आला हजरत के पास भीषण गर्मी में दावते इस्लामी इन्डिया के डिपार्टमेंट जी एन आर एफ गरीब नवाज रिलीफ फाउंडेशन की जानिब से ईसानियत की खिदमत के तहत ठंडा शबरत पिलाकर गर्मी से राहत पहुंचाई। फाउंडेशन के क्षेत्रय अध्यक्ष अरकान काररी ने बताया ने बताया गर्मी के इस मौसम में ठंडा पानी लोगों के लिए सबसे बड़ी जरूरत बन जाता है। हमारा मकसद यह है कि कोई भी प्यासा न रहे।

यह एक छोटी सी कोशिश है लोगों की सेवा करना और हमें खुशी है कि हमें इसमें सफलता मिल रही है। फाउंडेशन के स्वयंसेवकों ने सारी दोहरी लोगों को ठंडा शर्वत पिलाया इस अवसर रिजवान अली पेन्टर मुहम्मद फैजान रेहान अली अमजद अली आसिफ सुब्कानी आदि मौजूद रहे।

बेदखली सूचना

मैंने अपने पुत्र मौ0 फैसल व उसकी पत्नी रोजी के गलत आचरण व्यवहार के कारण अपनी चल अचल सम्पत्ति से बेदखल कर सम्बंध विच्छेद कर लिए है। उनके अच्छे बुरे कार्यों वह लेन देन के वह स्वयं जिम्मेदार होंगे। मेरी और मेरे परिवार के किसी सदस्य की कोई जिम्मेदारी नही होगी।
शाहिद पुत्र नन्हें मोहल्ला किला अफजलगढ़ तहसील धामपुर, जिला बिजनौर।

बेदखली सूचना

मैं राजकुमार पुत्र स्व. किशन लाल निवासी ग्राम नगला बनवीर थाना पाकबड़ा तहसील व जिला मुरादाबाद घोषणा करता हूँ कि मैंने अपने पुत्र पीतम और उसकी पत्नी श्रीमती रीना को गलत संगत व गलत आचरण के कारण अपनी सम्पत्त चल अचल संपत्ति व सामाजिक रिश्तों से बेदखल कर दिया है। अतः पीतम और उसकी पत्नी रीना का मुझसे या मेरे परिवार से कोई सन्धसे/ वारता नहीं है। आज से उनके किसी भी कृत्य या लेनदेन के लिए वह स्वयं जिम्मेदार होंगे।

संक्षिप्त खेल समाचार

खेल मंत्रालय ने 'माई भारत पोर्टल' पर शुरु किया

व्हाट्सएप चैटबॉट नई दिल्ली, वार्ता। खेल मंत्रालय ने भारत के युवाओं के लिए डिजिटल जुड़ाव बढ़ाने और सेवाओं तक पहुंच को सुव्यवस्थित करने के एक प्रगतिशील कदम के तहत 'माई भारत' पोर्टल के साथ व्हाट्सएप एकीकरण शुरू किया है। व्हाट्सएप चैटबॉट अब माई भारत पोर्टल पर लाइव है और इसे सीधे व्हाट्सएप (7289001515) के द्वारा भी इस्तेमाल किया जा सकता है। यह मंच बातचीत करने का अधिक आसान, वास्तविक समय और उपयोगकर्ता के अनुकूल तरीका प्रदान करता है। इसमें सभी पंजीकृत माई भारत उपयोगकर्ताओं को अनुभव वास्तविक शिक्षण कार्यक्रम, स्वयंसेवा के अवसर, सीवी निर्माण, मेंटरशिप, संगठन में शामिल होने किसी भी मुद्दे की रिपोर्ट करने और माय भारत सहायता तक पहुंचने की सुविधा मिलती है। व्हाट्सएप चैटबॉट में सत्र शुरू करने के लिए व्यक्ति को 7289001515 नंबर पर 'हॉय' संदेश भेजना होगा।

हैम्पशायर ने टी-20 ब्लास्ट के लिए लिन को किया अनुबंधित
लंदन, वार्ता। हैम्पशायर ने अपने शेष टी-20 ब्लास्ट ग्रुप मैचों के लिए ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज क्रिस लिन को अनुबंधित किया है। हाँक के पास ग्रुप चरण में छह और गेम हैं और लिन का आगमन दक्षिण अफ्रीकी जोड़ी लुआन-डु प्रोटोरियस और डेवाल्ड ब्रेविस के अंतर्राष्ट्रीय कॉल-अप अर्जित करने के बाद हुआ है। दक्षिण अफ्रीका को 28 जून से जिम्बाब्वे के खिलाफ दो टेस्ट मैचों की श्रृंखला खेलनी है। लिन ने नॉर्थम्पटनशायर स्टीलबैक के लिए पहले ब्लास्ट में खेला है और इस प्रारूप में आठ हजार से अधिक रन के साथ 292 टी-20 मैच खेले हैं।

आईसीसी ने 6 नियमों में बदलाव किए



दुबई, वार्ता। इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) ने हाल ही में पुरुष क्रिकेट के 6 नियम बदले हैं, ताकि खेल को ज्यादा तेज, निष्पक्ष और रोचक बनाया जा सके। टेस्ट क्रिकेट में ये नियम नई वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप (2025-27) के लिए लागू हो चुके हैं। वहीं, सीमित ओवर (वनडे और टी-20) फार्मेट में ये नियम 2 जुलाई 2025 से प्रभावी होंगे। आईसीसी ने सभी देशों से नियमों में किए गए बदलावों की जानकारी साझा की है। आईसीसी ने

● खेल को ज्यादा तेज, निष्पक्ष और रोचक बनाने की कवायद: टेस्ट में 60 सेकेंड में ओवर शुरू करना होगा, दो चेतावनी के बाद 5 रन कटेंगे

टेस्ट क्रिकेट में अब स्टॉप क्लॉक नियम लागू करने का फैसला किया है। इसके तहत फील्डिंग टीम ओवर शुरू करने में 60 सेकेंड से अधिक देर करती है तो उसे दो बार वार्निंग दी जाएगी। इसके बाद भी अगर यह नियम टूटा तो पेनल्टी के तौर पर उसके 5 रन काट लिए जाएंगे। टी-20 और वनडे क्रिकेट में यह नियम एक साल पहले ही लागू हो चुका है। आईसीसी ने तीनों फार्मेट के लिए शॉर्ट रन का नियम भी बदला है। जानबूझकर शॉर्ट रन लेने पर पहले 5 रन का जुर्माना लगता था। अब अगर बल्लेबाज एक्स्ट्रा रन चुराने के लिए जानबूझकर रन पूरा नहीं करता तो अपायर फील्डिंग टीम से पूछेंगे कि वे पिच पर मौजूद दोनों में से किस बल्लेबाज को स्ट्राइक

पर चाहते हैं। 5 रन के जुर्माना वाला नियम भी लागू रहेगा। गेंद पर सलाइवा (लार) लगाने पर बैन जारी रहेगा। हालांकि, गलती से सलाइवा लगाने पर बाल बदलना अनिवार्य नहीं होगा। अपायर सिर्फ तभी गेंद बदलेंगे, जब उसकी स्थिति में भारी बदलाव हो, जैसे कि गेंद बहुत गीली हो या उसमें एक्स्ट्रा चमक हो। यह फैसला अपायर के विवेक पर निर्भर होगा। अगर उसे लगता है कि गेंद की स्थिति में ज्यादा बदलाव नहीं हुआ है तो इसे नहीं बदला जाएगा। यह नियम भी तीनों फार्मेट के लिए है। आईसीसी ने कोरोना काल (2020) के दौरान गेंद पर लार लगाने को बैन कर दिया था। आईसीसी ने कैच का नियम भी बदला है। अगर कैच आउट रीव्यू

में गलत साबित होता है, लेकिन गेंद पैड पर लगी हो तो टीवी अपायर एलबीडीब्ल्यू की भी जांच करेंगे। अगर बैटर एलबीडीब्ल्यू आउट है तो उसे आउट दे दिया जाएगा। यह नियम भी तीनों फार्मेट के लिए है। साफ्ट सिग्नल (अपायर का लिया रिव्यू) लिया गया है और नो बाल पर कैच पर सही है तो बल्लेबाजी टीम को नो-बाल का एक रन एक्स्ट्रा मिलेगा। कैच सही नहीं है तो नो बाल का एक रन और दौड़कर बनाए गए रन भी मिलेंगे। पहले कैच के डाउट होने पर फील्ड अपायर थर्ड अपायर को रीफर करता था और टीवी अपायर बताता था कि ये नो बाल थी, तो कैच की जांच नहीं होती थी। लेकिन अब उसकी जांच की जाएगी।

भारत में होंगे 2029 के विश्व पुलिस और अग्निशमन सेवा खेल

नई दिल्ली, वार्ता। भारत ने प्रतिष्ठित विश्व पुलिस और अग्निशमन सेवा खेलों की वर्ष 2029 की मेजबानी से संबंधित बोली में जीत हासिल की है और इन खेलों का आयोजन अहमदाबाद में किया जायेगा। केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को स्वयं इस बात की जानकारी सोशल मीडिया पर दी। उन्होंने कहा कि भारत को प्रतिष्ठित विश्व पुलिस और अग्निशमन खेल 2029 की मेजबानी मिलना हर भारतीय के लिए गौरव का क्षण है। भारत ने 2029 में होने वाले विश्व पुलिस और अग्निशमन सेवा खेलों 2029 की मेजबानी के लिए बोली जीत ली है। बर्मिंघम में आयोजित समारोह में भारत ने वियतनाम को पछाड़कर इन खेलों के लिए बोली जीती। यह प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय



● भारत ने मेजबानी से संबंधित बोली में जीत हासिल की, इन खेलों का आयोजन अहमदाबाद में होगा

दुर्गामें गुजरात के अहमदाबाद शहर में आयोजित किया जायेगा। इससे भारत में खेल संस्कृति को नई ऊंचाई मिलेगी और विश्वभर के पुलिस और अग्निशमन सेवा के खिलाड़ियों के लिए यह भव्य मंच साबित होगा। शाह ने भारत को प्रतिष्ठित विश्व पुलिस और

अग्निशमन सेवा खेल 2029 की मेजबानी मिलने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इन खेलों की मेजबानी मिलना प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश में विस्तृत खेल ढांचे के निर्माण की वैश्विक मान्यता को दर्शाता है।

केन्द्रीय गृह मंत्री ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि भारत को प्रतिष्ठित विश्व पुलिस और अग्निशमन खेल 2029 की मेजबानी मिलना हर भारतीय को लिए गौरव का क्षण है।

टी-20 विश्वकप में ऑस्ट्रेलिया से बदला लिया: रोहित शर्मा



नई दिल्ली, वार्ता। रोहित शर्मा ने टी-20 वर्ल्ड कप 2024 में ऑस्ट्रेलिया को हराने को लेकर बात की है। उन्होंने कहा सुपर-8 मैच में ऑस्ट्रेलिया को हारकर पूरी टीम ने 2023 वनडे वर्ल्ड कप फाइनल का बदला लिया था।

रोहित शर्मा ने बताया कि ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 19 नवम्बर की फाइनल हार का गुस्सा उनके और पूरी टीम के मन में था। इसके बाद टी-20 वर्ल्ड कप 2024 में भारत ने ऑस्ट्रेलिया को 24 रन से हराया था। इस मैच में रोहित ने 92 रनों की पारी खेली थी। जिसके बाद ऑस्ट्रेलिया टूर्नामेंट से बाहर हो

● ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 19 नवम्बर की फाइनल हार का गुस्सा पूरी टीम के मन में था

गया था। रोहित रोहित ने कहा 2023 वर्ल्ड कप में हमने शानदार खेल दिखाया लेकिन फाइनल में ऑस्ट्रेलिया ने हमें हरा दिया। 19 नवम्बर की चिढ़ हमेशा से मेरे और टीम के मन में थी। उन्होंने कहा, गुस्सा तो हमेशा था।

ऑस्ट्रेलिया ने हमारा 19 नवम्बर खराब कर दिया था। डुसिंघ रूम में 2023 फाइनल की बात होती थी टी-20 वर्ल्ड कप में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मैच पर रोहित ने बताया, डुसिंघ रूम में हम इस बारे में बात करते थे। मन में ये खयाल तो रहता है, लेकिन जब आप बल्लेबाजी करने उतरते हैं, तो इन सबके बारे में ज्यादा नहीं सोचते। हमने पहले पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 205/4 का स्कोर बनाया।

सीनियर्स हारे, पर भारतीय अंडर-19 ने इंग्लैंड को धोया



होव, वार्ता। भारत की अंडर-19 टीम इन दिनों इंग्लैंड के दौरे पर है, जहाँ उन्हें इंग्लैंड की अंडर-19 टीम के खिलाफ पांच मैचों की वनडे सीरीज खेलनी है। इसकी शुरुआत आज

● 442 रनों के जवाब में इंग्लैंड यंग लायंस 211 रन पर हो गई ढेर

होव में होगी। उससे पहले 24 जून को भारतीय अंडर-19 टीम ने इंग्लैंड के यंग लायंस के खिलाफ 50 ओवर का प्रेक्टिस मैच खेला। इस मैच में भारत के युवा खिलाड़ियों ने इंग्लैंड की टीम को धो दिया। आयुष म्हात्रे की कप्तानी वाली टीम ने 50 ओवर में नौ विकेट गंवाकर 442 रन बनाए।

जवाब में इंग्लैंड यंग लायंस की टीम 41.1 ओवर में 211 रन पर सिमट गई। भारतीय अंडर-19 टीम ने इसी के साथ इंग्लैंड यंग लायंस पर 231 रन की जीत के साथ इंग्लैंड की अंडर-19 टीम को चेतावना दे दी है। लोअर आर्डर ने लीड्स टेस्ट में निराश किया था, वहीं दूसरी तरफ भारतीय अंडर-19 के लोअर आर्डर ने तूफान मचा दिया। छठे नंबर पर बल्लेबाजी के लिए आए राहुल कुमार और इसके बाद आए कनिष्क चौहान ने छठे विकेट के लिए 140 रन

अच्छी नहीं रही थी और 33 रन तक टीम ने अपने दोनों ओपनर्स के विकेट गंवा दिए थे। कप्तान म्हात्रे एक रन और 14 साल के वैभव सूर्यवंशी 17 रन बनाकर आउट हुए।

इसके बाद विहान मल्होत्रा और मौलयाराजसिंह चावड़ा ने तीसरे विकेट के लिए 47 रन की साझेदारी निभाई। विहान 31 गेंद में छह चौके और एक छक्के की मदद से 39 रन बनाकर आउट हुए। वहीं, चावड़ा ने 18 गेंद में पांच चौके की मदद से 23 रन की पारी खेली। अभिज्ञान कुंड़ु छह रन बनाकर आउट हुए। एक तरफ जहाँ भारतीय सीनियर टीम के लोअर आर्डर ने लीड्स टेस्ट में निराश किया था, वहीं दूसरी तरफ भारतीय अंडर-19 के लोअर आर्डर ने तूफान मचा दिया। छठे नंबर पर बल्लेबाजी के लिए आए राहुल कुमार और इसके बाद आए कनिष्क चौहान ने छठे विकेट के लिए 140 रन

की साझेदारी निभाई। राहुल 60 गेंद में चार चौके और पांच छक्के की मदद से 73 रन और कनिष्क 67 गेंद में पांच चौके और पांच छक्के की मदद से 79 रन बनाकर आउट हुए।

इसके बाद आठवें नंबर पर बल्लेबाजी के लिए आए अंबिश ने 47 गेंद में छह चौके और चार छक्के की मदद से 72 रन की पारी खेली। हालांकि, पार्टी मदद से 39 रन बनाकर आउट हुए। वहीं, चावड़ा ने 18 गेंद में पांच चौके की मदद से 23 रन की पारी खेली। अभिज्ञान कुंड़ु छह रन बनाकर आउट हुए। एक सात विकेट पर 251 रन था। 52 गेंद पर आठ चौके और नौ छक्के की मदद से 103 रन जड़ दिए। वह नाबाद रहे। मोहम्मद एनान चार रन बनाकर आउट हुए। वहीं, हेनिल पटेल एक रन बनाकर नाबाद रहे। इस तरह भारत ने 50 ओवर में नौ विकेट पर 442 रन बनाए।

वेस्टइंडीज ने ऑस्ट्रेलिया के चार विकेट झटक कर मैच पर पकड़ बनाई

दूसरे दिन स्टंप के समय ऑस्ट्रेलिया दूसरी पारी में 92 रन पर चार विकेट हुए

बारबाडोस, वार्ता। तेज गेंदबाजों की मददगार पिच पर जेडन सील्स की अगुवाई में वेस्टइंडीज के गेंदबाजों ने पहले टेस्ट मैच के दूसरे दिन स्टंप के समय ऑस्ट्रेलिया की दूसरी पारी में 92 रन के स्कोर पर चार विकेट झटक कर मैच पर अपनी पकड़ मजबूत बना ली है।

इससे पहले वेस्टइंडीज ने बल्लेबाज शाई होप (48) और कप्तान रोस्टन चेस (44) के बीच जुझारू साझेदारी की बदौलत ऑस्ट्रेलिया के पहली पारी में बनाये गये स्कोर के आधार 10 रन की बहुत हासिल की। दूसरी पारी में बल्लेबाजी करने उतरी ऑस्ट्रेलिया की शुरुआत एक बार फिर खराब रही और उसने 27 के स्कोर पर

उस्मान ख्वाजा (15) रन का विकेट गवां दिया। इसके बाद 34 के स्कोर पर ऑस्ट्रेलिया का दूसरा विकेट सैम कॉन्स्टास (पांच) रन के रूप में गिरा। जोश इंग्लिस (12) को जेडन सील्स ने बोलड आउट किया। कैमरन ग्रीन (15) को जस्टिन ग्रीव्स ने रॉस्टन चेज के हाथों कैच आउट कराया। ऑस्ट्रेलिया 65 रन पर चार विकेट गवां कर दबाव में थी। ऐसे संकट के समय ट्रेविस हेड और ब्यू वेबस्टर की जोड़ी ने पारी को संभाला और दिन का खेल समाप्त होने के समय तक चार विकेट खोकर 92 रन बना लिए। स्टंप के समय ब्यू वेबस्टर (नाबाद 19) और ट्रेविस हेड (नाबाद 13) क्रीज पर मौजूद थे। वेस्टइंडीज की ओर से जेडन सील्स, शमार जोसेफ, अल्जारी जोसेफ और जस्टिन ग्रीव्स ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

विंबलडन चैंपियन क्रैजिकोवा चोट के कारण ईस्टबोर्न से बाहर



लंदन, वार्ता। विंबलडन चैंपियन बारबा. 'रा क्रैजिकोवा ने जांच की चोट के कारण ईस्टबोर्न से नाम वापस ले लिया है। चेक गणराज्य की खिलाड़ी को अपने दोनों मैचों में तीन सेटों तक जाना पड़ा, जिसमें उन्होंने क्रमशः पहले और दूसरे राउंड में ब्रिटेन की हैरियट डार्ट और जोडी बरेज को हराया।

क्वार्टर फाइनल में उनका सामना फ्रांस की क्वारा ग्रेचेवा से होना था, लेकिन मैच शुरू होने से पहले ही उन्होंने नाम वापस ले लिया। दो बार की प्रमुख एकल चैंपियन क्रैजिकोवा ने बुधवार को शुरू में समस्या

महसूस की जो रात भर में और खराब हो गई। 29 वर्षीय खिलाड़ी ने कहा कि मुझे नाम वापस लेने का बहुत दुख है, क्योंकि मेरी दाहिनी जांघ में कुछ दर्द है। मुझे लगता है कि अगले कुछ दिनों में विंबलडन के साथ आराम करना और यह देखना बेहतर होगा कि क्या हो रहा है और उसका समाधान करना है। क्रैजिकोवा मंगलवार को विंबलडन में मौजूदा महिला चैंपियन के रूप में खेल को शुरुआत करेंगी, न पीठ की चोट के कारण लंबे समय तक आराम करने के बाद इस साल सिर्फ छह मैच खेले हैं। वह

क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने सऊदी क्लब अल-नासर के साथ किया नया करार

लिस्बन, वार्ता। क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने सऊदी क्लब अल-नासर के साथ दो साल का नया करार किया है, जिसके बाद वह अपने 42वें जन्मदिन के बाद तक सऊदी प्रो लीग क्लब के साथ बने रहेंगे। पुर्तगाल के 40 वर्षीय कप्तान मैनचेस्टर यूनाइटेड को खराब परिस्थितियों में छोड़ने के बाद दिसम्बर 2022 में रियाद स्थित टीम में शामिल हुए थे। उनका पिछला अल-नासर करार जून के अंत में समाप्त होने वाला था। एक्स पर एक पोस्ट में, रोनाल्डो ने लिखा कि एक नया अध्याय शुरू होता है। वही जुनून, वही सपना। आइए साथ मिलकर इतिहास बनाएं।

पिछले सप्ताह क्वींस में अपना पहला राउंड मैच हार गई थी, फिर उसने डार्ट और बरेज दोनों के खिलाफ मैच घाईब बचाए। दुनिया की 17वें नंबर की खिलाड़ी ने पिछले साल विंबलडन फाइनल में इटली की जैस्मीन पाओलिनी को हराया था।

आईओसी ने 2036 ओलंपिक की बिडिंग प्रोसेस रोकी

नई दिल्ली, वार्ता। इंटरनेशनल ओलंपिक काउंसिल (आईओसी) ने 2036 ओलंपिक गेम्स की मेजबानी की बिडिंग प्रोसेस पर रोक लगा दी है। इससे गेम्स के लिए भारत की मेजबानी पर फैसला टल गया है। आईओसी की प्रेसिडेंट क्रिस्टी कावेटी ने कहा कि एग्जीक्यूटिव बोर्ड के सभी सदस्यों ने इस प्रोसेस को रोकने और इसकी समीक्षा करने का फैसला लिया है।

हम इस पर दोबारा विचार करने के लिए एक कार्य समूह गठित करेंगे। 41 साल की क्रिस्टी लुसाने में एग्जीक्यूटिव बोर्ड की पहली बैठक ली। पिछले साल एक अक्टूबर को भारत सरकार ने एक अक्टूबर को लेंटर आफ इंटेंट के जरिए आईओसी से गेम्स का आयोजन कराने की इच्छा जाहिर की थी। इस पर अगले साल तक फैसला

प्रसिडेंट ने कहा कि मेजबान चुनने का सही समय नहीं भारत ने 8 महीने पहले दावेदारी पेश की थी

होने की उम्मीद की जा रही थी। 2032 तक के मेजबान तय हैं, 2036 के लिए बिडिंग होगी 2032 तक के ओलंपिक मेजबान तय हो चुके हैं। 2032 की मेजबानी ऑस्ट्रेलिया के ब्रिस्बेन शहर को दी गई है। जिसके 2028 के ओलंपिक लास एंजेलिस में होने हैं। अब तक 2 एशियाड, एक कामनवेल्थ गेम्स कर चुका है भारत भारत अब तक 3 मल्टी स्पोर्ट्स गेम्स की मेजबानी कर चुका है।

देश ने आखिरी बार 2010 में कामनवेल्थ गेम्स की मेजबानी की थी। इससे पहले भारत में 1982 और 1951 के एशियन गेम्स भी कराए जा चुके हैं।

विंडीज के सील्स पर लगा जुर्माना



● सील्स को खिलाड़ियों और उनके सहायक कर्मियों के लिए अपमानजनक भाषा के प्रयोग का दोषी पाया गया

बारबाडोस, वार्ता। वेस्टइंडीज के तेज गें. दबाज जेडन सील्स पर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेले जा रहे पहले टेस्ट मैच के पहले दिन आईसीसी आचार संहिता के लेवल 1 का उल्लंघन करने के लिए मैच फीस का 15 प्रतिशत जुर्माना लगाया गया। आईसीसी के आज एक बयान के अनुसार सील्स को खिलाड़ियों और उनके सहायक कर्मियों के लिए अपमानजनक भाषा, क्रियाकलाप तथा हाव-भाव से आईसीसी आचार संहिता के अनुच्छेद 2-5 का उल्लंघन का दोषी पाया गया। इसके तहत उन पर मैच फीस के 15 प्रतिशत जुर्माने के अलावा अनुशासनात्मक रिकॉर्ड में एक डिमरिट अंक भी जोड़ा गया। यह पिछले 24 महीने की अवधि में उनका दूसरा अपराध है। यह घटना बुधवार को पहले टेस्ट मैच के पहले दिन ऑस्ट्रेलिया की पारी के 55वें ओवर में उस समय हुई जब कप्तान पैट कर्मिस को आउट करने के बाद सील्स ने उन्हें पवेलियन की ओर इशारा किया। इससे पहले तीन दिसंबर 2024 को जमैका में बंगलादेश के खिलाफ टेस्ट मैच में सील्स को इसी तरह के अपराध के लिए दोषी पाये जाने पर एक डिमरिट अंक जोड़ा गया था। सील्स ने अपराध और मैच रेफरी को एमिरेट्स आईसीसी एलीट पैनल के जवागल श्रीनाथ द्वारा प्रस्तावित दंड को स्वीकार कर लिया।

विश्वकप की तैयारियों का आगाज करेगी भारतीय टीम

इंग्लैंड से आज होगा टी-20 मैच में सामना

नारिंघम, वार्ता। अगले साल होने वाले टी-20 विश्व कप की तैयारियों की शुरुआत के लिए भारतीय महिला टीम के पास इंग्लैंड के खिलाफ टी-20 सीरीज से अच्छा मौका नहीं होगा।

हरमनप्रीत कौर के नेतृत्व वाली टीम आगामी पांच मैचों की सीरीज के जरिये इंग्लैंड की प्लेइंग कंडीशंस में खुद को ढालना चाहेगी। यहां दोनों का तीन वनडे मैचों की सीरीज में भी आमना-सामना होना है। विश्व कप के आयोजन में अभी लाभग एक साल का वक्त है, लेकिन पिछले साल ग्रुप चरण में बाहर होने वाली भारतीय टीम के लिए यह सीरीज बेहद महत्वपूर्ण है। भारतीय टीम प्रबंधन इंग्लैंड की पिचों की प्रकृति और बदलते मौसम का खेल पर पड़ने वाले

प्रभाव का आकलन करना चाहेगा। टीम प्रबंधन को इसके साथ ही यह पता करने का भी मौका मिलेगा कि इस तरह की परिस्थितियों में किस तरह के खिलाड़ी प्रभाव डाल सकते हैं। विस्फोटक सलामी बल्लेबाज शेफाली वर्मा की वापसी के अलावा भारत ने क्रांति गौड़, श्री चरण और सायली सतधर जैसे कुछ नए चेहरों को अपनी टीम में शामिल किया है। पूरी संभावना है कि शेफाली को स्मृति मंधाना के साथ पारी का आगाज करने का मौका दिया जाएगा, क्योंकि उमा छेत्री कुछ मैचों में सलामी बल्लेबाज के रूप में प्रभावित नहीं कर पाई थी। भारत का यह इस साल का पहला टी-20 मैच है और आफ फिनाल आलराउंड स्नेह राणा और तेज गेंदबाजी आलराउंडर अमनजोत कौर की



वापसी पर सबकी निगाहें रहेंगी। राणा फरवरी 2023 के बाद टीम में वापसी कर रही हैं और इस साल की महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) में अच्छे प्रदर्शन से उनका आत्मविश्वास बढ़ा है। भारत को हालांकि तेज गेंदबाज रेणुका सिंह और पूजा वसत्राकर

की कमी खलेगी, जो चोटिल होने के कारण इस श्रृंखला से बाहर हैं। ऐसे में टीम प्रबंधन को अपनी युवा खिलाड़ियों से अच्छा प्रदर्शन की उम्मीद रहेगी। भारतीय टीम की इस दौरे की शुरुआत हालांकि अच्छी नहीं रही और उसे दोनों अभ्यास मैच

में हार का सामना करना पड़ा। अब उसका मुकामबला नैट सिस्वर-बट की अगुआई वाली मजबूत टीम से होगा। इंग्लैंड की टीम में एमी जोस, टैमी ब्यूमॉर्ट, डैनी ब्याट-हाज और साफी एक्लेस्टोन जैसे कई अनुभवी खिलाड़ी हैं।

तेंदुए ने बछड़े को बनाया निवाला, पेली विश्नोई में लगा पिंजरा अभी खाली

C
M
Y
K

शाह टाइम्स संवाददाता कांठ। मुस्लिमपुर नवादा गांव के बाहर मकान बनाकर रह रहे जयपाल सिंह की पशु शाला में घुसकर रात तेंदुए ने एक बछड़े को अपना निवाला बना लिया सुबह अंध खायी बछड़ा देखा तो लोगों के होश उड़ गए ग्रामीणों ने पिंजरा लगाकर तेंदुआ पकड़वाए जाने की मांग उठाई है जबकि सप्ताह भर पहले पेली बिश्नोई गांव में तेंदुआ पकड़ने को लगाया गया पिंजरा अभी तक खाली है। बताते की पेली बिश्नोई गांव में तेंदुआ अब तक चार या पांच पशुओं को अपना शिकार बना चुका है वन विभाग द्वारा पिंजरा गांव के बाहर लगाया गया लेकिन तेंदुआ उसके आसपास भी नहीं फटक रहा है जबकि ग्रामीणों का कहना है कि दिन

छिपते ही तेंदुए की आहट गांव के आसपास दिखाई देने लगती है लोगों का कहना है कि तेंदुए के साथ उसके सावक भी है गांव के कई घरों में तेंदुआ दीवार फांदकर भी घुस चुका है लेकिन वन विभाग द्वारा लगाए गए पिंजरे में तेंदुआ नहीं फसा है। मगर गुरुवार की रात में तेंदुए ने मुस्लिमपुर नवादा गांव में बछड़े को निवाला बनाकर दहशत फैला दी है। ग्रामीण जयपाल सिंह का कहना है कि उनके घर के पीछे पशुशाला बनी हुई है जहां पर उनके पशु बंधे हुए थे बछड़ा काफी बड़ा था इसलिए तेंदुआ उसे उठाकर नहीं ले जा सका मगर उसने वहाँ पर बछड़े को अपना निवाला बना लिया। सुबह अंध खायी बछड़ा देखकर ग्रामीणों में डर व्याप्त हो गया अब नवादा गांव के लोगों ने

भी पिंजरा लगाकर तेंदुए को पकड़वाए जाने की मांग उठाई है।

एसएसपी ने पुलिस लाइन का किया निरीक्षण

मुरादाबाद वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने साप्ताहिक शुक्रवार की परेड का निरीक्षण कर सलामी के पश्चात पुलिसकर्मियों का टर्न आउट चेक किया व फिटनेस परीक्षण, तत्पश्चात पुलिस लाइन्स का निरीक्षण किया। शुक्रवार को वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल के द्वारा परेड सलामी के पश्चात परेड में सम्मिलित अधिकारियों व कर्मचारियों का टर्न आउट चेक किया गया, जिसके पश्चात पुलिसकर्मियों का फिटनेस परीक्षण रिजर्व पुलिस लाइन्स ग्राउंड में लिया गया।

इसके बाद पुलिस कर्मियों को प्रशिक्षण की विभिन्न तकनीक, डील, शस्त्रों आदि की जानकारी दी। इसके पश्चात वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक द्वारा प्रचलित उत्तर प्रदेश आरक्षी भर्ती में पुलिस प्रशिक्षण के दृष्टिगत रिजर्व पुलिस लाइन्स, मुरादाबाद में चल रहे निर्माणाधीन कार्यों/भवनों आदि, मेस, बैंक इत्यादि की साफ-सफाई को देखा गया तथा आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये। तत्पश्चात आदेश कक्ष में विभिन्न गार्ड कमांडरों के रजिस्ट्रारों का अवलोकन किया गया व संबंधित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये।

लंबे समय से चल रहा है ई. कचरे का कारोबार

मुरादाबाद। नगर में ई-कचरे का काला कारोबार खुलेआम जारी है, जो अब शहर के कई इलाकों में भारी प्रदूषण और स्वास्थ्य संकट का कारण बन चुका है। खासकर थाना नागफनी और मुगलपुरा क्षेत्र के 20 से अधिक मोहल्लों में ई-कचरे की भट्टियाँ आबादी के बीच जल रही हैं, जिससे पूरा इलाका शाम होते ही गैस चौंकर में तब्दील हो जाता है। खुलेआम चल रहा ई-कचरे का व्यापार और जलाना नवाबपुरा से लेकर करूला क्षेत्र तक अवैध ई-कचरे की भट्टियाँ चल रही हैं, जहाँ दिल्ली, मुंबई समेत देश के कई राज्यों से प्रतिबोधित ई-कचरा मुरादाबाद लाया जाता है। रोजाना सैकड़ों ट्रक ई-कचरा शहर में प्रवेश करते हैं, जिन्हें रोकने वाला कोई नहीं है। इन भट्टियों से निकलने वाला जहरीला धुआँ स्थानीय लोगों के लिए जानलेवा साबित हो रहा है।

एसडीएम विनय मिश्रा का चन्दौसी को चांदसी नगरी बनाने का प्रयास सराहनीय

शाह टाइम्स ब्यूरो

चन्दौसी। आठ माह पूर्व जब उपजिलाधिकारी विनय मिश्रा ने चार्ज संभाला तो किसी को यकीन नहीं था कि नौकरी के अंतिम पड़ाव पर उपजिलाधिकारी द्वारा ऐसा कार्य किया जायेगा कि लोग अपनी भावी पीढ़ी को भी उदाहरण के तौर पर बतायेंगे कि चन्दौसी में ऐसे कर्तव्यनिष्ठ उपजिलाधिकारी की तैनाती हुई जिन्होंने चन्दौसी को चांदसी नगरी बनाने के लिए अथक प्रयास किये। प्रथम बार जब अतिक्रमण हटाने निकले तो सबसे पहले झड़प फुब्बारा चौक पर अधिवक्ताओं से हुई लेकिन उन्होंने कुशल कार्यशैली से सभी को तर्क के साथ समझाया और अतिक्रमण



हटायी। इसके साथ ही शक्तिनगर, बदायूं चुंगी, तहसील चौराहा आदि स्थानों पर अतिक्रमण हटायी। हालांकि शुरुआत में अवरोध आये लेकिन अपने कार्य के बल पर शक्तिनगर की सड़क इतनी चौड़ी कर दी आगामी दो दशकों के लिए

कोई चौड़ीकरण की आवश्यकता नहीं होगी। अब शक्तिनगर की सड़क का निर्माण किया जा रहा। वहाँ 35वीं रेलवे फाटक के नजदीक स्थित कब्रिस्तान से हटाना वास्तव में असंभव सा था परंतु उपजिलाधिकारी ने वहाँ भी अतिक्रमण हटाकर सड़क को चौड़ा किया। फिलहाल बहजोई में अतिक्रमण हटाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। संभवतः यदि जनवरी माह में महाकुंभ प्रयागराज में नहीं जाते तो चन्दौसी की तस्वीर कुछ और होती लेकिन पुनः चार्ज संभालते के उपरांत अपनी नई ऊर्जा के साथ उपजिलाधिकारी ने चन्दौसी को चांदसी नगरी बनाने का प्रयास किया।

लक्ष्मनगंज वारिसनगर को लेकर सभासदों ने की अधिशासी अधिकारी के साथ बैठक

शाह टाइम्स ब्यूरो चन्दौसी। नगर के मौहल्ला लक्ष्मनगंज वारिसनगर में नगरपालिका का जमीन पर अवैध तरीके से 33 मकान व 01 मस्जिद बना ली गई। अब नगरपालिका द्वारा अवैध मकानों में रहने वालों को नोटिस देकर मकान खाली करने के आदेश दिये गये हैं जिससे कुछ लोगों ने दुकानदारों एवं मकान मालिकों ने निर्माण को स्वयं हटाना शुरू कर दिया है। गुलशन-ए-मुस्तफा स्कूल संचालक द्वारा अतिक्रमण को जद में आ रही दुकान को हटा दिया गया। शुक्रवार को सभासदगण अतिक्रमण हटाने के मापले को लेकर अधिशासी अधिकारी धर्मराज से मिले। सभासदों का तर्क था कि अभी तक नवांगतुक अधिशासी



अधिकारी ने सभासदों के साथ परिचय बैठक भी नहीं की है। सभासद ने कहा कि लक्ष्मनगंज

वारिसनगर में नोटिस किसके आदेश पर भेजे गये हैं। सभासदों को विश्वास में क्यों नहीं लिया गया,

क्या नगरपालिका में सभासदों की कोई भूमिका नहीं है। अधिशासी अधिकारी ने कहा कि मुझे आए हुए

अधिक समय नहीं हुआ है। सभासदों ने कहा कि अतिक्रमण हटाने एवं नोटिस पहुंचने के बाद वार्ड के लोगों ने कहना शुरू कर दिया है कि आप लोग हमारा साथ नहीं दे रहे हैं। अधिशासी अधिकारी मानना था कि पूरे देश में अवैध अतिक्रमण हटाना जा रहा है। शासनादेश है कि चन्दौसी एसडीएम विनय मिश्रा द्वारा शासनादेश का पालन किया जा रहा है। वहीं सभी सभासदों का कहना था कि लक्ष्मनगंज वारिसनगर में हटाए जा रहे मकानों के विक्रय अभिलेख उनका पास है। अब जिन प्रॉपर्टी डीलरों ने रकम लेकर बेनामा किये हैं, वह भी जिम्मेदार हैं। अधिशासी अधिकारी का कहना था कि नगरपालिका ने अवस्थापन के

लिए जगह देख ली है परंतु अवैध रूप से मकान बनाने वालों ने जगह नहीं देखी। इधर नगरपालिका बाबू आशीष गुप्ता ने बताया कि उन्हें नगरपालिका अधिकारियों के आदेश पर अवैध रूप से कब्जा करने वालों के पास नोटिस भेजे गये हैं। बैठक में सभासदों ने लक्ष्मनगंज वारिसनगर के 34 मकानों के संबंध कोई बीच का रास्ता निकालने को कहा कि सभासदों जाकिर सलमानी ने नगरपालिका की सर्किल रेट पर मकान मालिक जो कब्जाधारी हैं, उन्हें संपादित करा है पर ईओ ने कहा कि यह कानूनी व्यवस्था नहीं है। बैठक में सभासद जाकिर सलमानी, नवकांत शर्मा, अनुराग अग्रवाल, सचिन रस्तोगी, रियाज राकेश मौर्य आदि मौजूद रहे।

अंबेडकर युवक संघ ने जताया विरोध की शिकायत

शाह टाइम्स संवाददाता बिलाारी। मनकुला में ग्राम समाज की भूमि पर बने डा भीमराव अंबेडकर सामुदायिक केंद्र बारात पर के भवन पर ग्राम प्रधान व सचिव ने ग्राम पंचायत सचिवालय लिखवा दिया। इसको लेकर अंबेडकर युवक संघ के लोग भड़क गए। पदाधिकारियों ने तहसील पहुंचकर एसडीएम को ज्ञापन देकर कहा कि इस मामले को लेकर कई बार ब्लॉक में भी शिकायत की। लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। जल्द ही ग्राम पंचायत सचिवालय नहीं हटया गया तो वह आंदोलन करने को बाध्य होंगे। ज्ञापन देने वालों में अध्यक्ष डॉ जगतपाल सिंह, रनवीर सिंह, सुरेंद्र सिंह, रोहतास सिंह आदि थे।

नगर में पहली मोहर्रम का अलम मुबारक जुलूस निकला

देर रात तक शिया समुदाय के अजाखानों में मजलिसों व सुन्नी समुदाय के आजाखानों में शहादत नामों की महफिलों का सिलसिला रहा कायम

शाह टाइम्स संवाददाता कुंदरकी। नगर में पहली मोहर्रम का अलम मुबारक का जुलूस निकला नम आँखों के बीच कर्बला पर हजरत इमाम हुसैन के शोक के प्रतीक काला अलम नस्ब किया गया। शुक्रवार को सुबह से ही पहली मोहर्रम की नवासा ए रसूल हजरत इमाम हुसैन और उनके 72 साथियों की शहादत के गम में शिया समुदाय के इमामबाडों व आजाखानों में मजलिसों का सिलसिला शुरू हो गया था जोकि देर रात तक चला / शुक्रवार की नमाज के बाद पूर्व सभासद कंबर अब्बास नकवी के आजाखाने पर मजलिस में गुलाम अब्बास रिजवी ने मरशिया पढ़ा तथा काशिफ अब्बास काजमी ने मजलिस खिताब कराते हुए कहा रसूल ए करीम और अहलेबेत की ज़िंदगी हमारे लिए नमूना ए अमल है और अहलेबेत की मुहब्बत ही जन्मत की कुजी है। हजरत इमाम हुसैन ने ईसानियत को बचाने और



जियो और जीने दो का पैगाम देते हुए ईसानियत को बचाने के लिए कुर्बानी पेश की उस कुर्बानी को हमेशा हमेशा याद रखा जाएगा। मजलिस के बाद हाथ हुसैन हाथ अब्बास की सदाओं के साथ अलम मुबारक का जुलूस बरामद हुआ तो आजादरारों की आँखें नम हो गईं / अलम मुबारक व मातमी जुलूस देर शाम कर्बला पहुंचा और कर्बला पर नम आँखों के बीच नगर स्थित कर्बला पर हजरत इमाम हुसैन के शोक के प्रतीक लब्बेक या हुसैन की सदाओं के साथ काला अलम नस्ब किया गया। जुलूस के दौरान नोहा ख्वानी अंजुमन अकबरी अंजुमन शाने हैदरी अंजुमन अल मुर्तजा और रजा अस्करी, साजिद रजा, अयान, अली मेहरदी ने की तथा जुलूस आयोजक कंबर अब्बास नकवी ने आभार व्यक्त किया तथा जुलूस में शांति व्यवस्था के लिए कुंदरकी थाना प्रभारी व पुलिस चौकी ईंचार्ज पुलिस बल के साथ मौजूद रहे।

समस्याओं का नहीं हो पा रहा समाधान, मिल रही तारीख पर तारीख, भाकियू ने दी अधिकारियों को चेतावनी

शाह टाइम्स संवाददाता कांठ। बार-बार ज्ञापन और वार्ता किए जाने के बावजूद भी किसानों की समस्याएं कम नहीं हो पा रही है हर वार्ता में अधिकारियों की ओर से तारीख पर तारीख दी जा रही है इस बार तहसील अध्यक्ष दर्शन सिंह ने 11 जुलाई की वार्ता में अधिकारियों को बंधक बनाने की चेतावनी भी दी है। आज तहसील में भारतीय किसान यूनियन और अधिकारियों के बीच उप जिला अधिकारी संत दास पवार ने वार्ता कराई जिसमें गलत बिलों को ठीक किए जाने बिना ही न मिलने स्मार मीटर द्वारा ज्वाला बिल निकलना खलीलपुर में ट्रांसफार्मर बार-बार फूटने गन्ना क्रय केंद्रों के प्लेटफार्म बंद करने उचित समय पर



कोटनाशक दवाइयाँ किसानों तक पहुंचाने एवं गन्ना क्रय केंद्रों पर बनने वाली पच्ची को 24 कुंतल किए जाने आदि मांगे काफी समय से लंबित

भी हर बार की तरह किसानों को आश्वासन और तारीख मिल गई। किसान यूनियन के नेता चौधरी ऋषिपाल सिंह तहसील अध्यक्ष दर्शन सिंह वरिष्ठ उपाध्यक्ष हरदीप सिंह आदि ने साफ कहा कि 11 जुलाई को यदि इसी तरह की वार्ता के दौरान किसानों की समस्याओं का समाधान नहीं होता है। तो इन समस्याओं के समाधान होने तक संबंधित विभाग के अधिकारियों को बंधक बनाया जाएगा बैठक में अरविंद बिश्नोई जॉनी सतवीर सिंह मान विशाल हिंदू भविष्य बिश्नोई प्रिंस चौधरी महेश ठाकुर रामकला गुजर धर्मपाल सैनी पंकज सिंह भानु बिश्नोई सलीम अहमद ओमराज सिंह महेंद्र प्रदीप कुमार सोनु आदि लोग मौजूद रहे।

अंबेडकर के सम्मान में डीएम से मिले



मुरादाबाद। बहुजन समाज पार्टी के जिला अध्यक्ष एडवोकेट निर्मल सिंह सागर जिलाधिकारी से मिले सिर्फ हाउस मुरादाबाद में दाएं और बनी दीवार पर भारतीय संविधान के निर्माता पुन्य बाबा साहब भारत रत्न डॉ भीमराव अंबेडकर जी के फोटो के नीचे उनका नाम नहीं लिखा गया व भारत रत्न सरदार वल्लभभाई पटेल जी व



डिलारी। शुक्रवार को ब्लॉक संसाधन केंद्र डिलारी के सभागार में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान के तहत नियम टीकाकरण के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई, बैठक की अध्यक्षता ए डी ओ पंचायत चंद्रपाल सिंह ने की, बैठक का संचालन, सतवीर सिंह ने किया, प्रधानमंत्री मातृत्व प्रोत्तन अभियान के तहत गर्भवती महिलाओं की निशुल्क जांच, उपचार, अल्ट्रासाउंड आधुनिक गोल्डन काई, स्वास्थ्य समिति सुचारु संच, लान नियमित टीकाकरण आदि, की जानकारी दी गई, इस मौके पर सुशील कुमार शर्मा, महेश सिंह, आनंद अहमद, योगेंद्र सिंह, संगीता आदि मौजूद रहे।

विवाहिता ने प्रेमी पर लगाया ब्लैकमेलिंग कर बलात्कार करने का आरोप, एसएसपी के आदेश पर रिपोर्ट दर्ज

बिलाारी। कोतवाली क्षेत्र के निकटवर्ती गांव निवासी एक विवाहिता ने वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक को दिए गए प्रार्थना पत्र में कहा है कि उसका गांव की ही साजिद नाम के युवक के साथ-साथ साल से प्रेम प्रसंग चल रहा था इस दौरान युवक ने शादी का झांसा देकर कई बार उसके साथ बलात्कार किया बताया कि जब उसके मां-बाप को इस बात का पता चला तब उन्होंने ऑनर किलिंग की धमकी देते हुए उसकी शादी कोतवाली क्षेत्र के ही एक गांव निवासी युवक के साथ कर दी आरोप लगाया की शादी के बाद उसके प्रेमी साजिद उसकी ससुराल में मिलने पहुंचा जहां वह उसे अपने साथ धाकड़ ले जाने का दावा बनता रहा इसके बाद वह अपने मायके आ गई जहां से साजिद उसे अपने साथ होटल में ले गया जहां उसने उसके साथ बलात्कार किया।आरोपी को पास उसके अश्लील फोटो और वीडियो है। वहीं पुलिस ने वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के आदेश पर आरोपी को खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

राष्ट्रगीत ‘वंदे मातरम’ के रचयिता बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय की जयंती मनाई

शाह टाइम्स ब्यूरो चन्दौसी। महापुरुष स्मारक समिति एवं सर्वसमाज जागरूकता अभियान (भारत) के संयुक्त तत्वावधान में अंग्रेजों के विरोध में लिखने वाले भारत का राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम' के रचयिता, बांग्ला साहित्य के कवि, उपन्यासकार, गद्यकार, पत्रकार बंकिमचंद्र चटर्जी (बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय) की जयंती मनाई गई। सर्वप्रथम मुख्य वक्ता अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष कवि माधव मिश्र ने चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। कवि माधव मिश्र ने कार्यक्रम का संबोधित करते हुए कहा कि भारत की आजादी एक बहुत लम्बे स्वाधीनता आन्दोलन की देन है, इसमें तत्कालीन राजनेताओं, राजाओं, महाराजाओं, देशभक्तों, क्रान्तिकारियों की ही नहीं बल्कि साहित्यकारों, कवियों, वकीलों

और विचारार्थियों, सामाजिक संगठनों का भी विशेष योगदान रहा। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की आजादी की लड़ाई में साहित्य मनीषी बंकिमचंद्र चटर्जी ने 'वंदे मातरम' जैसी अमर रचना से न केवल आजादी की लड़ाई में नई जान फूँकी बल्कि भारतीय भाषाओं के साहित्य को जन्मवृत्ति देते हुए नए आयाम प्रदान किए। साहित्य मनीषी बंकिमचंद्र चटर्जी के द्वारा 1874 में अंग्रेजों के विरोध में लिखा गया अमर गीत 'वंदे मातरम' न केवल भारतीय स्वाधीनता संग्राम का मुख्य उद्घोष बना, बल्कि 1937 में देश का 'राष्ट्र गीत' बना। 'वंदे मातरम' को लिखकर बंकिमचंद्र चटर्जी सदैव के लिए अमर हो गए। 'वंदे मातरम' केवल एक गीत ही नहीं है, बल्कि आजादी की संपूर्ण गाथा है। 1874 से लगातार आज भी करोड़ों युवा दिलों में धड़कत बन कर धड़क रहा है। निःसंदेह स्कूल में पढ़ने



के दौरान 'वंदे मातरम' सबने सुना होगा लेकिन 'वंदे मातरम' के रचयिता बंकिमचंद्र चटर्जी के जीवन संघर्ष के बारे में कम लोग ही जानते हैं। वह बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। बंकिमचंद्र चटर्जी के उपन्यास का भारत की सभी भाषाओं में अनुवाद किया गया है। यह

हुआ था। पिता यादव (जादव) चन्द्र चट्टोपाध्याय और माता दुर्गा देवी थीं। चटर्जी की शिक्षा हुगली कॉलेज और प्रेसिडेंसी कॉलेज कोलकाता में हुई। 1857 में बीए पास किया और 1869 में कानून की डिग्री प्राप्त की। वह प्रेसिडेंसी कॉलेज कोलकाता से बीए की उपाधि लेने वाले पहले भारतीय थे। वह डिप्टी मजिस्ट्रेट बने। वह बंगाल सरकार में सचिव पद पर भी रहे। उन्हें रायबहादुर की उपाधि दी गई थी। उन्होंने 1874 में देशभक्ति गीत 'वंदे मातरम' की रचना की जिसे बाद में आनंदमठ नामक उपन्यास में शामिल किया गया। साप्ताहिक समाचार पत्र संगवा प्रभाकर में लेख प्रकाशित हुए। चटर्जी का विवाह राजलक्ष्मी देवी के साथ हुआ। आपके तीन पुत्रियां थीं। 1865 में 'दुर्गावती' उपन्यास, 1869 में 'मृणालिनी' उपन्यास प्रकाशित हुआ। 1877 में चंद्रशेखर नामक उपन्यास

और 1877 में ही रजनी नाम का साहित्य प्रकाशित हुआ जिसे बंकिमचंद्र चटर्जी की आत्मकथा कहा जाता है। चटर्जी का 1882 में विश्वविख्यात उपन्यास आनन्दमठ प्रकाशित हुआ। 08 अप्रैल 1894 को कोलकाता में स्वर्णवास हो गया। 1837 में वन्दे मातरम को राष्ट्रीय गीत का दर्जा मिला। वन्दे मातरम, वन्दे मातरम! सुलजाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्! इस अवसर पर डा० महेश कुमार गुप्ता, डा० अरविन्द कुमार गुप्ता, डा० निशा गुप्ता, डा० नितिन कोशिक, अंकित वाण्यार, पंकज वाण्यार, अनमोल मिश्रा, विकास यादव, सरोज कुमारी, शिवानी, राकेश कुमार, सपना अंशु कुमारी, तिरेश, सचिन,सत्यपाल सिंह, रवि कुमार, अखिलेश कुमार, लता, ओमी, ब्रह्म सिंह, शोभल, मनीषा, विजय सिंह, इमरान, समरीन, मौजिस्म, शमा, हरकेश, जफर फैजान आदि मौजूद रहे।

हर्बल इम्युनिटी बूस्टर

यकान, कमजोरी दूर करें, अनेक रोगों से बचाए

1980 से प्रसिद्ध

एनर्जिक-31

स्वास्थ्यवर्धक कैप्सूल

amazon पर भी उपलब्ध है

फोन नं० 0591-3554385 E-mail:energetic31@gmail.com

शाह टाइम्स

सम्पादकीय

शनिवार , 28 जून 2025

स्थायी शांति की जरूरत

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह का यह कहना बिल्कुल सही है कि जब तक जटिल मुद्दों का समाधान नहीं हो जाता, तब तक चीन सीमा पर स्थायी शांति स्थापित नहीं हो सकती। असल में इस समय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह शंघाई सहयोग संगठन की बैठक में हिस्सा लेने के लिए चीन गए हैं। गुरुवार को हुई बैठक से इतर उन्होंने चीन के रक्षा मंत्री एडमिरल डॉना जुन के साथ द्विपक्षीय बैठक की। इस बैठक में स्थापित व्यवस्था को पुनः सक्रिय कर सीमा विवादों के स्थायी समाधानों पर बल दिया। शुक्रवार को भारतीय रक्षा मंत्रालय ने एक वक्तव्य जारी किया जिसमें कहा गया कि भारत-चीन सीमा पर शांति सौहार्द बनाए रखने की बेहद जरूरत है। अच्छी बात यह है कि श्री सिंह ने द्विपक्षीय संबंधों में सामान्य स्थिति बहाल करने के लिए दोनों पक्षों द्वारा किए जा रहे कार्य पर संतोष प्रकट किया। रक्षा मंत्री ने सीमा प्रबंधन पर जोर दिया। रक्षा मंत्रालय के अनुसार दोनों नेताओं ने परस्पर लाभ के साथ-साथ एशिया और दुनिया में स्थिरता के लिए सहयोग बढ़ाने पर भी बल दिया। जैसाकि हम जानते हैं 2020 में सीमा पर उस समय गतिरोध उत्पन्न हो गया था, जब वहां सैनिक झड़प हो गई थी। तभी से ही अविश्वास का माहौल बना हुआ है। हालांकि अभी जमीन पर काम होना बाकी है, लेकिन जिस तरह दोनों मंत्रियों ने मौजूदा व्यवस्थाओं के माध्यम से सैनिकों की वापसी, तनाव कम करना, सीमा प्रबंधन और सीमांकन मुद्दों पर प्रगति हासिल करने के लिए विभिन्न स्तरों पर परामर्श जारी रखने पर सहयोग की बात की है वह एक अच्छा संकेत है। भारतीय रक्षा मंत्री चीन के रक्षा मंत्री के साथ ही बल्कि रूसी रक्षा मंत्री बेलारूस, तजाकिस्तान, कजाकिस्तान के रक्षा मंत्रियों से भी मिल रहे हैं और आपसी सहयोग के रास्ते भी तलाश रहे हैं। साथ ही वह ऑपरेशन सिंदूर के विषय में भी भारत के दृष्टिकोण को रख रहे हैं और बता रहे हैं कि आखिर भारत को ऑपरेशन सिंदूर अभियान क्यों चलाना पड़ रहा है। इसमें कोई दोराय नहीं है कि जिस तरह इस समय तनाव बना हुआ है, इजरायल हमास संघर्ष, रूस-यूक्रेन और अब हाल ही में ईरान-इजरायल संघर्ष से इस बात का और महत्व बढ़ गया है कि भारत चीन के बीच तनाव को कम किया जाए। क्योंकि दुनिया और अधिक तनाव झेलने की स्थिति में नहीं है अगर और कोई संघर्ष छिड़ जाता है तो यह पूरी दुनिया के लिए विनाशकारी साबित हो सकता है। ऐसे में जरूरी हो जाता है कि चीन व भारत अपने बीच पनप रही अविश्वास की खाई को समय के साथ-साथ बढ़ाने के बजाए इसको कम करने का काम करें। इसी में भारत चीन ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया का हित छिपा है। यूं भी हम सभी ने देख लिया कि कोई भी युद्ध समस्याओं को जन्म ही देता है। किसी समस्या का समाधान देता दिखाई नहीं देता। चीन इस बात को जितनी जल्दी समझे, उतना ही बेहतर है, क्योंकि जहां तक बात भारत की है, भारत हमेशा से ही विस्तारवादी नीति के खिलाफ रहा है और कभी भी उसने किसी देश पर हमला नहीं किया। यही अपेक्षा भारत दूसरे देशों से भी अपने प्रति करता है। भारत ने साफ कह दिया है कि कोई भी दोस्ती एकतरफा नहीं हो सकती। समानता के आधार पर अपनाया गया फार्मूला ही कारगर साबित होगा।

विदेश भेजने के नाम पर रूसी सेना में भर्ती

प्रधानमंत्री मोदी के अमृत काल में विदेश भेजने के नाम पर जमकर धंधा चल रहा है और देश के युवाओं से भारी भरकम राशि वसूल कर उन्हें धोखे से यूक्रेन से लड़ने के लिए रूसी सेना में भर्ती कराया जा रहा है, अमृत काल में जिस तरह के काम हो रहे हैं, वह बेहद चिंताजनक है, देश के युवाओं को विदेश जाने के नाम पर बहला फुसला कर उनसे मोटी रकम ऐंटी जा रही है और उन्हें धोखे से रूस भेजकर सेना में भर्ती कर सीधे युद्ध के मैदान में भेजा जा रहा है, क्या सरकार रूस से पुछेगी कि बिना अनुमति के हमारे लोगों को वहां की सेना में भर्ती क्यों किया गया और क्या सरकार ने अपने लोगों को वापस लाने का कोई प्रयास किया है। सरकार ने धोखेबाज एजेंटों पर कार्रवाई नहीं की।

–अमरिंदर सिंह बरार, लोकसभा सांसद, कांग्रेस



अगर आप सजग न रहे तो सत्ता और मीडिया का खतरनाक गठजोड़ आपको नफरती बना देगा। मीडिया आपमें शोषक के प्रति ही सहानुभूति पैदा कर देगा और जिसका शोषण हो रहा है, उसे अपराधी करार देगा। 2014 के बाद से भारत के मेन स्ट्रीम मीडिया ने सत्ता के साथ गलतबहियां करके यही किया है। मीडिया ने अधोषित आपातकाल, अन्याय, गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी और शर्म जैसे विषयों को गौरव का विषय बना दिया और तुरां यह कि मीडिया आपको 1975 के उस आपातकाल की ओर ले गया, जिसका समर्थन ऐसे लोगों ने किया था, जो आज फर्जी राष्ट्रवाद का सिंदूर लगा कर ढहल रहे हैं।

जनता के प्रति जवाबदेह न होना। 11 सालों में एक भी प्रेस कॉन्फ्रेंस न करना। उत्तर प्रदेश और बिहार में नौकरियां मांगने व रिक्त पदों को भरने की मांग को लेकर धरना दे रहे और प्रदर्शन करने वाले छात्र-छात्राओं पर बर्बर लाठीचार्ज कर देना। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रदर्शनकारी छात्रों को उनके किराए के मकानों में घुसकर पीटना, वरिष्ठ नागरिकों से रेल की सुविधा छीन लेना, पुरानी पेंशन व्यवस्था को समाप्त कर देना। किसी भी आम आदमी की पीड़ा को पूरी तरह से नजर अंदाज कर देना। इसे संविधान प्रदत्त मौलिक अधिकारों का हनन माना जाना चाहिए या नहीं। अखबारों और चैनलों के मालिकों को खरीद लेना। जनता के सरोकारों के विषयों/खबरों को पूरी तरह से न्यूज चैनलों से गायब कर देना इसे इमरजेंसी की किस श्रेणी में रखा जाए या यह चर्चा केवल 1975 वाली दो साल की इमरजेंसी पर ही होगी या 11 सालों से अधोषित इमरजेंसी पर होगी? अपने ही देश के नागरिकों को सत्ता के लिए आपस में लड़ाकर रखना। हेट स्पीच पर केवल एक पक्षीय कार्रवाई को अधोषित इमरजेंसी माना जाए या न माना जाए? न्यायिक व्यवस्था और उसकी न्यायिक परिभाषा को धूलधूसरित कर देना, रिटायर्ड जजों को लालच या धमकी देना और फिर पद से नवाजा जाना। यह किस तरह की इमरजेंसी के तहत आएगा?

निर्वाचन आयोग की निष्पक्षता वर्तमान में शून्य हो चुकी है। एक पूरी की पूरी संवैधानिक संस्था को ही लगभग खिलौना बनाकर रख देना। इसे क्या नाम दिया जाए? बार-बार वोटर लिस्ट में व्यापक गड़बड़ियां करके अपने पक्ष में खेल खिलवाना। क्या माना जाए? पहले हर विदेशी दौरों पर मीडिया साथ जाता था और उस दौर से देश को क्या लाभ होंगे, किन-किन विषयों पर बात हुई। उसकी जानकारी साझा होती थी। यह सब 11 सालों से बंद क्यों हुआ? सिर्फ गाना-बजाना।

हर मोबाइल फोन में

लगभग 100-200

मिलीग्राम चांदी होती है।

इसी तरह, एक सामान्य

लैपटॉप में 350

मिलीग्राम चांदी उपयोग

होती है, और वर्तमान में

भारत में लगभग पांच

करोड़ लैपटॉप हैं। यदि

भारत में मोबाइल फोन

और लैपटॉप इतनी

संख्या में हैं तो आप

अंदाजा लगा सकते हैं

कि पूरी दुनिया में इनकी

संख्या कितनी होगी।

अनुमान है कि मोबा.

इल-लैपटॉप या ऐसी ही

अन्य चीजों में पूरे विश्व

में लगभग 7275 मीट्रिक

टन चांदी लगती है,

लेकिन (इन उपकरणों

के खराब होने पर

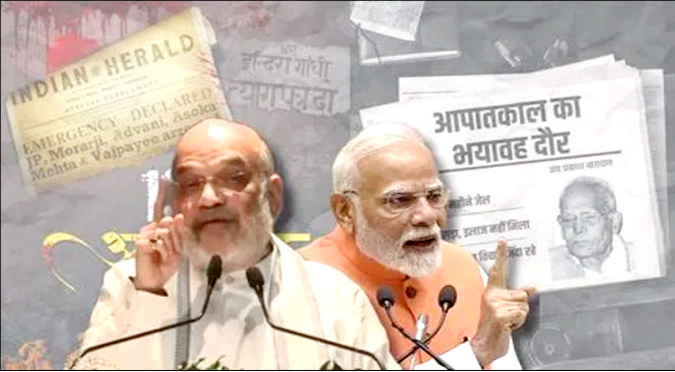
इनसे) बमुश्किल 15

प्रतिशत चांदी ही वापस

निकालकर पुनर्चक्रित

की जाती है।

वो आपातकाल था तो ये क्या है...



ढोल-मंजीरा लेकर नचनिया बने पत्रकारों के झुंडों को प्रश्न देना। इसे इमरजेंसी के खांचे में फिट किया जा सकता है कि नहीं? यूट्यूब चैनलों पर जो पत्रकार खबरों और विश्लेषणों को आम जनता से साझा कर रहे हैं। उन्हें ब्लाक क्यों किया जा रहा है? ईडी, सीबीआई, इनकम टैक्स जैसी एजेंसियां भ्रष्टाचार रोकने के अपने मूल उद्देश्य से भटक कर सत्ता बनाए रखने में कैसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगीं, इसे कौन सा आपातकाल माना जाए? विकास के नाम पर जंगलों को एक तरफा काट देना। लोगों की जमीनों का बल पूर्वक अधिग्रहण कर लेना। लोगों की झुग्गी-बस्तियों को बुलडोजरों तले चंगेज खान की तरह रौंद देना। पीड़ितों पर ही FIR करा कर जेल भेज देना। आदिवासियों की सैकड़ों की संख्या में हत्या और मीडिया की आश्चर्यजनक व रहस्यमय चुप्पी को किस आपातकाल के संदर्भ में देखा जाए?

कुछ रोज पहले सुप्रीम कोर्ट ने चिंता जताई कि लाखों बेकसूर जेलों में हैं, जो कि भयावह है। यह क्या है? एक उदाहरण पेश है—एनडीटीवी के मालिक प्रवण राय पर सरकार के इशारे पर दर्ज केंस हुआ और छापा पड़ा। फिर जांच शुरू हुई। मीडिया का एक दूसरा वर्ग जो चुटने टेक कर टेकचंद बन चुका था, अब बारी एनडीटीवी की थी, क्योंकि अधोषित आपातकाल में ऊंची आवा. जें और सवाल पसंद नहीं किए जाते। लगा कि एनडीटीवी ने मालिकाना ने बहुत बड़ा आर्थिक घोटाला किया है। प्रणव राय ने आखिरकार हार मान ली और एनडीटीवी एकमेव राष्ट्रीय उद्योग।

पति ने टेकओवर कर लिया। धीरे-धीरे सारे असल पत्रकार वहां से भगा दिए गए या खुद ही छोड़कर चले गए। यहां तक भी ठीक था, लेकिन एकमेव राष्ट्रीय उद्योगपति के चैनल खरीदते ही प्रणव राय के केंस में क्लोजर रिपोट दाखिल हो गईं। केंस खत्म हो गया।।असल सवाल वहीं का वहीं खड़ा है कि अगर प्रणव राय दोषी थे तो छूटे क्यों? अगर दोषी नहीं थे तो यह सब हुआ हुआ क्यों? 2014 के बाद आपको ऐसे दर्जनों केंस मिल जाएंगे। अगर आप खिलाफ थे और विपक्ष में थे तो ईडी थी, सीबीआई थी, इनकम टैक्स था, लेकिन फिर वे सारे के सारे भ्रष्टाचारी अचानक उधर से इधर आ जाते हैं और फिर सब कुछ समाप्त। ऐसा भारत के इतिहास में कब होता था? इसे कौन सा आपातकाल माना जाए?

दरअसल, 1975 वाली घोषित इमरजेंसी से सबसे ज्यादा नाराज कौन था? घोषित इमरजेंसी से सबसे ज्यादा तकलीफ किसको थी? आम आदमी को तो कोई दिक्कत नहीं थी।।ट्रेनें एकदम राइट टाइम चलने लगी थीं, सरकारी कार्यालयों में लोग बिलकुल राइट टाइम आने लगे थे, घूस मांगने की हिम्मत जवाब दे गई थी। अनाज में मिलावट और घटौली बंद हो गई थी। फिर परेशान कौन था? परेशान थे जमींदार। परेशान थे सामंतवादी। जमींदारों और भूस्वामियों की संपत्तियों पर आंच आई और उनका प्रभाव कम हुआ। तमाम जमीनें भूमि विहीन किसानों, खेतियों की मिलीं। निजी बैंक खोल कर जनता का पैसा हड़पने वाले परेशान हुए, क्योंकि 1969 में 14 प्रमुख



पवन सिंह

वाणिज्यिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया था (1980 में 6 और बैंकों का राष्ट्रीय करण हुआ) इससे बैंकों के दिवालिया होने का खतरा खत्म हुआ छोटे किसानों को भी कृषि, छोटे उद्योगों और ग्रामीण क्षेत्रों को ऋण प्रार्थमिकता से मिलने लगे और साहूकारों की दुकान बंद हुई। अब इससे नाराज कौन था? निजी बैंकर और उद्योग. पतियों ने अपना नियंत्रण बैंकों पर से खो दिया और इसे सरकारी हस्तक्षेप माना। रूढ़िवादी अर्थशास्त्री परेशान थे उनका मानना था कि इससे नौकरशाही का प्रभाव बढ़ेगा।

जबकि गरीब, किसान और समाजवादी विचारधारा वाले लोग इसे समानता और आर्थिक न्याय की दिशा में कदम मानते थे। पूर्व राजघरानों को मिलने वाले प्रिवी पर्स (विशेष भत्ते) को समाप्त कर दिया गया जो स्वतंत्रता के समय राजाओं के साथ हुए समझौते का हिस्सा था। इससे नाराज कौन था? अतिम और आकाट्य सत्य यह है कि होमी जहांगीर भाभा की हत्या में अमेरिकी खुफिया एजेंसी CIA की जो भूमिका थी, वह भयावह थी। CIA की पूरी योजना ही इस आजाद देश को तबाह करने की थी और समय रहते ही रूस द्वारा इनपुट्स मिले और आपातकाल लगा। बाद में उसके लिए माफ़ी भी मांग ली गई और आम जनता ने बाद में बंपर वोटों से वापस आपातकाल लगाने वालों को सत्ता सौंप दी।

फिलहाल उपरोक्त अनेक सुधारों से भारत के गरीबों के बीच से एक बहुत बड़ा वर्ग उभरा, वह था मध्यम और उच्च मध्यम वर्ग, जो आज 1975 को गालियां बकता हुआ वहीं पहुंच चुका है जहां से वह मध्यम वर्ग के सुख तक आया था। अब तय आपस को करना है कि घोषित आपातकाल सही था या अधोषित आपातकाल। 500 रुपये और चार पृष्ठों लेकर अगर आप बिना सोचे-समझे भीड़ के साथ नाच-गा रहे हैं तो फिर इसी में मस्त रहिए, क्योंकि कुछ लोगों को घी हजम नहीं हुआ करता।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

खाद्य तेल की मदद से ई-कचरे से चांदी निकालें

सोने के बाद चांदी सबसे कीमती धातु मानी जाती है। कई परिवारों में खुशी के मौकों पर सोने-चांदी की चेन-अंगूठियां ली-दी जाती हैं (या पहनी जाती हैं)। बेशक, चांदी सोने से सस्ती है, लेकिन जब उद्योग और ऊर्जा उत्पादन में उपयोग की बात आती है तो तौर्जा सोने को पछाड़ देती है। पूरे भारत में चांदी का इस्तेमाल छतों पर लगे सौर पैनलों के माध्यम से सौर ऊर्जा को कैद करने में किया जाता है। इससे पूरे देश में सालाना लगभग 108 गीगावॉट स्वच्छ एवं हरित बिजली पैदा होती है। यह मात्रा कोयले से पैदा होने वाली बिजली की लगभग 10 प्रतिशत है। इसके अलावा, भारत की लगभग 1.4 अरब आबादी द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले मोबा. इल फोन में विद्युत चालन और भंडारण के लिए चांदी का इस्तेमाल किया जाता है। हर मोबाइल फोन में लगभग 100–200 मिलीग्राम चांदी होती है। इसी तरह, एक सामान्य लैपटॉप में 350 मिलीग्राम चांदी उपयोग होती है, और वर्तमान में भारत में लगभग 5 करोड़ लैपटॉप हैं।

यदि भारत में मोबाइल फोन और लैपटॉप इतनी संख्या में हैं तो आप अंदाजा लगा सकते हैं कि पूरी दुनिया में इनकी संख्या कितनी होगी। अनुमान है कि मोबाइल-लैपटॉप या ऐसी ही अन्य चीजों में पूरे विश्व में लगभग 7275 मीट्रिक टन चांदी लगती है, लेकिन (इन उपकरणों के खराब होने पर इनसे) बमुश्किल 15 प्रतिशत चांदी ही वापस निकालकर पुनर्चक्रित की जाती है।

यदि भारत में मोबाइल फोन और लैपटॉप इतनी संख्या में हैं तो आप अंदाजा लगा सकते हैं कि पूरी दुनिया में इनकी संख्या कितनी होगी। अनुमान है कि मोबाइल-लैपटॉप या ऐसी ही अन्य चीजों में पूरे विश्व में लगभग 7275 मीट्रिक टन चांदी लगती है, लेकिन (इन

उपकरणों के खराब होने पर इनसे) बमुश्किल 15 प्रतिशत चांदी ही वापस निकालकर पुनर्चक्रित की जाती है।

जब कोई फोन या कंप्यूटर खराब हो जाता है या फेंक दिया जाता है तो उसमें मौजूद चांदी भी कूड़े में चली जाती है। काश। हम इन बेकार उपकरणों से यह चांदी वापिस निकाल पाते। यह तो साफ है कि स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन में चांदी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस संदर्भ में मारिया स्मिरनोवा एक हालिया रिपोट स्प्रॉट सिल्वर रिपोट में लिखती हैं कि जैसे-जैसे अधिक. ाधिक देश सौर पैनलों का उपयोग करके अक्षय ऊर्जा बनाएंगे, वैसे-वैसे चांदी की मांग में लगातार वृद्धि होगी। वे आगे बताती हैं कि भले ही कुछ समूह सौर ऊर्जा के लिए अन्य धातुओं (जैसे लीथियम, कोबाल्ट और निकल) का उपयोग करने पर विचार कर रहे हैं , फिर भी स्वच्छ और हरित ऊर्जा उत्पादन में चांदी एक प्रमुख भूमिका निभाती है और, इस साल चांदी की मांग में लगभग 170 प्रतिशत वृद्धि होने की उम्मीद है। इसके अलावा, कारों, बसों और ट्रेनों में ईंधन के रूप में पेट्रोल की जगह सौर ऊर्जा का उपयोग होना शुरू हुआ है। स्मिरनोवा आगे बताती हैं कि अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी का अनुमान है कि 2035 तक, दुनिया भर में बिकने वाली हर दूसरी कार इलेक्ट्रिक होगी।

इसका मतलब होगा कि हमें और चांदी चाहिए होगी। इसी संदर्भ में, फिनलैंड के प्रोफेसर टिमो रेपो और उनके साथियों ने अपने शोधपत्र में चांदी को पुन:चक्रित

करने की एक कुशल रासायनिक विधि प्रस्तुत की है। इस विधि में कार्बनिक वसीय अम्लों (जैसे लिगोलैनिक या ऑलिक एसिड) का उपयोग चांदी निकालने में किया गया है। यह कार्बनिक वसीय अम्ल तिलहन, मेवों और वनस्पति तेलों जैसे जैतून का तेल या मूंगफली का तेल में पाए जाते हैं, जिनका दैनिक भोजन में उपयोग होता है।

गौरतलब है कि इलेक्ट्रॉनिक कचरे से चांदी को पुनरू प्राप्त करना आसान नहीं हैरूप प्रबल अम्लों और साइनाइड के उपयोग की वजह से इस प्रक्रिया में विषाक्त पदार्थ पैदा हो सकते हैं। अन्य धातुओं और मिश्र धातुओं से चांदी को अलग करने की पारंपरिक विधियों का उपयोग करने की बजाय उपरोक्त समूह ने सूरजमुखी, मूंगफली और अन्य तेलों में प्रचुर मात्रा में पाए जाने वाले साधारण असंतृप्त वसीय अम्लों के उपयोग से चांदी को अलग करके पुनरू हासिल करने की एक विधि विक. सित की है। समूह ने पाया कि इनका पुनर्चक्रण किया जा सकता है और इस प्रकार यह कार्बनिक विलायक और जलीय माध्यम से बेहतर हैं। शोधकर्ताओं ने इस विधि को शहरी खनन में भी कारगर पाया है, जहां कबाड़ या कचरे में फेंके गए कंप्यूटर के मदरबोर्ड और अन्य इलेक्ट्रॉनिक पुर्जों के कचरे से चांदी पुनरू निकाली जा सकती है। शोध दल का निष्कर्ष है, व्वसीय अम्ल बहुमूल्य बहु-धातु अपशिष्ट के निपटान का उन्नत माध्यम बन सकते हैं।

—डॉ. डी. बालसुब्रमण्यन

(स्रोत फीचर्स)

सिंगापुर: एक भीड़ भरे शहर में हरियाली की तलाश

सिंगापुर मात्र 730 वर्ग किलोमीटर का द्वीप देश है, आबादी करीब 60 लाख। इसके घनी शहरी बसाहत के बीच कुछ नाजुक प्राकृतिक क्षेत्र भी हैं, जिन्हें बचाने की जरूरत है। ऐसा ही एक जंतु जोहोरा सिंगापोरेन्सिस है। यह एक दुर्लभ, निशाचर, मिठे पानी का केकड़ा है और केवल सिंगा. पुर के आरक्षित क्षेत्रों में जलधाराओं के आसपास पाया जाता है।

2008 में जब इसकी संख्या तेजी से घटने लगी, तब यह पर्यावरणीय चिंता का विषय बन गया। एक छात्र द्वारा इसे ढूंढने के असफल प्रयासों ने सरकार और वैज्ञानिकों को सतर्क किया। इसके बाद सरकार के नेशनल पार्क्स बोर्ड ने वैज्ञानिकों और संगठनों के साथ मिलकर इस केकड़े को बचाने के लिए प्रजनन और पुनर्वास कार्यक्रम शुरू किया। आज भी यह केकड़ा संकटग्रस्त है, लेकिन इन प्रयासों से इसके जीवित रहने की संभावना कुछ बेहतर हुई है।

तेज विकास के दबाव के बीच सिंगापुर की हरियाली को बचाने की कोशिश काबिल-ए-तारीफ है। 1819 में जब यह एक ब्रिटिश व्यापारिक केंद्र बना था, तब से अब तक देश के ज्यादातर मूल वर्षावन खत्म हो चुके हैं। अब केवल थोड़ा-सा हिस्सा बचा है, जिसे सेंट्रल कैचमेंट नेचर रिजर्व में संरक्षित किया गया है। सिंगापुर के सामने एक बड़ी चुनौती बढ़ती आबादी और तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के साथ-साथ अपनी प्राकृतिक धरोहर को बचाए रखना भी है। भले ही देश में जन्म दर घट रही है, लेकिन विदेश से आने वाले

मजदूरों और छात्रों के कारण आबादी लगातार बढ़ रही है। यहां की एक-तिहाई आबादी प्रवासी है। लगभग 80 प्रतिशत लोग सरकार द्वारा बनाए गए बहुमंजिला मकानों में रहते हैं। 2025 तक करीब 1 लाख नए मकान बनाने की योजना है, जिनमें से कुछ वन्य क्षेत्रों में बनेंगे। तेजी से हो रहे विकास को लेकर पर्यावरणविदों में चिंता बढ़ रही है। सरकार भले ही एक करोड़ पेड़ लगाने और एक लाख कोरल ट्रांस्प्लांट करने जैसे दीर्घकालिक उपायों का वादा कर रही है, लेकिन आलोचकों का मानना है कि ए कोशिशें शायद काफी नहीं हैं। इस स्थिति में कई सवाल उठते हैं—इन परियोजनाओं के दौरान कितने पेड़ काटे जा रहे हैं? क्या सैकड़ों साल पुराने जंगल आधुनिक घरों के लिए खत्म किए जा रहे हैं और क्या इतने बड़े पैमाने पर कोरल ट्रांस्प्लांट करना वास्तव में मुश्किल है? पर्यावरण से जुड़े कई लोग इस बात से भी नाराज हैं कि सरकार की योजना से जुड़ा डैटा आसानी से नहीं मिलता, जिससे आपसी सहयोग में बाधा आती है। भले ही एनपाकर्स कहता है कि ज्यादातर योजनाएं साझेदारी से चलती हैं, लेकिन आंकड़े साझा न किए जाने को लेकर असहमति बनी हुई है। कई बार सरकार लुप्तप्राय प्रजातियों की जानकारी इसलिए नहीं देती कि कहीं उनका शिकार न होने लगे लेकिन पारदर्शिता की कमी लोगों के बीच अविश्वास पैदा करती है। 2024 में विशेषज्ञों और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा मिलकर तैयार किए गए सिंगापुर टेरेस्ट्रियल कंजर्वेशन प्लान में सुझाव है कि पर्यावरण से जुड़ी योजनाओं में बेहतर संवाद और आम लोगों की अधिक भागीदारी होनी चाहिए, लेकिन कुछ



कार्यकर्ता अब भी संदेह में हैं। उनका कहना है कि जब तक किसी जंगल को काटे जाने की योजना की खबर आम जनता तक पहुंचती है, तब तक फैंसला लिया जा चुका होता है। इन चुनौतियों के बावजूद, शहरी हरियाली को लेकर सिंगापुर की कोशिशें दुनिया भर में सराही जाती हैं। यहां पेड़ों की छांव (ट्री-कैनपी) का घनत्व दुनिया में सबसे ज्यादा है। कारण है कड़े नियम, जिनके तहत नई इमारतों में पर्यावरण के अनुकूल डिजाइन अनिवार्य हैं। जैसे हरित छतें और पेड़ों से सजे पैदल पुल। एक शानदार उदाहरण है बिशन-आंग मो किओ पार्क, जो न सिर्फ सैर-सपाटे के लिए मशहूर है, बल्कि जलवायु लचीला भी देता है। 62 हेक्टर में फैला यह पार्क आसपास की ऊंची इमारतों वाले इलाकों की तुलना में लगभग 3 डिग्री सेल्सियस ठंडा रहता है और लोगों को राहत पहुंचाता है। हरित क्षेत्र बारिश का पानी

सोखने, शोर कम करने और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में भी मदद करते हैं।

सिंगापुर की सरकार अपनी पर्यावरण नीति को प्रकृति में बसा शहर कहती है। यह एक महत्वाकांक्षी सोच को जाहिर करता है जिसमें शहर के हर पहलू में प्रकृति को शामिल करने की कोशिश है। इस घनी आबादी वाले शहर में प्रकृति को केवल बचाया नहीं गया है, बल्कि उसे रोजमर्रा की ज़िंदगी का हिस्सा बना दिया गया है। सिंगापुर का अनुभव दुनिया भर के शहरों के लिए एक मिसाल हैरूप पर्यावरण संरक्षण का मतलब प्रगति को रोकना नहीं है बल्कि इसके लिए समझदारी से फैंसले लीने तथा खुली बातचीत और दूर.ष्टि की जरूरत होती है। उम्मीद है आगे भी सिंगापुर बाकी दुनिया के लिए मिसाल बना रहेगा।

—स्रोत फीचर्स

पर्यावरण से जुड़े कई लोग इस बात से भी नाराज हैं कि सरकार की योजना से जुड़ा डैटा आसानी से नहीं मिलता, जिससे आपसी सहयोग में बाधा आती है। भले ही एनपार्क्स कहता है कि ज्यादातर योजनाएं साझेदारी से चलती हैं, लेकिन आंकड़े साझा न किए जाने को लेकर असहमति बनी हुई है। कई बार सरकार लुप्तप्राय प्रजातियों की जानकारी इसलिए नहीं देती कि कहीं उनका शिकार न होने लगे लेकिन पारदर्शिता की कमी लोगों के बीच अविश्वास पैदा करती है। 2024 में विशेषज्ञों और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा मिलकर तैयार किए गए सिंगापुर टेरेस्ट्रियल कंजर्वेशन प्लान में सुझाव है कि पर्यावरण से जुड़ी योजनाओं में बेहतर संवाद और आम लोगों की अधिक भागीदारी होनी चाहिए।

अब उल्टा 2.5 लाख करोड़ की ईरान को मदद देगा अमेरिका

सिविल न्यूक्लियर प्रोग्राम में इन्वेस्टमेंट करेगा, कई प्रतिबंधों में राहत भी देगा वॉशिंगटन

इस डील के तहत ईरान को कुछ प्रतिबंधों से भी छूट मिल सकती है

वॉशिंगटन/तेहरान। अमेरिका, ईरान को उसके सिविल एनर्जी प्रोडक्शन न्यूक्लियर प्रोग्राम को विकसित करने में मदद करने पर विचार कर रहा है। सीएनएन की रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिका ने ईरान को 30 अरब डॉलर (करीब 2.5 लाख करोड़ रुपए) के निवेश का प्रस्ताव दिया है, जिसके तहत ईरान यूरेनियम का संवर्धन किए बिना सिविल एनर्जी के लिए परमाणु कार्यक्रम शुरू कर सकता है।

इस डील के तहत ईरान को कुछ प्रतिबंधों से भी छूट मिल सकती है और उसे विदेशी बैंकों में जमा 6 अरब डॉलर तक की राशि तक पहुंच मिल सकती है, जिस पर फिलहाल प्रतिबंध है। सिविल एनर्जी प्रोडक्शन न्यूक्लियर प्रोग्राम ऐसा परमाणु कार्यक्रम होता है जिसका इस्तेमाल सिर्फ बिजली या ऊर्जा बनाने के लिए किया जाता है, न कि हथियार बनाने के लिए। इसमें न्यूक्लियर पावर प्लांट बनाए जाते हैं जो परमाणु रिएक्टर का उपयोग कर बिजली पैदा करते हैं। इसका सैन्य उद्देश्यों या हथियारों से कोई लेना-देना नहीं होता। यह



कदम अमेरिका और ईरान के बीच शांति वार्ता शुरू करने की कोशिश का हिस्सा बताया जा रहा है। 20 जून को व्हाइट हाउस में अमेरिकी दूत स्टीव विल्काफ और खाड़ी देशों के नेताओं के बीच एक सीक्रेट मीटिंग हुई। इसमें प्रस्ताव पर चर्चा हुई। अमेरिका का कहना है कि वह इस कार्यक्रम के लिए सीधे पैसे नहीं देगा, बल्कि उम्मीद है कि खाड़ी के दूसरे देश इसमें निवेश करेंगे। वहीं, ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अरागची ने गुरुवार को स्वीकार किया कि अमेरिका और इजरायल के हमलों से ईरान के परमाणु ठिकानों को 'भारी क्षति' हुई है। यह बयान

सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई और देश के अर्धसैनिक समूह, इस्लामिक रिवालयुशनरी गार्ड कोर (आईआरजीसी) के दावों के विपरीत है। अरागची ने सरकारी प्रसारक आईआरआईबी न्यूज के साथ साक्षात्कार में कहा कि परमाणु ठिकानों को 'गंभीर नुकसान' पहुंचा है और अब इस नुकसान का आकलन किया जा रहा है। उनका यह बयान खामेनेई और आईआरजीसी के दावों के विपरीत है, जिन्होंने उन हमलों को मामूली बताया था। उन्होंने कहा कि फिलहाल अंतराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के प्रमुख राफत ग्रासी को ईरान आने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

अमेरिका से वार्ता फिर से शुरू करने के लिए कोई समझौता नहीं हुआ: ईरान

तेहरान। ईरान के विदेश मंत्री सईद अब्बास अरागची ने गुरुवार को कहा कि इजरायल और अमेरिका द्वारा ईरानी क्षेत्र पर हमलों के बाद बढ़ते तनाव के बीच अमेरिका के साथ वार्ता फिर से शुरू करने के लिए कोई व्यवस्था या प्रतिबद्धता नहीं की गई है। सरकारी प्रसारक 'आईआरआईबी' के साथ एक साक्षात्कार में अरागची ने कहा कि वार्ता फिर से शुरू करने की संभावना पर विचार किया जा रहा है, लेकिन यह इस बात पर निर्भर करेगा कि तेहरान के राष्ट्रीय हितों की रक्षा की जाती है या नहीं। उन्होंने कहा कि हमारे निर्णय पूरी तरह से ईरान के हितों पर आधारित होंगे। यदि हमारे हितों के लिए वार्ता की वापसी की आवश्यकता है, तो हम इस पर विचार करेंगे। लेकिन इस स्तर पर कोई समझौता या वादा नहीं किया गया है और कोई बातचीत नहीं हुई है।



मुंबई। संगीतकार दिवंगत आरडी बर्मन को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित करती गायिका आशा भोसले।

अमेरिका के साथ युद्ध विराम वार्ता में खामेनेई को किया गया पूरी तरह दरकिनारा

तेहरान। ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई को इजरायल के साथ युद्ध समाप्त करने संबंधी बातचीत और अमेरिका के साथ युद्धविराम वार्ता में पूरी तरह दरकिनार किए जाने की रिपोर्टें हैं। ईरान इंटरनेशनल के अनुसार, संपूर्ण निर्णय लेने की प्रक्रिया ईरान की सर्वोच्च राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद और राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन ने अपने हाथों में रखी थीं और उन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के युद्ध विराम प्रस्ताव का तुरंत जवाब दिया।

मार्च से अब तक इजरायल पर 309 मिसाइलें और ड्रोन दागे गए: हूती नेता

सना। यमन के हूती नेता अब्दुल-मलिक अल-हूती ने गुरुवार को कहा कि उनके बलों ने मार्च के मध्य से अब तक इजरायल पर 309 बैलिस्टिक, हाइपरसोनिक मिसाइलें और ड्रोन दागे हैं और जिसे समूह अपने सैन्य अभियान का दूसरा चरण कहता है। इस्लामिक नव वर्ष के अवसर पर हूती द्वारा संचालित अल-मसीरा टीवी पर प्रसारित एक टेलीविजन भाषण में, अल-हूती ने कहा कि इस महीने अकैले 25 मिसाइलें और ड्रोन दागे गए, जिसे उन्होंने गाजा के

समर्थन में गुणात्मक सैन्य अभियान बताया। उन्होंने फिर से पुष्टि की कि लाल सागर इजरायल से जुड़े समुद्री यातायात के लिए बंद है। उसने इजरायल पर अमेरिका के समर्थन से गाजा में अपना आक्रमण जारी रखने का आरोप लगाया। अल-हूती ने फलीस्तीनियों के साथ एकजुटता व्यक्त करने तथा ईरान को महान विजय और दृढ़ता के लिए बधाई देने के लिए आज सना तथा हूती नियंत्रण वाले अन्य क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर रैलियां आयोजित करने का आह्वान किया।

संक्षिप्त समाचार

ऑस्ट्रेलिया में किशोर पर हत्या का आरोप

सिडनी। ऑस्ट्रेलियाई पुलिस ने ब्रिसबेन में 58 वर्षीय व्यक्ति की हत्या के आरोप में एक किशोर को आरोपी बनाया है। ऑस्ट्रेलियाई राज्य क्वींसलैंड की पुलिस ने आज बताया कि ब्रिसबेन के अंदरूनी उत्तरी इलाके क्लेफील्ड में एक घर में कल रात करीब 8:15 बजे एक व्यक्ति के गंभीर रूप से घायल होने की सूचना पर आपातकालीन सेवाओं को बुलाया गया था। अधिकारी घटनास्थल पर पहुंचे और पाया कि 58 वर्षीय व्यक्ति मृत अवस्था में है और साथ ही वहां किशोरों का एक बड़ा समूह भी मौजूद है। पुलिस ने इलाके की तलाशी ली और पास में ही एक 15 वर्षीय लड़का मिला, जो उस व्यक्ति को जानता था।

कोलंबिया भूस्खलन में मृतकों की संख्या बढ़कर 14 हुई

बोगोटा। उत्तर-पश्चिमी कोलंबिया में भूस्खलन से मरने वालों की संख्या बढ़कर 14 हो गई है तथा अन्य 12 अभी भी लापता हैं। स्थानीय अधिकारियों ने गुरुवार को बताया कि भूस्खलन की चपेट में आने से कई लोग घायल हो गए हैं और करीब एक हज़ार लोग बेघर हो गए हैं। मेयर लोरेना गोंजालेज ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि राहत और बचाव दल बेलों शहर के प्रभावित एल पिनार इलाके में चौबीसों घंटे काम कर रहे हैं, ताकि जीवित बचे हुए लोगों की तलाशी की जा सके। गोंजालेज ने कहा कि बचाव ऑपरेशन जारी है। हमें उम्मीद है कि मलबे में दबे लोग जीवित मिलेंगे। उन्होंने लोगों से उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में घरों को खाली करने का आग्रह किया।

इलेक्ट्रॉनिक कचरे से सोना निकालने की नई तकनीक विकसित

कैनबरा। ऑस्ट्रेलिया के वैज्ञानिकों ने सोने को अयस्क और इलेक्ट्रॉनिक कचरे से निकालने का एक अधिक उत्पादक तरीका विकसित किया है, जो पर्यावरण को कम नुकसान पहुंचाते हुए सोना निकालने की प्रक्रिया को बरकल सकता है। दक्षिण ऑस्ट्रेलिया में फिलडर्स यूनिवर्सिटी की गुरुवार को जारी एक विज्ञापित के अनुसार 2022 में ई-कचरा 6-20 करोड़ टन पहुंचने के बाद, इस यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने एक नई तकनीक विकसित की है, जिससे सस्ते और सुरक्षित रसायनों की मदद से सोना निकाला जा सकता है।

युद्ध विराम के बाद कूटनीतिक रास्ता अपनाने का किया आग्रह

काहिरा। मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल-फतह अल-सीसी और ब्रिटिश प्रधानमंत्री कीर स्टारमर ने इजरायल और ईरान के बीच हाल ही में हुए युद्ध विराम पर चर्चा करने के लिए फोन पर बात की। मिस्र के राष्ट्रपति कार्यालय की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि इस संकेत के शांतिपूर्ण समाधान के लिए कूटनीतिक रास्ता अपनाने की जरूरत है। बयान में कहा गया कि दोनों नेताओं ने संकेत के शांतिपूर्ण समाधान के लिए बातचीत की मेज पर लौटने और सैन्य बल का सहारा लेने से परहेज करने की आवश्यकता पर जोर दिया। सिसी और स्टारमर ने युद्ध विराम के बाद तनाव में हुई कमी का स्वागत किया।

लोकतंत्र से भटक रहा अमेरिका: ओबामा

वॉशिंगटन। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने पिछले हफ्ते अमेरिकी राज्य कनेक्टिकट के हार्टफोर्ड शहर में एक कार्यक्रम में भाषण दिया।

प्रसिद्ध इतिहासकार होदर काक्स के साथ चर्चा में ओबामा ने देश की मौजूदा राजनीतिक स्थिति पर चिंता जताई और युवाओं से देश को बचाने की अपील की। ओबामा ने ट्रम्प सरकार की आलोचना करते हुए कहा कि जो लोग आज अमेरिका की सरकार चला रहे हैं, वे लोकतंत्र के बुनियादी सिद्धांतों को कमजोर कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में जरूरी है कि सरकार के बाहर और अंदर दोनों जगह से गलत चीजों का विरोध हो। लेकिन अब ऐसा नहीं हो रहा है। ओबामा ने कहा कि व्यापारिक सौदों में डराया जा रहा है, जो केवल आर्थिक नहीं बल्कि नैतिक रूप से भी खतरनाक है। उन्होंने अपने कार्यकाल की तुलना करते हुए कहा कि चीन की बढ़ती ताकत के बावजूद उन्होंने टैरिफ जैसे उपायों



■ पूर्व राष्ट्रपति ने कहा: ट्रम्प सरकार देश को खोखला कर रही ट्रेड वॉर से खतरे में देश की गरिमा

का बेजा इस्तेमाल नहीं किया था, क्योंकि यह अमेरिका की प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचाता है। उन्होंने ट्रेड वार को गलत बताते हुए कहा कि इससे देश की गरिमा खतरे में है। ओबामा ने अमेरिका की तुलना हंगरी जैसे देशों से की, जहां चुनाव तो होते हैं, लेकिन वहां सच में लोगों की आवाज की कद्र नहीं होती और नेता मनमानी करते हैं।

24 घंटे में चीन से पाक को दूसरा बड़ा झटका जेट-35 की फेल डील के बाद अब नहीं मिलेगी हाइपरसोनिक मिसाइल

बीजिंग। पाकिस्तान की अपनी सैन्य ताकत बढ़ाने की उम्मीदों को चीन ने बड़ा झटका दिया है। चीन ने न केवल पाकिस्तान को हाइपरसोनिक मिसाइल देने से मना किया है, बल्कि इसकी टेक्नोलॉजी को ट्रांसफर करने से भी साफ इन्कार कर दिया है।

सूत्रों को माने तो बीजिंग ने इस्लामाबाद को साफ शब्दों में बता दिया है कि उसकी हाइपरसोनिक मिसाइलें एक्सपोर्ट के लिए नहीं हैं और इनका कोई एक्सपोर्ट वर्जन भी विकसित नहीं किया गया है। पाकिस्तान लंबे समय से चाहता था कि चीन उसे हाइपरसोनिक मिसाइल दे, ताकि वह भारत की बढ़ती मिसाइल ताकत का मुकाबला कर सके। भारत ने हाल के वर्षों में हाइपरसोनिक मिसाइल सिस्टम, बैलिस्टिक मिसाइल, सुपरसो. निक कूज मिसाइल और हाइपरसोनिक टेक्नोलॉजी डेमो-सॉल्टर व्हीकल जैसे एडवांस हथियार विकसित किए हैं।

पाक में भारी वर्षा के कारण सात की मौत

इस्लामाबाद। पाक के पूर्वी पंजाब प्रांत में भारी बारिश के कारण पिछले 24 घंटों में कम से कम सात लोगों की मौत हो गई और 27 अन्य घायल हो गए। प्रांतीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने कल देर रात यह जानकारी दी। प्राधिकरण ने बताया कि झेलम नदी में डूबने से दो लोगों की मौत हो गई। ओकरा और बहावलनगर में वर्षा जनित घटनाओं में एक-एक बच्चे की मृत्यु की खबर है। मुजफ्फरगढ़ में दोवार गिरने से दो लोगों की मौत हो गई और खानेवाल में बिजली गिरने से एक व्यक्ति की जान चली गई। इस बीच मुल्तान, फ़ैसलाबाद, साईवाल, शारकोट और मंडी बहा. उड़ीन से बारिश से जुड़ी अन्य दुर्घटनाएं सामने आईं जो ज्यादातर छत और दीवार गिरने या बिजली के झटके के कारण हुईं।

■ टेक्नोलॉजी को ट्रांसफर करने से भी साफ इन्कार किया

खासकर ऑपरेशन सिंदूर में भारत की ब्रह्मोस मिसाइल की ताकत देखकर पाकिस्तान बेचैन है। वह ऐसी मिसाइल चाहता है, जो ध्वनि की गति से पांच गुना तेज हो और जिन्हें रोकना लगभग असंभव हो। चीन ने हालांकि साफ कर दिया है कि वह अपनी स्पेशल हाइपरसो. या उनकी खुफिया एजेंसियों को इस पर रिसर्च करने का मौका मिल सकता है। इससे चीन की सैन्य रणनीति से जुड़े रहस्य उजागर हो सकते हैं। विशेषज्ञों को माने तो चीन अपनी डीएफ-17 जैसी मिसाइलों को अमेरिका और उसके सहयोगियों के खिलाफ महत्वपूर्ण हथियार के तौर पर देखता है। इसलिए

भारतीय सेना की 60 पैरा फील्ड एम्बुलेंस की विरासत को समर्पित कोरिया युद्ध की 75वीं वर्षगांठ

नई दिल्ली। कोरियन कल्चरल सेंटर इंडिया ने कोरियाई युद्ध की 75वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में यहां कोरिया-भारत मैत्री पर बनी एक फिल्म की स्क्रीनिंग कर इस युद्ध में भारतीय सेना की 60 पैरा फील्ड एम्बुलेंस की ओर से की गई निःस्वार्थ सेवा को याद किया। कोरियाई युद्ध में भारतीय सेना की 60 पैरा फील्ड एम्बुलेंस ने संयुक्त राष्ट्र बलों के साथ सेवा दी थी। इस आयोजन ने कोरिया और भारत के बीच गहरी मित्रता और एकजुटता को फिर से पुष्टि की है। फिल्म 'ताएगुक्का: द ब्रदरहुड ऑफ वॉर' एक बंटे हुए देश की पीड़ा और युद्ध के समय भाईचारे के रिश्ते को दर्शाती है। यह फिल्म कोरिया और भारत के साझा मूल्यों और बलिदानों की गहरी याद दिलाती है। इसमें वॉन बिन मुख्त भूमिका में हैं, जिन्हें अंतराष्ट्रीय स्तर पर बांग जून-हो द्वारा

इस आयोजन ने कोरिया व भारत के बीच गहरी मित्रता की पुष्टि की है

निर्देशित फिल्म 'मदर' के लिए जाना जाता है। उनके साथ जांग डॉंग-गुन हैं, जो 'फ्रेंड' और 'अ जेंटलमेन्स डिफिनिटी' जैसी हिट फिल्मों के लिए लोकप्रिय हैं। इन दोनों कलाकारों के भारत में भी बड़ी संख्या में प्रशंसक हैं। कोरियन कल्चरल सेंटर इंडिया के निदेशक वांग इल यॉंग ने कहा कि फिल्म सिर्फ एक माध्यम नहीं है, बल्कि यह भावनाओं, यादों और समझ को साझा करने का एक मजबूत पुल है। कोरियाई युद्ध के दौरान भारत द्वारा 60 पैरा फील्ड एम्बुलेंस को भेजना सूचीय दोस्ती और महान बलिदान का प्रतीक है। हमें उम्मीद है कि यह कार्यक्रम दर्शकों को कोरिया और भारत के मजबूत रिश्तों पर सोचने और सिनेमा के माध्यम से

तीनों सचिवों के बीच जो बैठक हुई थी, वो एक आधिकारिक बैठक थी: तौहिद

बैठक नहीं थी। इसलिए गठबंधन की बात तो कहीं से भी ठीक नहीं है। बांग्लादेश किसी एक देश के खिलाफ काम नहीं करता है। तौहिद ने कहा कि बैठक में उर्जा, इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट पर बात हुई। इस तरह की बात से कोई मोर्चा नहीं बनता है। यह सब मीडिया की सिर्फ खबरें हैं। तौहिद ने कहा कि अगर भारत बांग्लादेश और नेपाल के साथ अगर मिलकर कोई बैठक करना चाहता है तो हम स्वागत करेंगे। हम इसके लिए ढाका की धरती भी मुहैया कराएंगे। हमारी कोशिश है कि पड़ोस से रिश्ते बेहतरीन रहें। तौहिद के मुताबिक बांग्लादेश का

कतर के लिए गुलाब की खुशबू वाली लीची की पहली खेप रवाना

नई दिल्ली। भारत ने बागवानी निर्यात को बढ़ावा देते हुए पंजाब के पठानकोट से कतर की राजधानी दोहा तथा संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के सबसे बड़े शहर दुबई के लिए डेढ़ मीट्रिक टन गुलाब की खुशबू वाली लीची की पहली खेप रवाना की है। एक आधिकारिक बयान में कहा गया कि दोहा के लिए एक टन लीची की पहली खेप रवाना की गई है।

पठानकोट से दुबई को 0.5 मीट्रिक टन लीची की एक अलग खेप भेजी गई है जो निर्यात में दोहरी उपलब्धि और वैश्विक ताजे फल बाजार में भारत की बढ़ती उपस्थिति दर्शाता है। इस पहल को वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के तहत

■ पठानकोट से दुबई को 0.5 मीट्रिक टन लीची की एक अलग खेप भेजी गई

कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (अपेडा) ने पंजाब सरकार के बागवानी विभाग ने लुल्लू समूह और सुजानपुर के प्रगतशील किसान प्रभात सिंह के सहयोग से सुगम बनाया। उन्होंने गत 23 जून को उच्च गुणवत्ता वाली उपज की आपूर्ति की। यह महत्वपूर्ण पहल भारत की बागवानी उपज की उत्कृष्टता को रखांकित करती है और देश की बढ़ती कृषि-निर्यात क्षमताओं को भी उजागर करती है। यह कृषक समुदायों को उनके ताजे और उच्च मूल्य वाले उत्पादों के

लिए अंतराष्ट्रीय बाजार तक पहुंच प्रदान करके अपार अवसर प्रदान करता है। राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड के अनुसार वित्त वर्ष 2023-24 के लिए पंजाब का लीची उत्पादन 71,490 मीट्रिक टन रहा जो भारत के कुल लीची उत्पादन में 12.39 प्रतिशत का योगदान देता है। इसी अवधि के दौरान भारत ने 639.53 मीट्रिक टन लीची का निर्यात किया। खेती का रकबा 4327 हेक्टेयर था जिसकी औसत उपज 16523 किलोग्राम/हेक्टेयर थी। रवाना की गई खेप में प्रीमियम पठानकोट लीची का एक रीफर पैलेट (रेफ्रिजरेटेड कंटेनर) शामिल है जो इस क्षेत्र के उत्पादकों के लिए एक बड़ा कदम है।

ADMISSION OPEN Session 2025-26

न्यू स्टेट नर्सिंग एण्ड पैरामेडिकल कालेज

12 किमी. स्टोन, रुड़की रोड, मुजफ्फरनगर
Affiliated by: U.P. State Medical Faculty Lucknow and recognized by the U.P. Govt.

कोर्स

• डीओ पीओ • ऑप्टोमेट्री • ओओ टी • टैक्नीशियन

कोर्स अवधि : 2 वर्ष

योग्यता : 12वीं पास बायोलोजी/गणित

हसन नर्सिंग होम

92, उत्तरी सरवट गेट, मुजफ्फरनगर

8899777782

मो: 9897640744

अखबार की कटिंग साथ लाने वाले को 5000 की छूट